- वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि उपकर से मिला राजस्व राज्यों से होगा साझा - 12

- केंद्रीय मंत्री गोयल बोले-भारत और रूस व्यापार को संतुलित बनाने की जरूरत - 12

- अमेरिकी सांसदों का रूबियो को पत्र, पाकिस्तान पर लगाएं कड़े प्रतिबंध - 13

- सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में उत्तर प्रदेश ने चंडीगढ़ को 40 रनों से हराया - 14

आज का मौसम

22.0° अधिकतम तापमान

08.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.50

सूर्यास्त 05.16

अमृत विचार

बरेली

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

पौष कृष्ण पक्ष प्रतिपदा 12:55 उपरांत द्वितीया विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025, वर्ष 7, अंक 11, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

गले लग दोस्त पुतिन का स्वागत

ग्रैंड वेलकम देने खुद पहुंचे मोदी, रक्षा व भारत-रूस व्यापार को बाहरी दबाव मुक्त रखने पर चर्चा आज

- शिखर वार्ता में भारत रूस से बड़ी मात्रा में कच्चा तेल खरीदने से बढ़ते व्यापार घाटे को दुरुस्त करने पर देगा जोर

नई दिल्ली, एजेंसी

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन गुरुवार शाम को करीब 27 घंटे के दौरे पर नई दिल्ली पहुंचे। प्रधानमंत्री मोदी ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें गले लगाया। चार साल के अंतराल के बाद उनका भारत आगमन हुआ है। यह दौरा करीब आठ दशक पुरानी भारत-रूस साझेदारी को और मजबूत करने वाला है, एक ऐसी साझेदारी जो जटिल भू-राजनीतिक माहौल के बावजूद स्थिर बनी हुई है।

दोनों नेता हवाई अड्डे से मोदी की कार में निकले और प्रधानमंत्री के आधिकारिक आवास पहुंचे। करीब तीन महीने पहले शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन के बाद चीन के शहर तियानजिन में उन्होंने एक ही वाहन में साथ यात्रा की थी। मोदी ने शाम में रूसी राष्ट्रपति के लिए एक निजी रात्रिभोज का आयोजन किया। पिछले साल जुलाई में पुतिन ने भी प्रधानमंत्री की मॉस्को यात्रा के दौरान उनका इसी तरह का सत्कार किया था। इस अवसर पर मोदी के आधिकारिक आवास को रोशनी से जगमग किया गया था और फूलों से सजाया गया था। शुक्रवार को होने वाली 23वीं भारत-रूस शिखर वार्ता में दोनों देश संबंधों को और व्यापक बनाने के लिए प्रयास करेंगे। शिखर वार्ता में भारत रूस से बड़ी मात्रा में कच्चा तेल खरीदने से बढ़ते व्यापार घाटे को दुरुस्त करने पर जोर देगा। रूसी राष्ट्रपति की भारत यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब भारत-अमेरिका संबंध पिछले दो दशकों में संभवतः सबसे खराब दौर से गुजर रहे हैं। बैठक से पहले दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों ने गुरुवार को व्यापक चर्चा की, जिसमें रूस से एस-400 मिसाइल प्रणालियों और अन्य महत्वपूर्ण सैन्य हार्डवेयर की अतिरिक्त खेप खरीदने की भारत की योजना पर फोकस रहा।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के नई दिल्ली आगमन पर उनका गले लगकर स्वागत करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। **दाएं** : पुतिन को अपने अधिकारिक आवास पर ले जाते प्रधानमंत्री।

पुतिन बोले-भारत किसी दबाव में नहीं झुकता, मोदी को सराहा

पुतिन ने भारत दौरे के दौरान अमेरिका की दोहरी नीति पर सवाल उठाते हुए कहा कि जब अमेरिका रूस से परमाणु ईंधन खरीद सकता है, तो भारत को रोकने का सवाल क्यों उठता है। पुतिन ने भारत की स्वतंत्र विदेश नीति और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्व क्षमता की खुलकर प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि भारत किसी भी दबाव के आगे नहीं झुकता और वैश्विक मुद्दों पर अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर निर्णय लेता है। वहीं, रूसी तेल खरीद पर पुतिन ने यह भी स्पष्ट किया कि भारत का रूस से तेल खरीदना पूरी तरह उचित है, क्योंकि जब अमेरिका खुद रूस से न्यूक्लियर ईंधन खरीद सकता है, तो भारत ऐसा क्यों नहीं कर सकता।

पश्चिमी देश रख रहे करीब से नजर

दोनों राष्ट्राध्यक्षों के बीच होने वाली बैठकों पर पश्चिमी देशों करीब से नजर रख रहे हैं। रूसी नेता का नई दिल्ली का लगभग 27 घंटे का दौरा इसलिए और भी अहम हो गया है क्योंकि यह भारत-अमेरिका संबंधों में तेजी से आ रही गिरावट की पृष्ठभूमि में हो रहा है। वहीं, यूक्रेन युद्ध को लेकर भारत लगातार यह कहता रहा है कि बातचीत और कूटनीति ही युद्ध खत्म करने का एकमात्र तरीका है।

संपत्ति का ब्योरा नहीं दिया तो भूल जाएं पदोन्नति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- प्रदेश सरकार का सख्त आदेश, 31 जनवरी तक आठ लाख से अधिक कार्मिकों को चल-अचल संपत्ति बताना अनिवार्य
- मानव संपदा पोर्टल पर विवरण दर्ज नहीं करने वालों के नाम एक फरवरी के बाद होने वाली डीपीसी से स्वत: होंगे बाहर

अमृत विचार: सरकारी अधिकारी व कर्मचारियों की पदोन्नति पर अब संपत्ति की पारदर्शिता का पहरा होगा। योगी सरकार ने स्पष्ट आदेश में कहा है कि जो भी कर्मचारी 31 जनवरी 2026 तक अपनी चल-अचल संपत्ति का ब्योरा मानव संपदा पोर्टल पर दर्ज नहीं करेगा, उसे स्थायी रूप से प्रमोशन से वंचित कर दिया जाएगा। इतना ही नहीं, ऐसे कर्मचारियों पर विभागीय कार्रवाई भी अनिवार्य रूप से की जाएगी। सरकार ने इसे अंतिम चेतावनी करार दिया है।

प्रदेश में आईएएस, आईपीएस, पीसीएस व पीपीएस अधिकारियों समेत आठ लाख से अधिक सरकारी कार्मिक विभिन्न विभागों में कार्यरत हैं। सरकार पिछले कई वर्षों से इस बारे में नोटिस, रिमाइंडर जारी कर रही है। किंतु बड़ी संख्या में कर्मचारी भी लापरवाही बरतते रहे हैं। सरकार ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि 31 दिसंबर 2025 तक अर्जित सभी प्रकार की संपत्ति का ब्योरा देना अनिवार्य है। कोई भी कर्मचारी यह समझकर न बैठे कि यह केवल औपचारिकता है। मुख्य सचिव एसपी गोयल की ओर से जारी आदेश में सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया गया है कि पहली फरवरी 2026 के बाद होने वाली किसी भी विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठक में उन्हीं कर्मचारियों के नाम शामिल किए जाएं, जिन्होंने समय पर संपत्ति विवरण अपलोड किया हो। जो कर्मचारी इसे नहीं करेंगे, उनके नाम सूची से स्वतः बाहर कर दिए जाएंगे।

यह विवरण देना अनिवार्य

कर्मचारियों को अपनी हर प्रकार की संपत्ति का विवरण देना होगा। इसमें घर, प्लॉट, दुकान, दोपहिया/चार पहिया वाहन, बैंक बैलेंस, फिक्स्ड डिपॉजिट, बीमा, शेयर/म्यूचुअल फंड निवेश, कोई भी अन्य चल-अचल संपत्ति शामिल है। सरकार ने बताया कि मानव संपदा पोर्टल 1 जनवरी 2026 से खुल जाएगा और 31 जनवरी 2026, रात 12 बजे तक ही सक्रिय रहेगा। इसके बाद पोर्टल बंद हो जाएगा और कोई प्रविष्टि स्वीकार नहीं होगी।

इन्हें नियमों के तहत छूट

पहले से नियमों के छूट पाने वालों में चतुर्थ श्रेणी (ग्रुप डी) के कुछ कर्मचारी जैसे चौकीदार, सफाईकर्मी, माली, चपरासी, वाहन चालक (कुछ विभागों में) शामिल हैं। साथ ही आउटसोर्स स्टाफ, संविदा आधारित कर्मी, दैनिक वेतन भोगी, प्रेरक व सहायकों आदि जैसी श्रेणियां, प्रोजेक्ट आधारित कर्मचारी (एनएचएम, मिशन, एड्स कंट्रोल, डूडा आदि) इन पर संपत्ति विवरण देने का प्रावधान ही नहीं था, इसलिए पहले से छूट मानी जाती है। इसके अलावा स्वायत्तशासी व विभिन्न निगमों के वे कर्मचारी जिनके सेवा नियम अलग हैं।

ब्रीफ न्यूज

मिजोरम के पूर्व राज्यपाल स्वराज कौशल का निधन

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा की वरिष्ठ नेता सुषमा स्वराज के पति एवं मिजोरम के पूर्व राज्यपाल तथा वरिष्ठ अधिवक्ता स्वराज कौशल का गुरुवार को यहां निधन हो गया। वह 73 वर्ष के थे। दिल्ली भाजपा ने एक बयान में उनके निधन की जानकारी दी। सुषमा स्वराज और स्वराज कौशल की इकलौती संतान बांसुरी स्वराज नयी दिल्ली से सांसद हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वराज कौशल के निधन पर शोक व्यक्त किया तथा वंचितों की मदद के लिए कानूनी पेशे का उपयोग करने के लिए उन्हें याद किया। मोदी ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, स्वराज कौशल जी के निधन से मैं दुखी हूं।

दिल्ली की वायु गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में

नई दिल्ली। प्रदूषण में कई दिनों तक तेज वृद्धि और गिरावट दर्ज किए जाने के बाद, राष्ट्रीय राजधानी की वायु गुणवत्ता गुरुवार शाम को एक बार फिर बहुत खराब श्रेणी में पहुंच गई, जिससे सुबह की अल्पकालिक राहत खत्म हो गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, 24 घंटे का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 304 रहा, जो बहुत खराब श्रेणी में आता है।

बीएलओ के काम के दबाव को कम करें राज्य और केंद्र

नई दिल्ली, एजेंसी

- सुप्रीम कोर्ट ने और कर्मचारी मुहैया कराने के दिए निर्देश

शीर्ष कोर्ट ने मतदाता सूचियों के समयबद्ध एसआईआर में जुटे बूथ स्तरीय अधिकारियों पर कामकाज का अत्यंत दबाव होने के आरोपों से जुड़ी याचिका पर गौर करते हुए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को और अधिक कर्मचारियों को तैनात करने का निर्देश दिया है ताकि बीएलओ के कामकाज के घंटो में कमी लाई जा सके।

शीर्ष अदालत अभिनेता विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें निर्वाचन आयोग को यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया है कि समयबद्ध तरीके से ड्यूटी न निभाने के लिए बीएलओ के खिलाफ प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत कोई दंडात्मक कार्रवाई न की जाए। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने टीवीके की ओर से पेश वरिष्ठ वकील गोपाल शंकरनारायणन की दलीलों पर गौर किया कि कुछ निर्देश जारी किए जाने की आवश्यकता है क्योंकि चुनाव आयोग के अधिकारियों की ओर से दबाव डाले जाने के कारण कई बीएलओ की मौत हो चुकी है। अधिवक्ता ने कहा कि इसके अलावा निर्वाचन आयोग के अधिकारी सौंपा गया कामकाज पूरा करने में विफल रहने पर बीएलओ के खिलाफ प्राथमिकियां भी दर्ज करा रहे हैं। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि राज्य सरकार काम का दबाव कम करने के लिए अतिरिक्त कर्मचारी तैनात करने पर विचार कर सकती है।

छूट मांगने का विशिष्ट कारण है तो अन्य कर्मचारी तैनात करें

पीठ ने कहा कि यदि किसी कर्मचारी के पास ड्यूटी से छूट मांगने का कोई विशिष्ट कारण है, तो राज्य सरकार का संबंधित अधिकारी ऐसे अनुरोधों पर मामलों के आधार पर विचार कर सकता है और उस कर्मचारी की जगह किसी अन्य को तैनात कर सकता है। अदालत ने कहा, हालांकि, यह न समझा जाए कि यदि उनके विकल्प उपलब्ध नहीं कराए गए हैं तो वे ड्यूटी पर नियुक्त कर्मचारियों को वापस बुला सकते हैं।

संस्कृति क्षीण होने पर राष्ट्र खो देता है एकात्मता व पहचान : योगी

- सीएम के साथ योगेंद्र डिमरी ने किया महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह का उद्घाटन

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/गोरखपुर

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति, परंपराएं और महापुरुषों से होती है। यदि संस्कृति क्षीण होती है तो राष्ट्र अपनी एकात्मता व पहचान खो देता है।

गुरुवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह-2025 के उद्घाटन अवसर पर योगी बोल रहे थे। इसके पहले योगी के साथ राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल योगेंद्र डिमरी (से.नि.) ने समारोह का उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि संकट या राष्ट्रीय चुनौती के समय महापुरुषों का शौर्य नई ऊर्जा देता है। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, रानी लक्ष्मीबाई और सीमाओं पर बलिदान देने वाले जवान देश के लिए प्रेरणा हैं। उन्होंने कहा कि ईमानदारी से कर्तव्य पालन, पर्यावरण संरक्षण, लोक कल्याण और एक अच्छा नागरिक बनना भी सच्ची देशभक्ति है। योगी ने परिषद के संस्थापक महंत दिग्विजयनाथ द्वारा वर्ष 1932 में रखी नींव का उल्लेख करते हुए दिवंगत अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह और अन्य सदस्यों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ रही शिक्षा परिषद के लिए यह आत्ममंथन का अवसर है कि समाज और राष्ट्र के प्रति उसकी भूमिका कैसी रही।

गोरखपुर में समारोह के उद्घाटन अवसर पर मुख्यमंत्री योगी व अन्य।

शोभायात्रा में दिखा समूचा भारत

संस्थापक सप्ताह की शोभायात्रा में गोरखपुर की सड़कों पर भारतीय संस्कृति, तकनीकी विकास, विरासत और राष्ट्रीय शौर्य का प्रदर्शन किया गया। एनसीसी कैडेट्स, ताइक्वांडो टीम, स्कूल-कॉलेजों के हजारों विद्यार्थियों ने अनुशासनपूर्ण मार्च पास्ट किया। शोभायात्रा में मां सरस्वती, भारत माता, महायोगी गुरु गोरखनाथ, महाराणा प्रताप, महंत दिग्विजयनाथ और महंत अवेद्यनाथ के चित्र शामिल रहे। 'ऑपरेशन सिंदूर' से सैनिक शौर्य और राम मंदिर झांकी से विरासत का सम्मान प्रस्तुत किया गया। मुख्यमंत्री योगी और मुख्य अतिथि ने दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज की शोध पत्रिका 'दिग्विजयम्' व महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज की 'मिशन मंझरिया' रिपोर्ट का विमोचन किया। एनसीसी कैडेट्स ने मुख्य अतिथि को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। 'विकसित भारत, विकसित उत्तर प्रदेश @2047' प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया गया।

रामलला को ओढ़ाई जा रही रजाई

- सुबह उन्हें गर्म पानी से स्नान कराकर श्रृंगार के दौरान गर्म कपड़े पहनाए जा रहे

अयोध्या। रामनगरी में ठंड बढ़ने के बाद राम मंदिर में विराजमान रामलला को सुबह ब्लोवर से गर्म हवा दी जा रही है और शयन के दौरान रजाई ओढ़ाई जा रही है। सुबह उन्हें गर्म पानी से स्नान कराकर श्रृंगार के दौरान गर्म कपड़े पहनाए जा रहे हैं। भोग में भी काढ़ा समेत गर्म भोजन खिलाया जा रहा है। जिससे कि उन्हें ठंड से बचाया जा सके।

रामलला के पुजारी संतोष आचार्य के मुताबिक जैसे-जैसे ठंड बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे पांच वर्षीय रामलला को ठंड से बचाने के लिए उनकी दिनचर्या में बदलाव होता जाएगा। पहले चद्दर और कम्बल ओढ़ाया जा रहा था, अब रजाई उड़ाई जा रही है। वहीं कनक भवन, हनुमान गढ़ी, मणिराम दास छावनी, राम बल्भाकुंज, चारुशीला मंदिर समेत अन्य मंदिरों के गर्भगृह में विराजमान देवी-देवताओं की मूर्तियों पर गर्म कपड़े पहनाए जा रहे हैं।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क संशोधन विधेयक पारित

नई दिल्ली, एजेंसी

- शीतकालीन सत्र के दौरान संसद के उच्च सदन ने दी मंजूरी

संसद ने गुरुवार को केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025 को पारित कर दिया, जिसमें तंबाकू उत्पादों पर जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर समाप्त होने के बाद समान कर बोझ रखने के लिए उत्पाद शुल्क लगाने का प्रावधान है। राज्यसभा में उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 में संशोधन वाले विधेयक पर चर्चा और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के जवाब के बाद उच्च सदन ने इसे ध्वनिमत से लौटा दिया।

विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए वित्त मंत्री ने कहा, तंबाकू और इसके उत्पादों पर उत्पाद शुल्क लगाने से जीएसटी क्षतिपूर्ति कर समाप्त करने के बाद भी कर का बोझ समान रहेगा। कहा कि चूंकि जीएसटी कानून में अधिकतम कर दर 40 प्रतिशत तय है, इसलिए यदि जीएसटी उपकर हटा दिया जाता है और उत्पाद शुल्क नहीं लगाया जाता है तो तंबाकू पर कुल कर बोझ वर्तमान स्तर से कम हो जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कर बोझ जीएसटी मुआवजा उपकर के दौरान जितना था, उससे कम न हो।

नहीं उड़े इंडिगो के 550 विमान, 3 दिन तक परिचालन रह सकता रद्द

मुंबई, एजेंसी

देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो में परिचालन व्यवधान लगातार तीसरे दिन गुरुवार को भी जारी रहने से 550 से अधिक घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों को रद्द कर दिया गया, जबकि कई देर से रवाना हुईं। इस वजह से हजारों यात्रियों को परेशानी उठानी पड़ी।

वहीं, इंडिगो ने डीजीसीए को जानकारी दी है कि अगले दो-तीन दिन तक उड़ानों का रद्द होना जारी रहेगा। दिल्ली में इंडिगो की 100, मुंबई में 70, हैदराबाद में 70 और बेंगलुरु में 100 उड़ानें रद्द की गईं। अन्य अड्डों पर भी उड़ानें रद्द होने की बात सामने आई है। छह प्रमुख हवाई अड्डों- दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरु और हैदराबाद के संयुक्त आंकड़ों के आधार पर एयरलाइन की समयपालन दर बुधवार को गिरकर 19.7% पर आ गई जबकि 4 दिसंबर को यह 35 प्रतिशत थी।

- इंडिगो के उड़ान प्रबंधन में आई गिरावट पर यात्रियों के साथ हितधारक भी उठा रहे सवाल

कंपनी परिचालन को सामान्य बनाने में जुटी: सीईओ एल्बर्स

नई दिल्ली। परिचालन संकट से गुजर रही इंडिगो के सीईओ पीटर एल्बर्स ने कहा कि विमानन कंपनी का तात्कालिक लक्ष्य परिचालन को सामान्य करना एवं सेवाओं का समय पर संचालन करना है लेकिन यह कोई आसान लक्ष्य नहीं है। एल्बर्स ने कर्मचारियों को दिए संदेश में यह स्वीकार किया कि एयरलाइन ग्राहकों को हवाई यात्रा का अच्छा अनुभव प्रदान करने के अपने वादे पर खरी नहीं उतर सकी।

सख्ती ट्रंप प्रशासन ने वीजा धारकों के लिए जांच और सत्यापन प्रक्रियाएं की कड़ी

एच-1बी वीजा के लिए सोशल मीडिया प्रोफाइल करने होंगे सार्वजनिक

- 15 दिसंबर से आवेदकों और उनके आश्रितों की ऑनलाइन उपस्थिति की समीक्षा की जाएगी

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी सरकार ने एच-1बी वीजा आवेदकों और उन पर आश्रित एच-4 वीजा धारकों के लिए जांच और सत्यापन प्रक्रियाएं कड़ी कर दी हैं। नए निर्देशों के तहत सभी आवेदकों को अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल की निजता सेटिंग्स सार्वजनिक (पब्लिक) रखने के लिए कहा गया है।

विदेश विभाग ने जारी किए नए आदेश में कहा कि 15 दिसंबर से सभी एच-1बी आवेदकों और उनके आश्रितों की ऑनलाइन उपस्थिति की समीक्षा की जाएगी। इससे पहले छात्र (एफ, एम) और 'एक्सचेंज विजिटर' (जे वीजा) पहले से ही ऐसी जांच के दायरे में थे, जिसे अब एच-1बी और एच-4 वीजा तक बढ़ा दिया गया है। विदेश विभाग ने कहा, इस जांच को सुगम बनाने के लिए सभी एच-1बी, एच-4, एफ, एम और जे वीजा आवेदकों को अपने सभी सोशल मीडिया प्रोफाइल की प्राइवेसी सेटिंग्स सार्वजनिक करने के निर्देश दिए जाते हैं।

विभाग ने जोर देकर कहा कि अमेरिकी वीजा कोई अधिकार नहीं, बल्कि एक विशेषाधिकार है और राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में उपलब्ध सभी सूचनाओं का उपयोग करके आवेदकों की गहन जांच की जाती है।

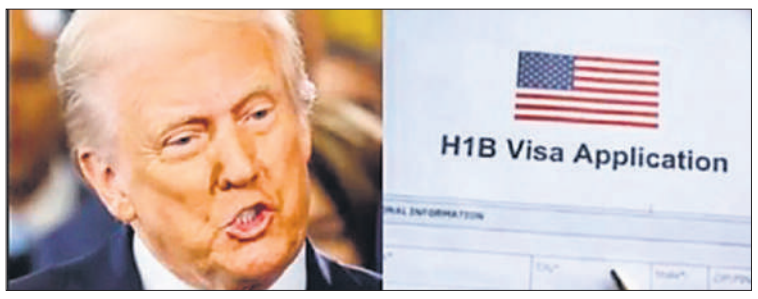

विदेश मंत्रालय ने कहा- अमेरिकी वीजा कोई अधिकार नहीं, बल्कि एक विशेषाधिकार

अमेरिकी बयान में कहा गया है, हर वीजा निर्णय एक राष्ट्रीय सुरक्षा का निर्णय है। यह कदम ट्रंप प्रशासन द्वारा आव्रजन नियमों को कठोर बनाने की नवीनतम कार्रवाई है। प्रशासन एच-1बी वीज़ा के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए व्यापक कार्रवाई कर रहा है, जिसका उपयोग बड़े पैमाने पर अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनियां विदेशी पेशेवरों को नियुक्त करने में करती हैं। भारतीय पेशेवर, विशेषकर प्रौद्योगिकी कर्मी और चिकित्सक एच-1बी वीज़ा के सबसे बड़े लाभार्थी हैं।

अमृत विचार

बरेली, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

ब्रीफ न्यूज

ईंट के रुपये मांगने पर महिला को पीटा

बीसलपुर, अमृत विचार : उधार दी गई ईंटों के रुपये मांगने पर महिला को पीट दिया गया। ग्राम महादेवा निवासी मुस्ताक हुसैन की पत्नी नजमा ने पुलिस को दी तहरीर में बताया उसने जेठ को 2000 ईंटें दी थी। 18 नवंबर को जब ईंटों के रुपये मांगे तो जेठ मुस्ताक, ससुर इकरार और जेठानी हुस्न तारा घर में घुस आए व हमला कर मारपीट की। जान से मारने की धमकी दी गई। पुलिस ने गुरुवार को इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कर जांच कर रही है।

एसपी के आदेश पर दहेज उत्पीड़न की रिपोर्ट

बीसलपुर, अमृत विचार : एसपी के आदेश पर पुलिस ने दहेज उत्पीड़न की रिपोर्ट दर्ज की। जिसमें ग्राम चौसरा मार्ग पर रहने वाली गायत्री देवी ने बताया कि उसका पति से खर्च का वाद न्यायालय में विचाराधीन है। पति गौतम और अन्य ससुराल वाले आए दिन उसके घर आकर गाली गलौज करते हैं। 14 नवंबर को पति गौतम, ससुर सुभाष, रोहित तमंचा लेकर आ गए और धमकाया। सामान में तोड़फोड़ की गई। पति की दूसरी शादी कराने की धमकी दी। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ननिहाल आई किशोरी घर से लापता

बीसलपुर, अमृत विचार : किशोरी को बहला फुसलाकर ले जाने के मामले में पुलिस ने कार्रवाई की। किशोरी ननिहाल आई थी। पुलिस को दी तहरीर में किशोरी के नाना ने बताया कि करीब 15 दिन पूर्व उनकी नातिन आई थी। बुधवार को दो युवक उसे बहला फुसलाकर ले गए। पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर जांच कर रही है।

डीएम ने समीक्षा कर दिए निर्देश

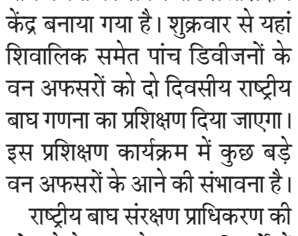

पीलीभीत, अमृत विचार : इन दिनों एसआईआर कार्य चल रहा है। प्रशासनिक अधिकारी इसकी मॉनिटरिंग कर रहे हैं। कार्य को गति देने के निर्देश दिए गए हैं। इसकी अपडेट भी ली जा रही है। गुरुवार को डीएम ज्ञानेंद्र सिंह ने ललौरीखेड़ा और मरौरी ब्लॉक पहुंचकर विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान (एसआईआर) से संबंधित कार्यों की समीक्षा की। ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए।

धान खरीद: उठे सवाल तो शासन-प्रशासन हुआ सख्त, अब कराई जाएगी वीडियोग्राफी

अभी तक 82301.24 मीट्रिक टन खरीदा जा चुका धान, 10970 किसान हुए लाभान्वित

- धान बेचने वाले किसानों का कंट्रोल रुम से होगा सत्यापन

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: दो माह पूरे कर चुकी धान खरीद में उठ रहे सवालों पर शासन गंभीर है। जिसके बाद अब डीएम ने भी पारदर्शिता से धान खरीद कराने के लिए सख्ती के निर्देश दिए हैं। अब धान क्रय केंद्रों पर खरीदे जाने वाले धान की शत- प्रतिशत वीडियोग्राफी कराई जाएगी। विक्रय करने वाले किसानों का कंट्रोल रूम से शत- प्रतिशत सत्यापन कराया जाएगा। इसकी शुरुआत भी कर दी गई है। जिसके बाद प्रशासन की ओर से किसानों की वीडियोग्राफी भी कराई जाती रही।

जिले में 3 अक्टूबर से सरकारी धान खरीद की शुरुआत की गई थी। छह एजेंसियों के 150 क्रय केंद्र बनाए गए हैं। अभी तक 10970 किसानों को लाभांवित किया जा चुका है। 2.45 लाख मीट्रिक टन के सापेक्ष 82301.24 मीट्रिक टन धान क्रय केंद्रों पर खरीदा जा चुका है। पिछले

बीसलपुर मंडी में धान खरीद का जायता लेते विधायक और अधिकारी। ● अमृत विचार

कुछ दिनों से मंडी समिति में क्रय केंद्रों पर सन्नाटा पसरा रहा और ये भी आरोप लगते रहे कि क्रय केंद्रों पर किसान के धान को रिजेक्ट किया जा रहा है और तौल नहीं कराई जा रही है। इसे लेकर शासन स्तर से संज्ञान लिया गया और पारदर्शिता से खरीद कराने के निर्देश दिए गए। जिसके बाद गुरुवार से इसका असर भी दिखाई देने लगा है। अब डीएम ज्ञानेंद्र सिंह ने सख्त निर्देश दिए हैं कि धान क्रय केंद्रों पर क्रय होने वाले धान की वीडियोग्राफी कराई जाएगी। क्रय केंद्रों पर धान विक्रय करने वाले किसानों का कंट्रोल रूम से शत -प्रतिशत सत्यापन भी कराया जाएगा। इस आदेश के बाद खलबली मची रही। प्रशासनिक अधिकारी भी खुद हकीकत परखने में जुटे रहे। धान बिक्री करने वाले किसानों के वीडियो बनाए जाते रहे और सत्यापन भी किया जाता रहा। करीब 51 किसानों से अधिकारियों ने वार्ता की और सभी ने किसी तरह की कोई समस्या न होने की बात कही। इसकी सूची भी जारी की गई। डीएम ने सख्त निर्देश दिए हैं कि किसी भी किसान का धान रिजेक्ट करने से पहले उसे सुखाने का मौका

अब तक खरीदे किए धान और लाभान्वित किसान

- एजेंसी/खरीद (मीट्रिक टन में)/ लाभान्वित किसान
- खाद्य विभाग/25088 .32/3352
- पीसीएफ/16191 .82/2262
- यूपीएसएस/20781 .82/2590
- पीसीयू/14875 .14/2069
- मंडी समिति/3731 .86/476
- भाखनि/1632 .28/221

धान खरीद को पारदर्शिता से कराया जा रहा है। अभी तक 82301 .24 मीट्रिक टन खरीद हो चुकी है। अब वीडियोग्राफी भी शत प्रतिशत कराई जाएगी। जिसकी शुरुआत करा दी गई है। सत्यापन भी कराया जा रहा है।

-वीके शुक्ला, डिप्टी आरएमओ

अवश्य दिया जाएगा। धान खरीद के दौरान अभी तक 10.70 करोड़ रुपये का भुगतान भी किया जा चुका है। इधर, अधिकारियों की मौजूदगी में बीसलपुर में विधायक विवेक वर्मा भी मंडी पहुंचे और धान खरीद की हकीकत परखी।

अब तक की गई कार्रवाई

- पूरनपुर में एक बिचौलिये पर एफआईआर
- 51 धान क्रय केंद्र प्रभारियों का एक दिन का वेतन रोका।
- पीसीयू, पीसीएफ, यूपीएसएस के जिला प्रबंधक को डीएम के स्तर से कारण बताओ नोटिस।
- छह धान क्रय केंद्र प्रभारियों को विशेष प्रतिकूल प्रविष्टि।
- खाद्य विभाग के चार धान क्रय केंद्र प्रभारियों को ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज न करने पर नोटिस।

धान मिलों पर भी कसेगा शिकंजा

धान खरीद को गति देने के लिए अब राइस मिलर्स पर भी प्रशासनिक स्तर से शिकंजा कसा जाएगा। डीएम ने सख्त निर्देश दिए हैं कि एग्रीमेंट न करने वाले और एफआरके ऑर्डर करने वाले राइस मिलों का एफएसएसएआई लाइसेंस निरस्त किया जाएगा। समस्त धान केंद्रों के स्टॉक की मात्रा व गुणवत्ता की टीम नबाकर सत्यापन की कार्यवाही भी कराई जाएगी।

100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में अभिषेक ने मारी बाजी

दौड़ प्रतियोगिता को झंडी दिखाकर रवाना कराते विधायक विवेक वर्मा। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- विधायक ने हरी झंडी दिखाकर प्रतियोगिता शुरू कराई

अमृत विचार: युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग के तत्वाधान में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर में दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता कराई गई। विधायक खेल स्पर्धा की शुरुआत बीसलपुर विधायक विवेक कुमार वर्मा, ब्लॉक प्रमुख अशोक कुमार, एसडीएम नागेंद्र पाण्डेय, डाइट प्राचार्य दरवेश सिंह , खंड शिक्षाधिकारी बिलसंडा शिव शंकर मौर्य, जिला क्रीड़ा सचिव राजेश शुक्ला ने संयुक्त रूप से कराई।

पहले दिन सब जूनियर बालक वर्ग की 100 मीटर दौड़ में अभिषेक , आकिब, साहिबजोत, जूनियर वर्ग में प्रभजोत सिंह, गौरव, सोयब , सीनियर बालक वर्ग में शशांक गुप्ता , मनमोहन, भूपेंद्र कुमार क्रमशः प्रथम द्वितीय और तृतीय रहे। 800 मीटर सब जूनियर बालक वर्ग में आयुष , संजीव, आकाश जीते। वॉलीबॉल सब जूनियर बालिका वर्ग में सरदार बल्लभ भाई पटेल इंटर कॉलेज अमरा आरोड़ की टीम प्रथम, कासिम पुर की टीम द्वितीय रही। गोला फेंक में अंकित यादव, अक्षय, जितिन जीते। बालक वर्ग वॉलीबॉल में सरदार बल्लभ भाई पटेल इंटर कॉलेज की टीम प्रथम रही। विधायक ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। निर्णायक मंडल में सर्वेंद्र नाथ शुक्ल, प्रशांत शुक्ला, गजेंद्र पाल सिंह, अमित कुमार वर्मा , संजय पांडेय, रमेश कुमार , त्रिभुवन सिंह, संजीव कुशवाहा, फैजान अली, आशुतोष समेत अन्य रहे।

दियोरिया मार्ग पर दौड़ रहे ओवरलोड गन्ना वाहन

संवाददाता, दियोरियाकलां

- ट्रकों पर करीब पांच फीट तक अतिरिक्त लदा है गन्ना

अमृत विचार : बीसलपुर दियोरिया मार्ग पर गन्ने से भरे ओवरलोड / ओवरहाइट ट्रक ट्रैक्टर ट्रॉली रफ्तार भरते दिखाई दे रहे हैं। ट्रकों पर करीब पांच फीट तक अतिरिक्त गन्ना लदा है, जिससे हादसे का डर बना हुआ है।

राहगीरों का कहना है कि ऐसे ट्रकों को देखकर पलटने का डर रहता है। थोड़ी-सी चूक किसी बड़े हादसे की वजह बन सकती है। स्थानीय लोगों के मुताबिक, ओवरलोडिंग के चलते कई बार ट्रक अनियंत्रित होकर सड़क पर इधर-उधर डगमगाते हैं। जिम्मेदार कार्रवाई के दावे कर रहे है लेकिन हालात सुधरने में नहीं आ रहे। ग्रामीण प्रशासन से सख्त

दियोरिया मार्ग पर जाता गन्ने का ट्रक।

कदम उठाने की मांग कर रहे हैं। कोतवाली पुलिस के स्तर से भी कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है।

पूरनपुर में खुलेगा नया वन स्टॉप सेंटर, शासन ने दी मंजूरी

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- स्थाई भवन निर्माण को लेकर शुरू हुई भूमि चयन की प्रक्रिया
- भवन निर्माण न होने तक किराए के भवन में संचालित होगा वन स्टॉप सेंटर

अमृत विचार: महिला सुरक्षा एवं त्वरित सहायता तंत्र को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए जिले का दूसरा नया वन स्टॉप सेंटर पूरनपुर में स्थापित किया जाएगा। शासन ने इसे लेकर मंजूरी दे दी है। नए वन स्टॉप सेंटर के भवन निर्माण को लेकर जल्द ही भूमि चयन की प्रक्रिया भी शुरू होने जा रही है। इससे पूर्व भवन निर्माण न होने पर वन स्टॉप सेंटर किराए का भवन लेकर संचालित किया जाएगा। विभाग इसे लेकर कवायद शुरू कर दी है।

हिंसा से प्रभावित महिलाओं और बालिकाओं को एक ही स्थान पर एकीकृत सहायता प्रदान करने को जनपद में महिला कल्याण विभाग की ओर से वर्ष 2015 में वन स्टॉप सेंटर स्थापित किया गया था। यह वन स्टॉप सेंटर जिला अस्पताल कैंपस में संचालित किया जा रहा है। इस वन स्टॉप सेंटर में पीड़ित महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए अल्पावास की सुविधा, मेडिकल सहायता, विधिक सहायता, निःशुल्क परामर्श एवं पुलिस सहायता प्रदान की जा रही है। वन स्टॉप सेंटर के कार्यों की बात करें तो महिला हेल्पलाइन 181 के जरिए वर्ष 2017 से लेकर अब तक 3000 से अधिक प्रकरणों का निस्तारण किया जा चुका है। कुल मिलाकर देखा जाए तो यह वन स्टॉप सेंटर हिंसा पीड़ित और भूली-भटकी महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है। इधर अब पूरनपुर तहसील में भी हिंसा पीड़ित महिलाओं और बालिकाओं को अब जनपद मुख्यालय तक दौड़ नहीं लगानी पड़ेगी। शासन ने पूरनपुर में एक नया वन स्टॉप सेंटर खोलने को मंजूरी दी है। भूमि का चयन होने के बाद जल्द ही वन स्टॉप सेंटर के लिए भवन का निर्माण कराया जाएगा। हालांकि जब तक वन स्टॉप सेंटर के स्थाई भवन निर्माण नहीं हो जाता, तब तक वन सेंटर पूरनपुर में ही किराए के भवन में संचालित किया जाएगा।

पूरनपुर में वन स्टॉप सेंटर की स्थापना होने से ग्रामीण, दूर-दराज एवं सीमा क्षेत्रों की महिलाएं अपने ही क्षेत्र में सहायता प्राप्त कर सकेंगी।

पीड़ित महिलाओं का सहारा बना पीलीभीत का वन स्टॉप सेंटर

जिला अस्पताल कैंपस स्थित वन स्टॉप सेंटर पीड़ित महिलाओं के लिए खासा सहारा बन रहा है। इस वन स्टॉप सेंटर के माध्यम से वर्ष 2017 से लेकर अब तक 3000 से अधिक प्रकरणों का निस्तारण कराया जा चुका है। बीते 2024-25 सत्र की बात करें तो 718 संकटग्रस्त महिलाओं को वन स्टॉप सेंटर की सेवाएं दी गई थी। इसमें 608 महिलाओं और बालिकाओं को अल्पावास, पुलिस और मेडिकल सहायता दी गई। महिला हेल्प लाइन से प्राप्त 99 मामलों में पति-पत्नी के बीच आपसी सुलह समझौते, 11 अज्ञात भटकी पीड़िताओं में से 10 को उनके परिवार तक पहुंचाने का कार्य किया गया।

शासन ने पूरनपुर में नवीन वन स्टॉप सेंटर को लेकर मंजूरी दी है। वन स्टॉप सेंटर की स्थापना के लिए उपयुक्त भूमि की तलाश शुरू कर दी गई है। इसमें प्रशासन का सहयोग लिया जा रहा है। भूमि चयन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद स्वीकृत बजट के अनुसार भवन निर्माण शुरू करा दिया जाएगा। इससे पूर्व पूरनपुर में ही किराए के भवन में वन स्टॉप सेंटर संचालित कर दिया जाएगा। इसकी कवायद भी तेजी से शुरू की जा चुकी है। **-अनुराग श्याम रस्तोगी,** जिला प्रोबेशन अधिकारी

भवन निर्माण के लिए भूमि चयन की कवायद शुरू

शासन के निर्देशानुसार पूरनपुर में जल्द ही वन स्टॉप सेंटर का संचालन शुरू किया जाना है। जिला प्रोबोशन अधिकारी अनुराग श्याम रस्तोगी के मुताबिक पूरनपुर में वन स्टॉप सेंटर के संचालन के लिए किराए पर भवन की तलाश शुरू कर दी गई है। वहीं वन स्टॉप सेंटर के भवन निर्माण को लेकर भी जिला प्रशासन के सहयोग से जमीन की तलाश शुरू कर दी गई है। भूमि का चयन होने के बाद सेंटर के भवन का निर्माण शुरू करा दिया जाएगा।

पीटीआर में आज से जुटेंगे वन अधिकारी

राष्ट्रीय बाघ गणना

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- शिवालिक समेत पांच डिवीजनों के वन अफसरों को बाघ गणना की बताए जाएंगें तौर-तरीके

अमृत विचार: पीलीभीत टाइगर रिजर्व में शुक्रवार को प्रदेश की पांच वन प्रभागों के वन अफसर एक प्लेटफार्म पर दिखेंगे। दरअसल पीलीभीत टाइगर रिजर्व को राष्ट्रीय बाघ गणना को लेकर नोडल प्रशिक्षण केंद्र बनाया गया है। शुक्रवार से यहां शिवालिक समेत पांच डिवीजनों के वन अफसरों को दो दिवसीय राष्ट्रीय बाघ गणना का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुछ बड़े वन अफसरों के आने की संभावना है।

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण की ओर से देश भर के टाइगर रिजर्वों में राष्ट्रीय बाघ गणना 2026 की घोषणा की गई है। पीलीभीत टाइगर रिजर्व में 10 दिसंबर से बाघों की गणना का कार्य शुरू होने जा रहा है। इसको लेकर पीलीभीत टाइगर रिजर्व की टीम पूर्व में ही उत्तराखंड जाकर प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी है। अब यह प्रशिक्षित टीम पीलीभीत टाइगर रिजर्व की सभी पांच रेंजों में टाइगर एस्टीमेशन करने वाली टीमों को प्रशिक्षण दे रही हैं। शासन की ओर से पीटीआर को राष्ट्रीय बाघ गणना का नोडल प्रशिक्षण केंद्र बनाया गया है।

नोडल प्रशिक्षण केंद्र में 4- 5 दिसंबर को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बिजनौर वन प्रभाग, शिवालिक वन प्रभाग, सामाजिक वानिकी प्रभाग बिजनौर, सामाजिक वानिकी प्रभाग शाहजहांपुर और सामाजिक वानिकी प्रभाग पीलीभीत के वन अफसर शामिल होंगें। प्रत्येक डिवीजन से 2 क्षेत्रीय वनाधिकारी एवं 2 उप क्षेत्रीय वनाधिकारी को बुलाया गया है। इन वन अफसरों को देहरादून से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके पीलीभीत टाइगर रिजर्व के वन अफसर प्रशिक्षण देंगें। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 5 दिसंबर को सभागार में इन अफसरों को बाघ गणना की बारीकियों को रूबरू कराया जाएगा। 6 दिसंबर को जंगल क्षेत्र में जाकर गणना के व्यावहारिक तौर-तरीके बताए जाएंगें। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यजीव समेत कुछ अन्य बड़े वन अफसरों के आने की संभावना है। प्रशासन की ओर से पीटीआर में होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम की तैयारियां गुरुवार शाम को पूरी कर ली गई। पीलीभीत टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर मनीष सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

सामूहिक रूप से साप्ताहिक शस्त्राभ्यास कराएं: सीओ

शस्त्रों के बारे में जानकारी करतीं सीओ प्रगति चौहान। ● अमृत विचार

पीलीभीत, अमृत विचार: सीओ प्रगति चौहान ने गुरुवार को कोतवाली बीसलपुर का निरीक्षण किया।

कार्यालय, मालखाना, शस्त्रागार, सीसीटीएनएस कार्यालय, महिला/साइबर हेल्पडेस्क, हवालात आदि के हालात देखे। शस्त्र और कारतूसों का जीपी लिस्ट के मुताबिक मिलान किया गया। कोतवाल को निर्देश दिए कि सामूहिक रूप से साप्ताहिक शस्त्राभ्यास कराया जाए। कार्यालय पर तैनात पुलिस कर्मचारियों से उनके कार्यों की जानकारी की और बीटबुक के बारे में सवाल जवाब किए। अभिलेखों का रखरखाव भी देखा। लावारिस वाहनों का अभियान चलाकर निस्तारण करने के निर्देश दिए।

अधिक पसंद किए जा रहे जैविक उत्पाद

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

कार्यक्रम में मौजूद लोक भारती के पदाधिकारी व अन्य। ● अमृत विचार

- खमरिया पुल स्थित अक्रिय धाम आश्रम परिसर में हुआ कार्यक्रम

अमृत विचार: बरेली हाईवे पर खमरिया पुल गांव में स्थित अक्रिय धाम आश्रम में गुरुवार को प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण शिविर लोकभारती की ओर से आयोजित कराया गया। मुख्य अतिथि व प्रशिक्षक राष्ट्रीय संपर्क प्रमुख लोक भारती कृष्णा चौधरी रहे। उन्होंने किसान सुभाष पालेकर का उदाहरण रखते हुए बताया एक योग्य व्यक्ति जब प्रण कर लेता है तो कुछ भी असंभव नहीं रहता है।

इस दौरान उपसंपर्क प्रमुख संजय उपाध्याय ने बताया कि हमारी निर्भरता रासायनिक खेती की तरफ बढ़ने के कारण हम अपनी परंपरागत खेती को भूलते जा रहे हैं। जिसका परिणाम यह है कि जमीनों की उर्वरक क्षमता कमजोर होती जा रही है, जबकि प्राकृतिक तरीके से की जाने वाली खेती के माध्यम से खेतों की उर्वरक क्षमता बढ़ रही है। जमीन की उर्वरकता को बढ़ाने में देसी केंचुओ का विशेष महत्व रहता है जो जमीन में 15 फीट नीचे तक जाकर नए रास्ते से ऊपर आते हैं। इससे हमारी जमीनों की जुताई हो जाती है। प्राकृतिक खेती के उत्पाद को बाजारों में अधिक पसंद किया जा रहा है। पूर्व प्रांतीय संयोजक एडवोकेट बाल मुनि कश्यप ने खेतों में उपयोग के लिए जीवामृत, घन जीवामृत, बीजों के शोधन के लिए बीजामृत निर्माण करना आदि के बारे में बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विधायक बरखेड़ा स्वामी प्रवक्तानंद और संचालन ओमवीर ने किया। इस मौके पर लोक भारती के जिला संयोजक दुर्गाप्रसाद गंगवार, कार्यक्रम संयोजक डॉ.बांकेलाल गंगवार, सहसंयोजक दीपक अग्रवाल, नागेंद्र प्रताप सिंह, हरद्वारी लाल गंगवार, श्रवण सिंह समेत अन्य रहे।

पीटीआर

सभी पांच रेंजों में बनाई जाएगी 48 ट्रांजिट लाइनें, दुधवा से मंगाए गए 450 कैमरा ट्रैप

बाघ गणना को लेकर ट्रांजिट लाइन बनाने का कार्य किया गया तेज

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

पीटीआर में ट्रांजिट लाइन बनाने में जुटे वनकर्मी। ● अमृत विचार

अमृत विचार: पीलीभीत टाइगर रिजर्व में होने वाली राष्ट्रीय बाघ गणना को लेकर तैयारियां तेजी चल रही हैं। वन क्षेत्र में ट्रॉजिट लाइन बनाने का कार्य तेजी से किया जा रहा है। टाइगर रिजर्व प्रशासन के मुताबिक बाघ गणना को लेकर टाइगर रिजर्व की सभी पांच रेंजों में 568 ग्रिड बनाने के बाद कैमरा ट्रैप लगाए जाएंगें। इसके बाद बाघों की गिनती का कार्य शुरू किया जाएगा।

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के निर्देशानुसार पीलीभीत टाइगर रिजर्व में 10 दिसंबर से बाघ गणना का कार्य शुरू किया जाएगा। पिछले दिनों राष्ट्रीय बाघ गणना को लेकर पीलीभीत टाइगर रिजर्व की टीम डीएफओ भरत कुमार डीके के नेतृत्व में उत्तराखंड के राजाजी टाइगर रिजर्व में हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण ले चुकी है। अब प्रशिक्षित टीम पीलीभीत टाइगर रिजर्व की सभी पांच वन रेंजों में टाइगर एस्टीमेशन करने वाली टीमों को प्रशिक्षण दे रही हैं। पीलीभीत टाइगर रिजर्व में होने वाली बाघ गणना में बाघों की पहचान उनके खास स्ट्राइप पैटर्न यानी धारियों के पैटर्न से करने के लिए कैमरा ट्रैप तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। टाइगर रिजर्व प्रशासन के मुताबिक बाघ गणना चार चरणों में की जाएगी। 10 दिसंबर से 5 जनवरी तक लाइन ट्रांसेक्ट, साइन सर्वे और हैबीटेट सर्वे का काम पूरा किया जाएगा। इसके तहत टाइगर रिजर्व की सभी पांच रेंजों को 568 ग्रिड में विभाजित किया जाएगा। एक ग्रिड का आकार 02 वर्ग किमी होगा। प्रत्येक ग्रिड में आमने-सामने दो कैमरा ट्रैप लगाए जाएंगें। इस तरह सभी पांच रेंजों में करीब 616 कैमरा ट्रैप लगाकर बाघ गणना का कार्य शुरू किया जाएगा। 01 मई से 07 मई तक डेटा कंपाईलेशन के बाद कैमरों में कैद हुई बाघों की तस्वीर टाइगर रिजर्व प्रशासन भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई) देहरादून को भेजेगा। इधर बाघ गणना को लेकर सभी पांच रेंजों में भी तैयारियां तेज कर दी गई है। सभी रेंजों में गणना को लेकर ट्रॉजिट लाइन बनाई जा रहीं हैं। टाइगर रिजर्व प्रशासन के मुताबिक वन अफसरों की देखरेख में पूरे वन क्षेत्र में 48 ट्रॉजिट लाइनें बनाई जा रही हैं। इसके बाद साइन सर्वे और हैबीटेट सर्वे का कार्य किया जाएगा।

संसाधनों का किया जा रहा है परीक्षण

पीलीभीत टाइगर रिजर्व में बाघ गणना को लेकर इस्तेमाल होने वाले कैमरा ट्रैप, टॉर्च, ताला, बैटरी, एसडी कार्ड समेत अन्य संसाधनों का परीक्षण किया जा रहा है। इसमें करीब 233 कैमरा ट्रैप सही पाए गए हैं। ऐसे में टाइगर रिजर्व प्रशासन की ओर से दुधवा टाइगर रिजर्व से कैमरा ट्रैप की डिमांड की गई है। इसको लेकर पिछले दिनों टाइगर रिजर्व डिप्टी डायरेक्टर मनीष सिंह ने दुधवा टाइगर रिजर्व के उपनिदेशक को पत्र भेजकर 450 कैमरा ट्रैप समेत इससे संबंधित अन्य सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया है। बताते हैं कि 06 दिसंबर तक दुधवा की ओर से कैमरा ट्रैप उपलब्ध करा दिए जाएंगें।

- 568 ग्रिड बनाकर लगाए जाएंगें 616 कैमरा ट्रैप, 10 दिसंबर से शुरू होगा बाघ गणना का कार्य

बाघ गणना को लेकर तैयारियां तेजी से चल रही है। वन क्षेत्र में ट्रांजिट लाइनें बनाने का कार्य चल रहा है। पूरे वन क्षेत्र में 48 ट्रॉजिट लाइनें बनाई जा रही हैं। इससे संबंधित अन्य कार्य भी किए जा रहे हैं।

-मनीष सिंह, डिप्टी डायरेक्टर, पीलीभीत टाइगर रिजर्व

बरेली में हुई कार्रवाई के बाद बरखेड़ा से जुड़े तार, टीमें सतर्क

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- औषधि निरीक्षक के निर्देश पर कराई जा रही चेकिंग

अमृत विचार : बरेली में हुई कफ सीरफ को लेकर कार्रवाई से पीलीभीत के बरखेड़ा के एक मेडिकल स्टोर के तार जुड़ने के बाद जिले में औषधि विभाग की टीम अलर्ट हो गई है। टीमें बनाकर चेकिंग कराई जा रही है। बताते हैं कि बरेली की टीम ने बरखेड़ा के एक मेडिकल स्टोर से करीब 13 लाख रुपये मूल्य के कफ सीरप बरामद किए थे। इसे लेकर गुरुवार को भी छापामारी की जाती रही।

बरेली में सहायक आयुक्त औषधि के नेतृत्व में टीम ने बरेली में एक फर्म पर छापेमारी की थी। इसमें बड़ी मात्रा में कोडीन युक्त कफ सीरप मिले थे। वह क्रय- विक्रय के बिल बाउचर मांगे नहीं दिखा सका था। ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के दौरान बरखेड़ा के सूर्या मेडिकल स्टोर पर करीब 13 लाख रुपये की कोडीन युक्त कफ सीरप की खेप भेजने की बात सामने आई और फिर बरेली से आई टीम ने सीरप बरामद किए थे। बरेली में सूर्या मेडिकल स्टोर के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज की गई है। औषधि निरीक्षक नेहा वैश्य ने बताया कि गुरुवार को भी टीम ने अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी की। हालांकि कहीं कफ सीरप की बरामदगी नहीं हो सकी। फिलहाल बॉर्डर एरिया और ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित हो रहे मेडिकल स्टोरों पर बोगस ग्राहक बनाकर टीम के सदस्य पड़ताल करने में जुटे हुए हैं।

जिले में आज

- बीसलपुर डाइट में चल रही विधायक खेल स्पर्धा का समापन दोपहर 12 बजे।
- शाही जामा मस्जिद में जुमे की नमाज दोपहर 1.30 बजे।
- एसआईआर को लेकर शहर समेत अन्य स्थानों पर शिविर सुबह 10 बजे से।
- पावर कॉरपोरेशन की ओर से बिजली बिल राहत योजना के शिविर सुबह 10 बजे से।
- दिव्यांग सशक्तीकरण विभाग की ओर से ब्लॉक ललौरीखेड़ा में शिविर सुबह 11 बजे से।

ब्रीफ न्यूज

दुष्कर्म के आरोपी को भेजा जेल

दियोरियाकलां, अमृत विचार : कोतवाली पुलिस ने दुष्कर्म के मामले में फरार चल रहे आरोपी फरीदपुर बरेली के ग्राम प्रेमनगर गौंटिया निवासी संजय उर्फ संजू पुत्र भूरे को बड़ागांव चौराहा से गिरफ्तार कर गुरुवार को जेल भेज दिया। एसओ गौतम सिंह ने बताया कि आरोपी के खिलाफ बीते दिनों किशोरी को बहला फुसलाकर ले जाने और दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज की गई थी।

बाजार गई युवती लापता, रिपोर्ट

पीलीभीत,अमृत विचार : एक ग्रामीण ने पुलिस को तहरीर देकर बताया बुधवार को सुबह 4 :30 बजे उसकी 22 वर्षीय पुत्री मां से 20 रुपये लेकर गोलगप्पे खाने जाने की बात कहकर निकली थी। काफी देर होने के बाद भी वह वापस नहीं आई तो उसकी तलाश की गई, लेकिन पता नहीं चल सका। उसकी पुत्री का मोबाइल भी बंद आ रहा था। पुलिस में तहरीर के आधार पर अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। एसओ सुभाष मावी ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर युवती की बरामदगी के प्रयास किए जा रहे हैं।

नवजात की मौत पर सीएमओ ने मांगा जवाब

पीलीभीत,अमृत विचार : महिला जिला अस्पताल में नवजात की मौत के मामले में परिजनों द्वारा हंगामा किए जाने पर सीएमओ डॉ .आलोक कुमार ने सीएमएस डॉ. राजेश कुमार से जवाब मांगा है। बता दें कि सुनगढ़ी थाना क्षेत्र के मैत्री बाग कालोनी निवासी मृदुल सिन्हा की पत्नी प्रिया सिन्हा ने बुधवार को बेटे को जन्म दिया था। नवजात की मौत के बाद परिजन ने डाक्टरों पर सुविधा शुल्क और बच्चे के सिर में चोट होने का आरोप लगाकर हंगामा किया था। सीएमओ ने सीएमएस से जवाब मांगा गया है।

घर में बंधी बकरियां चोरी, दी तहरीर

दियोरियाकलां, अमृत विचार : गांव टेहरी निवासी नत्थो देवी ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसके दूसरे घर में बकरियां बंधी हुई थी। ताला तोड़कर घुसे चोर बकरे और बकरी चोरी कर ले गए।

कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में बनवाई जाएंगी जिम

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- हर विद्यालय में ओपन जिम के लिए 75 हजार रुपये मिला बजट तैयारियां शुरु

अमृत विचार : छात्राओं की शिक्षा के साथ उनके सर्वांगीण विकास को नया आयाम देने के उद्देश्य से शासन ने कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में ओपन जिम खोलने का निर्णय लिया है। ओपन जिम शारीरिक फिटनेस को बढ़ाएगी, साथ ही तनाव कम करने और मानसिक मजबूती विकसित करने में अहम भूमिका बनाएंगी। जिसके तहत प्रत्येक विद्यालय को 75 हजार रुपये की धनराशि उपलब्ध कराई गई है। बजट मिलते ही तैयारियां शुरु कर दी गई है।

जिले में संचालित नौ कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में पढ़ने वाली करीब एक हजार से अधिक छात्राओं के लिए शासन ने शारीरिक सशक्तिकरण की दिशा में नई राह खोल दी है। अब विद्यालय परिसर में ओपन जिम स्थापित किए जाएंगे, ताकि छात्राएं नियमित व्यायाम कर सकें और स्वस्थ जीवनशैली अपना सकें। ग्रामीण और आवासीय परिवेश में खेलकूद के अवसर सीमित होने के कारण छात्राएं अक्सर शारीरिक गतिविधियों से वंचित रह जाती थीं, लेकिन इस पहल से उन्हें प्रतिदिन व्यायाम का सहज मौका मिलेगा। शासन ने प्रत्येक विद्यालय को 75 हजार रुपये का बजट जारी किया है, जिसके तहत एयर वॉकर, लेग प्रेस, ट्विस्टर, रोइंग मशीन सहित अन्य टिकाऊ एवं मौसम प्रतिरोधी उपकरण खरीदे जाएंगे। यह निर्देश दिए हैं कि छात्राओं को इन उपकरणों का सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित करने के लिए शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों की देखरेख अनिवार्य होगी। जिला समन्वयक मनीष कुमार ने बताया कि यह कदम कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में सक्रिय खेल संस्कृति विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

बैंक खातों से रकम उड़ाने वाले तीन जालसाज गिरफ्तार

फर्जी कॉल सेंटर: आरोपियों के पास से नौ मोबाइल, दो लैपटाप, 59500 रुपये समेत अन्य सामान बरामद

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: घुंघचिहाई थाना पुलिस ने फर्जी कॉल सेंटर संचालित कर लोगों की रकम उड़ाने वाले तीन जालसाजों को धर दबोचा। उनके पास से नौ मोबाइल, दो लैपटाप, 59500 रुपये समेत अन्य सामान बरामद किया। एएसपी विक्रम दहिया ने पुलिस लाइन में गुरुवार को खुलासा किया। जिसके बाद कोर्ट में पेश कर आरोपियों को जेल भेज दिया है।

साइबर क्राइम को लेकर पुलिस अभियान चलाकर कार्रवाई कर रही है। लोगों को कार्यशाला आयोजित कर जागरुक भी किया जा रहा है। इसी क्रम में एसपी अभिषेक यादव के निर्देशन में एनसीआरपी पोर्टल से प्राप्त क्षेत्र के पॉश वेरिफिकेशन और जिले में संचालित ऐसे बैंक खाते जिनका लिंक साइबर अपराध से जुड़ा था। उनकी जांच कराई जा रही थी। इसी दौरान घुंघचिहाई क्षेत्र में संचालित एक जनसेवा केंद्र / बीसी प्वाइंट को होल्ड किया गया। उसके संचालक से पूछताछ की गई और फिर सूचना के आधार पर पुलिस ने क्षेत्र के ग्राम हरिपुर ताल्लुके अजीतपुर बिल्हा निवासी अमृतपाल पुत्र गुरप्रीत सिंह, ग्राम उदरहा निवासी धर्मेंद्र कुमार पुत्र छंगेलाल, ग्राम घंघचिहाई निवासी प्रियांशु दीक्षित पुत्र मैकूलाल को गिरफ्तार किया। इनके पास से उपरोक्त सामान के साथ ही दुबई का सिम भी बरामद किया गया। पूछताछ की गई तो फर्जी कॉल सेंटर के माध्यम से ठगी करने की बात उजागर हो गई। रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों को जेल भेज दिया गया।

खुलासा करते एएसपी और पकड़े गए आरोपी। ● अमृत विचार

पुलिस के अनुसार, आरोपी धर्मेंद्र कुमार से उसके तीन बैंक खोतों की पासबुक, फोन नंबर ले लिया था। उसमें ठगी गई रकम भेजकर जनसेवा केंद्र से निकलवा लेते थे। इसके लिए धर्मेंद्र को पांच प्रतिशत मिलता था। इसी लालच में धर्मेंद्र खाते मुहैया कराता था। इसके अलावा श्रमिकों के पासबुक, मोबाइल नंबर झांसे देकर ले लिया करता था। उन्हें सरकारी योजना का लाभ मिलने की बात बताकर इस्तेमाल कर लिया करता। आरोपी प्रियांशु दीक्षित उसे ब्लैक में एक हजार रुपये में प्री- एक्टीवेटेड सिम उपलब्ध कराता था। धर्मेंद्र किराना दुकान पर काम करता था। प्रियांशु रुपये के लालच में सिम दिया करता था। ये भी सामने आया कि आरोपी सिम एक्टीवेट कराने के लिए ग्राहक से पहले अंगूठा लगवा लिया करते थे और फिर कोई न कोई बहाना बना दिया करते थे।

दुबई में सीखा काम, फिर गेमिंग एप का लिया सहारा

पूछताछ में सामने आया कि गिरोह का सरगना अमृतपाल है। वह अपने एक अन्य साथी के साथ 2024 में दुबई गया और कॉल सेंटर में नौकरी की। वहां उसे 35 हजार रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता था। वहां पर उसने और साथी ने काम सीख लिया तो वह वापस घर आ गए। फिर अपने घर से ही कॉल सेंटर संचालित करना शुरू कर दिया। गेमिंग एप (एवियेटर, रम्मी) के जरिए लोगों को कॉल करके लोगों को गेम खेलने के लिए प्रेरित किया। जब पहली बार कोई गेम खेलता तो उसे ऊंची दरों से जितवाकर एकाउंट में रकम भी भेज दिया करते थे। इसी तरह से खाते से डिटेल जुटा लिया करते थे। फिर उसका एकाउंट खाली कर देते थे।

कई प्रदेशों में होल्ड किए जा चुके खाते

जालसाजों के हत्थे चढ़ने के बाद पुलिस ने जेएमआईएस पोर्टल पर चेक किया तो पता चला है कि इनके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे खातों पर उड़ीसा, तमिलनाडु, बिहार, कर्नाटक, मध्यप्रदेश आदि में साइबर फ्रॉड के मामलों में होल्ड लगा हुआ है। एएसपी विक्रम दहिया ने बताया कि अन्य खातों को लेकर भी जानकारी कराई जा रही है। गहनता से इसकी पड़ताल चल रही है।

छुट्टी पर नहीं साहब ! बस अब आने ही वाले हैं

अभी भी दूर नहीं हो पा रही लेटलतीफी की आदत, वरिष्ठ अधिकारियों के पहुंचने के बाद भी कई दफ्तर से नदारद

- स्टाफ भी अधिकारियों के साथ नदारद रहता है

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार : सरकारी दफ्तरों में रोज फरियादियों की भीड़ उमड़ती है। जन सुनवाई के लिए अधिकारियों की जिम्मेदारी तय है। शासन इसे लेकर खासा संजीदा है। मगर, अभी भी कई अधिकारियों की लेटलतीफी की आदत बरकरार है।

रोज सुबह 10 से दोपहर 12 बजे तक कार्यालयों में मौजूद रहकर फरियादियों की सुनवाई और समस्या का निस्तारण कराने के निर्देश दिए गए हैं। इसका सख्ती से पालन कराने के दावे भी किए जाते हैं। मगर, कुछ जिम्मेदारों की लेटलतीफी की आदत दूर नहीं हो पा रही है। आलम ये है कि वरिष्ठ अधिकारियों के पहुंचने के काफी देर बाद तक अन्य अधिकारी समय से दफ्तर नहीं पहुंच रहे हैं। नतीजतन साहब नहीं आए तो मातहत भी पीछे क्यों रहे। कई कार्यालयों में अन्य स्टाफ भी अधिकारियों के साथ नदारद रहता है। बुधवार को अमृत विचार की टीम ने कई सरकारी कार्यालयों में पहुंचकर हालात परखे। इस दौरान डीएम, सीडीओ, एडीएम, सिटी मजिस्ट्रेट समेत कई वरिष्ठ अधिकारी तो दफ्तर में समय से पहुंच गए थे। मगर ऐसे भी कई अधिकारी थे, जो 10 बजे छोड़िए 11 बजे तक भी कार्यालय में उपस्थित नहीं थे। स्टाफ भी इतना ही बता सका कि साहब तो बस आने ही वाले हैं।

डीआईओएस कार्यालय के हॉल में कर्मचारी नदारद और खाली पड़ी कुर्सियां।

एआर कोऑपरेटिव

सीन 2

विकास भवन में ही एआर कोऑपरेटिव का कार्यालय बना हुआ है। यहां पर भी 10 .31 बजे कुर्सियां खाली पड़ी थी। जिम्मेदार कार्यालय से नदारद थे। आसपास मौजूद कर्मचारी इसे लेकर कोई जवाब नहीं दे सके। बस इतना ही कहा कि साहब तो अभी नहीं आए हैं।

10.34तक नहीं पहुंचे अफसर

सीन 4

विकास भवन के दूसरे तल पर ही जिला प्रोबेशन अधिकारी का कार्यालय है। शासन प्रशासन भले सुबह दस बजे से दफ्तर पहुंचने का निर्देश दे रहा हो, लेकिन यहां पर साहब 10 .34 बजे तक नहीं आए थे। दफ्तर में अन्य मातहत मौजूद थे। उनका कहना था कि साहब अभी जल्द ही आने वाले हैं। फिलहाल साढ़े दस बजे के बाद तक वह नहीं आए थे।

डीपीआरओ कार्यालय

सीन 1

गुरुवार सुबह करीब 10 .26 बजे का समय था। सीडीओ राजेंद्र कुमार श्रीवास अपने दफ्तर में मौजूद थे। इसके ठीक बराबर में डीपीआरओ का कार्यालय है। मगर, वहां पर डीपीआरओ नहीं थे। वहां अन्य कमरों में मौजूद कर्मचारी थे, लेकिन बताया गया कि साहब अभी आए नहीं है। कुर्सियां खाली पड़ी थी और दरवाजा भी बंद था।

पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी

सीन 3

विकास भवन पर दूसरे तल पर पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी का कार्यालय है। यहां पर भी अधिकारी नदारद थे। कुर्सियां खाली और गेट बदं था। साढ़े दस बजे के बाद भी यहां पर अधिकारी नहीं पहुंचे थे। इसे लेकर कर्मचारियों का ये कहना था कि साहब पर दूसरे विभाग का भी चार्ज है। वह दूसरे चार्ज वाले स्थान पर बैठे हुए होंगे। बस ये कहकर बचाव किया जाता रहा।

10.50 तक कुर्सी खाली

सीन 5

विकास भवन में कई अधिकारी नदारद थे। अमृत विचार की टीम सुबह करीब 10 .50 बजे डीआईओएस कार्यालय पहुंची। यहां पर कुछ लोग बाहर की तरफ खड़े हुए थे। डीआईओएस का कक्ष खाली था। वहीं, भीतर हॉल में भी एक कर्मचारी दिखाई दे रहा था, बाकी सभी कक्ष व हॉल की कुर्सियां खाली पड़ी हुई थी। ऐसे में यहां पर भी किसी के न पहुंचने जैसी तस्वीर सामने आई।

अब सफाई निरीक्षक को भी दी प्रतिकूल प्रविष्टि

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- सफाई कर्मचारी के आत्मदाह की कोशिश करने का मामला
- नायब तहसीलदार की रिपोर्ट पर तीन कर्मियों पर हो चुकी कार्रवाई

अमृत विचार : वेतन न मिलने पर सफाई कर्मचारी के आत्मदाह करने की कोशिश करने के मामले में प्रशासन की ओर से कराई गई जांच में नायब तहसीलदार ने सफाई निरीक्षक को भले ही क्लीनचिट दी हो, लेकिन ईओ की ओर से कार्रवाई की संस्तुति कर भेजी गई रिपोर्ट के आधार पर नगर पालिका के सफाई निरीक्षक को प्रतिकूल प्रविष्टि दी गई है। इधर, इस कार्रवाई पर सफाई निरीक्षक ने सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि वह अपना पक्ष वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष रखेंगे।

बता दें कि 11 सितंबर को नगर पालिका पीलीभीत में कार्यरत सफाई कर्मचारी अमन ने परिवार समेत पहुंचकर आत्मदाह करने की कोशिश की थी। उसका कहना था कि उसे दो माह से वेतन नहीं मिला। ऐसे में परिवार का भरण पोषण नहीं कर पा रहा है। उस वक्त मामला सुर्खियां बना और फिर प्रशासनिक स्तर से जांच कराई गई। एक जांच नायब तहसीलदार की ओर से की गई। नायब तहसीलदार ने पीड़ित सफाईकर्मी और अन्य स्टाफ के बयान दर्ज किए गए थे। नायब तहसीलदार की ओर से की गई जांच में लेखाकार रोशनलाल,अधिष्ठान लिपिक सत्येंद्र कुमार और कार्यवाहक सफाई नायक विकेश कुमार पर कार्रवाई की संस्तुति की गई थी। इस पर संबंधित तीनों कर्मचारियों को प्रतिकूल प्रविष्ट दे दी गई थी। सफाई निरीक्षक साबिर अली को राहत मिली थी। इधर, अब एक बार फिर ये मामला चर्चा में आ गया। बीते माह ईओ संजीव कुमार की ओर से सफाई निरीक्षक साबिर अली को भी प्रकरण में दोषी मानते हुए प्रतिकूल प्रविष्ट की कार्रवाई की संस्तुति की गई और डीएम को रिपोर्ट बनाकर भेज दी गई। इसके बाद अब डीएम की ओर से सफाई निरीक्षक साबिर अली को भी प्रतिकूल प्रविष्ट दी गई है। इसकी एक प्रति स्थानीय निकाय निदेशालय को भी भेजी गई है।

सफाई निरीक्षक बोले किया जा रहा परेशान

सफाई निरीक्षक साबिर अली ने कार्रवाई को लेकर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि उन्हें जबरन परेशान किया जा रहा है। ये भी तर्क दिया है कि अगर वह दोषी थे तो अन्य कर्मियों के साथ ही उन पर कार्रवाई क्यों नहीं की गई। ये भी आरोप लगाया कि पत्रांक संख्या को लेकर भी गोलमाल है। इसे लेकर ईओ से वार्ता करने का प्रयास किया लेकिन नहीं हो सकी है। वरिष्ठ अधिकारियों से अपना पक्ष रखेंगे।

कार की टक्कर से रेलवे क्रॉसिंग का बूम टूटा

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- सूचना पर पहुंची टनकपुर आरपीएफ, कार समेत चालक को पकड़ा
- मरम्मत के चलते तीन घंटे प्रभावित रहा यातायात, सेफ्टी जंजीर बांध गुजारी गई ट्रेन

अमृत विचार : तीन दिन पूर्व ईदगाह रेलवे क्रॉसिंग पर हुई घटना के बाद गुरुवार को वनकटी रेलवे क्रॉसिंग भी वाहन टक्कर से क्षतिग्रस्त हो गया। कार की टक्कर लगने से रेलवे क्रॉसिंग का बूम टूट गया। बूम बैरियर की मरम्मत के चलते करीब तीन घंटे तक इस रेलवे क्रॉसिंग से यातायात प्रभावित रहा। सेफ्टी जंजीर के माध्यम से ट्रेनों को गुजारा गया। इधर सूचना पर पहुंची टनकपुर आरपीएफ ने टक्कर मारने वाली कार समेत उसके चालक को हिरासत में लिया है।

बनकटी रोड पर स्थित रेलवे क्रॉसिंग पर गुरुवार दोपहर 1 बजे पैसेंजर के आने के दौरान रेलवे क्रॉसिंग में तैनात रेलकर्मी गेट को बंद कर रहे थे। इसी दौरान वनकटी से पीलीभीत शहर की ओर से आ रही एक कार ने बूम में टक्कर मार दी। जिससे वह क्षतिग्रस्त हो गया। मौके पर मौजूद लोगों ने चालक को कार समेत पकड़ लिया। रेलवे क्रॉसिंग पर तैनात कर्मियों ने इसकी सूचना तत्काल उच्चाधिकारियों को दी। उच्चाधिकारियों के निर्देश पर सेफ्टी जंजीर बांधकर टनकपुर की ओर से पैसेंजर ट्रेन को गुजारा गया। सूचना मिलने के बाद पहुंची टीम ने क्षतिग्रस्त बूम बैरियर की मरम्मत की। इसके चलते करीब तीन घंटे तक रेलवे क्रासिंग पर यातायात प्रभावित रहा। इस बीच सूचना पर टनकपुर आरपीएफ भी मौके पर पहुंच गई। आरपीएफ ने कार समेत चालक को हिरासत में ले लिया। आरपीएफ चालक को लेकर टनकपुर रवाना हो गई।

टक्कर मारने वाली कार व टूटा बूम बैरियर। ● अमृत विचार

> वाहन की टक्कर से रेलवे फाटक क्षतिग्रस्त हो गया था। इसकी सूचना आरपीएफ टनकपुर को दी गई। जिसके बाद आरपीएफ की टीम मौके पर पहुंची थी। मेंटीनेंस टीम द्वारा क्षतिग्रस्त रेलवे फाटक को दुरुस्त कर दिया गया है।
> –देवेंद्र सिंह, स्टेशन अधीक्षक

टास्क पूरा करने की बात कहकर 2.15 लाख ठगे

पीलीभीत,अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के शिवनगर कॉलोनी निवासी राहुल रावत ने पुलिस को तहरीर देकर बताया 13 सितंबर को उसके साथ ऑनलाइन 2.15 लाख रुपये की ठगी कर ली गई।

एक युवक ने टेलीग्राम पर उसको टास्क पूरा करने और वेतन देने का झांसा दिया और केवाईसी प्रोसेसिंग फीस और टैक्स के नाम पर उस बार-बार भुगतान करवाया। जब टास्क पूरा होने के बाद भी उसको रुपये नहीं मिले, तो उसने अपने वेतन की मांग की। इसके बाद उसको कोई जवाब नहीं मिला। जिस पर उसको ठगी का एहसास हुआ। कोतवाली पुलिस ने आईटी एक्ट में रिपोर्ट दर्ज की है।

परामर्श केंद्र में भी नहीं हुई सुलह एसपी के आदेश पर रिपोर्ट दर्ज

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- दहेज के लिए महिला को घर से निकालने का मामला

अमृत विचार : दहेज की मांग पूरी न होने पर ससुराल वालों ने विवाहिता को घर से निकाल दिया। पीड़िता की शिकायत पर पहले सुलह कराने के लिए परामर्श केंद्र में सुनवाई चली, लेकिन बात नहीं बन सकी। एसपी के आदेश पर अब पांच लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है।

थाना सुनगढ़ी क्षेत्र के मोहल्ला सुनगढ़ी निवासी दीक्षा ने पुलिस को दी तहरीर में बताया उसका विवाह 3 मई 2024 को उमेश निवासी मोहल्ला देशनगर कोतवाली से हुआ था।आरोप है शादी के बाद से उसके पति के अलावा सास हंसमुखी,फुफिया सास कमला,चचिया ससुर जगदीश,नंद वीना उसे अतिरिक्त दहेज की मांग करने लगे। दहेज न देने पर उसके साथ मारपीट करते थे, 18 अक्टूबर को सभी लोगों ने मारपीट करते हुए उसको घर से निकाल दिया। इसकी शिकायत उसने एसपी से की जिसके बाद परामर्श केंद्र में समझौते के लिए भी दोनों पक्षों को बुलाया गया। ससुराल पक्ष के लोग परामर्श केंद्र में आए तो लेकिन समझौता नहीं हुआ। पुलिस ने ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। इंस्पेक्टर नरेश त्यागी ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। विवेचना कराई जा रही है।

नेपाली नागरिक से चरस बरामद

पीलीभीत, अमृत विचार: एसएसबी और हजारा पुलिस की संयुक्त टीम ने नेपाली नागरिक को मादक पदार्थ के साथ गिरफ्तार किया। एनडीपीएस एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की गई।

एसपी के निर्देश पर हजारा पुलिस गश्त पर थी। एसएसबी की टीम भी साथ थी। नेपाल सीमावर्ती इलाका होने की वजह से विशेष चौकसी बरती जा रही थी। इस दौरान टीम ने ग्राम टाटरगंज के पास इंडो-नेपाल सीमा पर पोल संख्या 783/1 के पास से एक युवक को गिरफ्तार किया। उसने अपना नाम कंचनपुर (नेपाल) के थाना बेलाडांडी क्षेत्र के ग्राम बेलाडांडी वार्ड नंबर दो निवासी ललित राज पांडेय ने बताया। उसके पास से 6.99 ग्राम चरस बरामद हुई।

घर में फंदे से लटका मिला विवाहिता का शव

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार : संदिग्ध परिस्थितियों में एक विवाहिता की मौत हो गई। उसका शव घर में ही फंदे से लटका मिला। सूचना मिलने पर पहुंची सुनगढ़ी पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज जांच शुरू कर दी है। हालांकि परिजनों की ओर से कोई आरोप नहीं लगाया गया है।

थाना सुनगढ़ी क्षेत्र के गौहनिया निवासी सारिका देवी (37) पत्नी अनुज कुमार का शव बुधवार देर शाम फंदे से लटका मिला। घटना के वक्त बच्चे बाहर खेल रहे थे। कुछ देर बाद जब बच्चे भीतर पहुंचे तो शव फंदे से लटका देख होश उड़ गए। चीख पुकार मचने पर आसपास के लोग जमा हो गए। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। इंस्पेक्टर सुनगढ़ी नरेश त्यागी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। विवाहिता का शव पंखे के सहारे फंदे से लटका था। फील्ड यूनिट की टीम को भी मौके पर बुलाकर सुरागरसी कराई गई। इसके बाद पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। मृतका के पति बरेली के क्योलड़िया ब्लॉक में कार्यरत हैं। सूचना पाकर मायके वाले भी आ गए। उनका रोकर बुरा हाल रहा। मृतका के विवाह को 16 साल हो चुके हैं। पोस्टमार्टम कराकर शव परिजन के सुपुर्द कर दिया है।

ठगी कर भागा आढ़ती गिरफ्तार, पुलिस नहीं उगलवा सकी कुछ खास

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- पूछताछ के बाद चालान कर कोर्ट में पेश करके भेजा गया जेल
- करोड़ों की ठगी का मचा हुआ था शोर, एक नवंबर को दर्ज हुई थी रिपोर्ट

अमृत विचार: किसानों से ठगी कर परिवार समेत भागे आढ़ती को गिरफ्तार किए जाने की चर्चाएं बीते करीब सप्ताह भर से चल रही थी और पुलिस इनकार कर रही थी।

इन्हीं चर्चाओं के बीच सुनगढ़ी पुलिस ने आरोपी आढ़ती को टाइगर तिराहे से गिरफ्तार करने का दावा करते हुए जेल भेज दिया है। हालांकि मुदकमे में नामजद दूसरे आरोपी आढ़ती के मुनीम की धरपकड़ नहीं हो सकी है। आढ़ती द्वारा करोड़ों की रकम ठगने का शोर मचा हुआ था, लेकिन पुलिस उससे कुछ खास जानकारी नहीं जुटा सकी है। इसे लेकर भी चर्चाओं का बाजार गरमाया रहा। बता दें कि दिवाली के आसपास मंडी समिति का आढ़ती प्रियांशु अग्रवा परिवार समेत फरार हो गया था। उसके द्वारा किसानों व आढ़तियों से करोड़ों की ठगी करने का शोर मचा था। इसी बीच शाहजहांपुर जिले के थाना निगोही क्षेत्र के ग्राम संडा खास निवासी संदीप कुमार ,हरीश कुमार की ओर से दी गई संयुक्त तहरीर पर नामजद मुकदमा दर्ज किया गया। जिसमें बताया था कि हरीश कुमार ने 7 अक्टूबर को 140 क्विंटल धान 1910 रुपये प्रति क्विंटल की दर से पीलीभीत के थाना सुनगढ़ी क्षेत्र में स्थित मंडी समिति में आढ़ती प्रियांशु अग्रवाल पुत्र सुरेंद्र कुमार अग्रवाल की आढ़त पर बेचा था। उनके यहां काम करने वाले मुनीम का नाम अरुण कुमार था। इसी तरह 17 अक्टूबर और 19 अक्टूबर को संदीप कुमार ने 1280 क्विंटल धान उक्त आढ़त पर बेचा था। जिसके रुपये उन लोगों को नहीं मिले थे। इसके बाद उन्होंने आढ़ती से मोबाइल पर संपर्क करना चाहा, लेकिन संपर्क नहीं हो पाया था। जब वह लोग मंडी समिति पहुंचे तो आढ़त पर ताला लगा हुआ था। जानकारी करने पर पता चला कि प्रियांशु और उनका मुनीम अरुण कई किसानों के लगभग आठ करोड़ रुपये की ठगी कर भाग गए। पुलिस विवेचना में जुटी हुई थी। आढ़तियों ने भी प्रेसवार्ता कर करीब 75 लाख रुपये विभिन्न आढ़तियों के ठगने का आरोप लगाया था। बीते कुछ दिनों से आरोपी आढ़ती प्रियांशु के राजस्थान से गिरफ्तार किए जाने की चर्चाएं तेज हो गई थी। इधर, सुनगढ़ी थाने में भी पीड़ित किसानों और आढ़तियों को बुलाकर साक्ष्य मांगे जा रहे थे। हालांकि पुलिस ने गिरफ्तारी की बात को गलत बताया था। गुरुवार को सुनगढ़ी पुलिस ने इस मामले में कार्रवाई को गति दी। विवेचक असम चौकी प्रभारी रविंद्र सिंह बालियान की ओर से आरोपी को टाइगर तिराहा से गिरफ्तार करने का दावा किया गया है।

सुनगढ़ी पुलिस की गिरफ्त में पकड़ा गया आरोपी प्रियांशु अग्रवाल। ● अमृत विचार

आरोपी को थाने लाकर की गई पूछताछ में सुनगढ़ी पुलिस कोई खास राज नहीं उगलवा सकी है। आरोपी ने रुपया खर्च हो जाने की बात कही। हालांकि जिले में कुछ बड़े व्यापारियों और राइस मिलरों पर भी उसने रुपये उधार होने की बात कही है। जिनके बारे में पुलिस जांच पड़ताल कर रही है। इंस्पेक्टर नरेश त्यागी ने बताया कि आरोपी आढ़ती को चालान कर कोर्ट में पेश करके जेल भेज दिया है।

अमृत विचार

बरेली, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

पीलीभीत

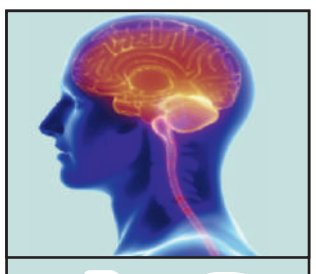

बरेली न्यूरो एण्ड स्पाईन सुपर स्पेशलिटी सेंटर

डा. मोहित गुप्ता

M.Ch. Neurosurgery (AIIMS) Senior Consultant Neurosurgeon

मस्तिष्क एवं रीढ़ रोग विशेषज्ञ

Reg. No. UPMCI 65389

सुविधायें

- सिर की चोट का इलाज व आपरेशन
- रीढ़ की हड्डी की चोट का इलाज व आपरेशन
- ब्रेन ट्यूमर, दिमागी की गांठ तथा ब्रेन हेमरेज का आपरेशन
- दूरबीन विधि द्वारा हाइड्रो सिफेलस (दिमाग में पानी भरना) का इलाज व आपरेशन
- सिर दर्द (माइग्रेन) व मिर्गी के दौरे का ईलाज
- दिमाग के फोड़े का इलाज व आपरेशन
- गर्दन (सर्वाइकल) व पीठ का दर्द, सियाटिका, स्लिम डिस्क का ईलाज व ऑपरेशन
- रीढ़ की नस का ट्यूमर (स्पाइनल ट्यूमर) का आपरेशन
- बच्चों के पीठ की गांठ का आपरेशन
- अत्याधुनिक माइक्रोस्कोप द्वारा ईलाज
- रीढ़ की हड्डी व दिमाग की टी.बी. का इलाज व ऑपरेशन
- लकवा तथा पैरालायसिस का इलाज

बरेली न्यूरो एण्ड स्पाइन सुपर स्पेशलिटी सेन्टर

सी-427, डिवाइन अस्पताल के सामने, के.के. अस्पताल रोड, राजेन्द्र नगर, बरेली

समय : प्रात: 10 12 बजे तक एवं सायं 6 से 8 बजे तक

लकवा के मरीजों के लिए 24 घंटे इमरजेंसी हेल्पलाइन नंबर

7017678157, 8077790358

7417389433, 9897287601

अब सड़कों और चौकी पर नहीं खड़े होंगे वाहन, बनेगा डिटेंशन यार्ड

शासन के निर्देश पर शुरू हुआ अभियान, दो एकड़ भूमि होगी चिन्हित

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार : अब जिले में सीज होने वाले वाहन थाने और चौकी के अलावा सड़क किनारे नहीं खड़े किए जाएंगे। इसको लेकर परिवहन विभाग की ओर से एक डिटेंशन यार्ड खोलने का निर्णय लिया गया है। जिसके लिए करीब दो एकड़ भूमि चिन्हित की जाएगी। इस यार्ड में परिवहन विभाग द्वारा सीज किए जाने वाले सभी वाहन सुरक्षित रूप से खड़े किए जाएंगे। जिससे न सिर्फ मुख्य मार्गों पर यातायात सुगम होगा, बल्कि चौकियों और सड़कों पर खड़े वाहनों से पैदा होने वाली अव्यवस्था पर भी स्थायी रोक लगेगी। साथ डिटेंशन यार्ड में सीज वाहन मलिकों से किराया भी वसूला जाएगा। इसको लेकर तैयारियां तेज कर दी गई है।

बता दें कि जिले में 255414 दोपहिया वाहन और 21536 कारें पंजीकृत हैं। इसके अलावा कमर्शियल वाहनों की संख्या भी करीब 20 हजार से अधिक हैं। वहीं इस समय कुल 192892 ड्राइविंग लाइसेंस धारक हैं, जिनमें 1,63,958 पुरुष और 28,934 महिलाएं शामिल हैं। यातायात के नियमों का उल्लंघन करने के मामले में कई बार थाना पुलिस, परिवहन और यातायात पुलिस की ओर से चालान के

इस तरह सड़क किनारे पड़े रहते हैं सीज वाहन। ● अमृत विचार

- परिवहन विभाग की ओर से सीज किए जाने वाले वाहन होंगे खड़े

साथ वाहन सीज किए जाते हैं। जो अभी तक थाने, चौकी या हाईवे किनारे खड़े हो रहे हैं, जिनसे समस्या हो रही हैं। कई बार यह वाहन हादसे का कारण भी बन चुके हैं। इसको देखते हुए शासन ने ऐसे वाहनों को खड़ा करने के लिए डिटेंशन यार्ड खोलने के निर्देश दिए हैं। इस संबंध में एआरटीओ वीरेंद्र सिंह ने बताया शासन की ओर से डिटेंशन यार्ड खोलने के निर्देश मिले हैं। डिटेंशन यार्ड खुलने से काफी हद तक समस्या दूर हो सकेगी और थानों में खड़े वाहनों से मुक्ति मिलेगी। डिटेंशन यार्ड को बनाने से जुड़ी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। यार्ड खोलने के लिए करीब दो एकड़ जमीन को चिन्हित किया जाएगा। जमीन की तलाश शुरु कर दी गई है। यदि कोई व्यक्ति यार्ड खोलने के लिए जमीन खरीदता है, तो सरकार उसमें भी मदद करेगी। यार्ड के लिए जमीन खरीदने वाले व्यक्ति को सरकार स्टैंप ड्यूटी में छूट दिलवा कर उसकी मदद करेगी। जिस व्यक्ति की जमीन में यार्ड खुलेगा, उस व्यक्ति को बंद वाहनों से किराया मिलेगा। हालांकि अभी सरकारी डिटेंशन यार्ड खोलने का पत्र मिला है। अगर प्राइवेट डिटेंशन यार्ड खोलेगा। तो उसमें किराये का प्रावधान रहेगा।

थानों में सीज खड़े वाहनों का बोझ होगा कम

थानों में खड़े कबाड़ हो चुके वाहनों के बोझ को हटाने के लिए यह एक नया विकल्प निकाला है। थानों में खड़े सीज वाहन कबाड़ हो चुके वाहन डिटेंशन यार्ड में खड़े किए जाएंगे जिससे थानों का बोझ भी कम होगा और इन वाहनों को सुरक्षा भी मिलेगी। थानों में काफी संख्या में अवैध कार्यों में लिप्त वाहन सीज कर खड़े कर दिए जाते हैं, इनमें कुछ एक्सीडेंट वाले वाहन भी होते हैं। आबकारी और खनिज विभाग की ओर से सीज किए गए वाहन भी थानों में खड़े किए जाते हैं। कई बार वाहन स्वामी इन वाहनों को छुड़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाते हैं, जिससे थानों में इन वाहनों की संख्या इतनी अधिक हो जाती है कि जगह की कमी पड़ने लगती है और इनकी प्रॉपर सुरक्षा भी नहीं हो पाती है। यही नहीं, कई बार सीज किए हुए वाहनों की संख्या इतनी ज्यादा हो जाती है कि इनको सड़क किनारे खड़ा करना पड़ता है, जिससे ट्रैफिक संचालन में भी काफी असुविधा होती है, इन्हीं सब को देखते हुए परिवहन विभाग ने सरकार से यार्ड खोलने जा रही है।

नेताओं के शिलापट गायब करने वाला पुलिस गिरफ्त से दूर

पीलीभीत, अमृत विचार: आमजन के घर प्रतिष्ठान में हुई चोरी की वारदात में पुलिस के खुलासा करने में नाकामी के कई उदाहरण आए दिन सामने आते है। अफसरों तक भी शिकायतें पहुंचती है।

मगर कोतवाली पुलिस तो माननीय से जुड़े मामले में भी कुछ साक्ष्य नहीं जुटा सकी। जबकि एक पूर्व केंद्रीय मंत्री और एक मौजूदा प्रदेश सरकार से जुड़े राज्यमंत्री के लगाए शिलापट से जुड़ा रहा। खास बात है कि थाना प्रभारी और विवेचक मुकदमा भी भूल गए हैं। फिलहाल इसके पीछे कई चर्चाएं तेज हैं।

नगर पालिका के स्तर से नेहरू पार्क का सौंदर्यीकरण कराया था। जिसके बाद पार्क भी शुरू कराया जा चुका है। तमाम शिकायतें की गई थी। जिसकी जांच चली। उस दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी और मौजूदा राज्यमंत्री संजय सिंह गंगवार के लगे शिलापट गायब कर दिए थे।

छात्रों को सीखने-समझने का महत्व बताया

कार्यक्रम में मौजूद छात्र-छात्राएं। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: समाधान आईएपीटी अन्वेषिका के तत्वावधान में गुरुवार को बेनहर गुरुकुल स्कूल में लैपटॉन सीरीज का दूसरा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रधानाचार्य आयुषी दीक्षित ने भौतिक विज्ञान रटने के स्थान पर सीखने और समझने का महत्व बताया। कहा कि रटकर परीक्षा तो पास की जा सकती है, लेकिन विषय को समझा नहीं जा सकता। सीखा और समझ गया ज्ञान स्थायी होता है। भौतिक विज्ञान प्रवक्ता गुरुसेवक सिंह ने बताया कि लैपटान एक विशेष प्रकार की बहुविकल्पीय परीक्षा है, जिसमें विद्यार्थी वीडियो ध्यान से देखें,समझें और प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें। समन्वयक लक्ष्मीकांत शर्मा ने कई प्रयोगों द्वारा भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों को स्पष्ट किया। शौर्य सिंह, अनम खान ,वंश प्रताप सिंह, हूर फातिमा आदि मौजूद रहे।

1.14 लाख के बकाया बिल की हुई वसूली

संवाददाता, बरखेड़ा

अमृत विचार: पावर कॉरपोरेशन की ओर से बिजली बिल राहत योजना के तहत गांव टिकरी माफी में शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 19 उपभोक्ताओं के बिलों का समाधान किया गया। अवर अभियंता संत कुमार ने बताया कि गुरुवार को टिकरी माफी में सुबह 10 से शाम 5 बजे तक लगाए गए शिविर में 114720 रुपये बकाया बिलों की वसूली की गई। कैंप

शिविर में पहुंचे उपभोक्ता। ● अमृत विचार

में अधिशासी अभियंता विकास शर्मा, भरत कुमार, जावेद खान, गजेंद्र पाल, शिवकुमार, अभिषेक मिश्रा, राम धीरज, मुकेश कुमार आदि मौजूद रहे।

Lifelines MEDICAL OF BAREILLY

अमृत विचार

विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय

राजेन्द्र नगर, बरेली ✆ 731-098-7005

बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...

नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ

- 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
- बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
- आयुष्मान/सीजीएचएस/ ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
- कैशलेस ईलाज

डॉ. हारिस अंसारी

एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)

Consultant Urologist & Andrologist

गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन

- प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP)
- गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL)
- गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSL)
- पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज

कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल

डॉ. एम. खान हॉस्पिटल

मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली

समय दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक हेल्पलाईन 9837549348, 9897838286

डॉ. दर्शन मेहरा

एम.बी.बी.एस., एम.डी. (मेडिसिन)

Cardiopulmonologist, Diabetologist & Intensivist

आयुष्मान एवं TPA कैशलेस सुविधा उपलब्ध

डायबिटीज, थायराइड, डेंगू, मलेरिया, टी.बी., पेट रोग, गठिया, फेफड़ों के रोग, तेज बुखार, एलर्जी, जटिल रोगों का उचित इलाज

दर्पिन हॉस्पिटल

संजय नगर रोड, पीलीभीत बाईपास, बरेली

हैल्प लाइन – 8979252222, 9457663289

डॉ. प्रेम गंगवार

B.H.M.S. (Homeo Cafe Gwalior)

वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक

मो. 8859517808

सैक्स रोग, शीघ्रपतन, नामर्दी, त्वचा, गुर्दे, कैंसर, जोड़, नस, थायराइड व महिलाओं का बांझपन

होम्योपैथिक से जुड़ी समस्या व दवाईयों के लिये नि:शुल्क सम्पर्क करें।

अत्याधुनिक जर्मन दवाईयों द्वारा कुशल डाक्टर के मार्गदर्शन में इलाज

11 वर्षों का अनुभव प्रेम जर्मन होम्योपैथिक

रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी के सामने, पीलीभीत बाईपास, एच.के. टावर, बरेली

डॉ. नितिन अग्रवाल

एम.डी. (गोल्ड मेडिलिस्ट), डी.एम. (कार्डियोलॉजी)

हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777

2D ECHO + TMT

हृदय रोग के लक्षण : ■ घबराहट ■ छाती में दर्द या भारीपन ■ सांस फूलना ■ पैरों में सूजन ■ हाई ब्लडप्रेशर ■ हाई कोलेस्ट्रोल ■ डाइबिटीज (शुगर) ■ सीने या पेट में जलन या दर्द ■ हार्ट अटैक ■ हार्ट फेल

APPLE CARDIAC CARE DR. NITIN AGARWAL'S HEART CLINIC

ए-3, एकता नगर, केयर अस्पताल के सामने, स्टेडियम रोड, बरेली। सम्पर्क करें:- 9458888448

बच्चों ने देखी ऐतिहासिक इमारतें

संवाददाता, बिलसंडा

अमृत विचार : नगर के रश्मि धर्मेंद्र पब्लिक इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने दो दिवसीय शैक्षिक भ्रमण के दौरान ऐतिहासिक इमारतों को देखा। बच्चों ने ताजमहल, बुलंद दरवाजा समेत ऐतिहासिक इमारतों को देखा। इसके अलावा मथुरा, वृंदावन, बरसाना आदि का भी भ्रमण किया। अदिति सिंह, ज्योति पाल, रागिनी शर्मा, मनप्रीत कौर, आराध्या पटेल, जूली, प्रतिज्ञा, लक्ष्मी, दिव्यांशी, निशा नूर, और ईरम,अलीशा , तनिष्का , प्रीति, कनिष्क , तेजस , कौशल , अमित, लव, निर्मित, जितिन ,गुरजंट, जीवन, अंशु भारती, अजीत, सुखदीप

शैक्षिक भ्रमण पर ताजमहल पहुंचे बच्चे। ● अमृत विचार

आदि मौजूद रहे। एमडी डीके कुशवाहा, प्रधानाचार्य विपिन कुमार वर्मा, उदय प्रताप, सुखलाल, आमिर, रविंद्र कुमार, नेमचंद्र गंगवार, सुनील, पूनम तिवारी, गुनगुन तिवारी, रूबी वर्मा, सपना समेत अन्य स्टाफ भी बच्चों के साथ रहा।

कैसी सख्ती: रंग देखकर दी जा रही दवा, जिम्मेदार बेबस

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- झोलाछाप होने की बात स्वीकारी कार्रवाई से खींचे हाथ

अमृत विचार: मरीजों की जान से खिलवाड़ कर रहे झोलाछाप पर कार्रवाई के दावे किए जाते है लेकिन सब कुछ मालूम होने के बाद भी एक्शन नहीं। कई झोलाछाप तो दवा की पहचान भी गोली का रंग देखकर करते है। मगर उन पर शिकंजा नहीं कसा जा सका है। जिम्मेदार राजनीतिक दबाव का हवाला देकर हांथ खींच रहे है। फिलहाल चर्चा साठगांठ की तेज है।

बता दें कि जनपद में स्वास्थ्य सेवाओं पर लंबे समय से सवाल उठते रहे है। कई मामले ऐसे भी सामने आए है जहां झोलाछाप के क्लिनिक सील किए गए लेकिन एफआईआर नहीं कराई गई। इसके बाद कुछ शोर बढ़ा तो बिलसंडा और बरखेड़ा में कार्रवाई को गति देनी पड़ी। बीते दिनों जहानाबाद , न्यूरिया और अमरिया क्षेत्र में झोलाछाप की दुकानें दोबारा खुलने के मामले सामने आए। जहानाबाद में पूर्व चेयरमेन के घर के सामने एक झोलछाप के सील क्लिनिक के खुलने के बाद भी कार्रवाई नहीं हुई। न्यूरिया में आबादी के बीच सील किए गए क्लिनिक के ताले तोड़कर सामान हटा दिया गया। इसके अलावा भी कई प्रकरण सुर्खियां बने लेकिन लंबे समय बाद भी कार्रवाई नहीं हो सकी हैं इतना ही नहीं सरकारी सेवा में रहते हुए कई चिकित्सक प्रायवेट प्रेक्टिस कर रहें है। कुछ जिम्मेदार पदों पर भी है। शिकायतों के बाद भी उनपर शिकंजा नहीं कसा जा सका। अवैध लैब भी संचालित हो रही। जिन्हें स्वास्थ्य विभाग के जिम्मेदार या फिर रसूखदारों का संरक्षण है। इन पर कोई एक्शन नहीं लिया जा सका है। जहानाबाद के मामले में सीएचसी अधीक्षक का तर्क था कि एक दो नहीं कई क्लिनिक अवैध है। यानी उन्हें भी सब पता है लेकिन कारवाई नहीं हुई। कुछ झोलाछाप को लेकर तो यह भी बताते है कि उन्हें दवा का भी पता नहीं। वह तो गोली का रंग देखकर इलाज कर रहे है। सीएमओ डॉ.आलोक कुमार का कहना है कि लगातार अभियान चलाया जा रहा है। शिकायत मिलने पर एक्शन लिया जाता है।

पिकअप की टक्कर से युवक की मौत

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: सड़क के किनारे बाइक के पास खड़े युवक को पिकअप ने टक्कर मार दी, जिससे वह घायल हो गया उसे मदनापुर सीएचसी पर लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

मदनापुर थाना क्षेत्र के गांव हैदलपुर निवासी अनिकेत (19) के पैर में दर्द होने पर मामा के साथ बाइक से दवा लेने के लिए जा रहे थे। बाइक अनिकेत चला रहे थे। गांव के निकलते ही सड़क के किनारे बाइक खड़ी कर दी। उसके मामा लघुशंका करने के लिए चले गए। बाइक के पास अनिकेत खड़ा था। तीव्रगति से आ रही पिकअप ने उसे टक्कर मार दी, जिससे वह घायल हो गया। चालक वाहन लेकर भाग गया। उसके मामा भांजे को सीएचसी पर ले गए। जहां डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

तीन दिवसीय रोवर्स रेंजर्स शिविर शुरू

संवाददाता, बिलसंडा

अमृत विचार: राजकीय महाविद्यालय हेमपुर में तीन दिवसीय रोवर्स- रेंजर्स शिविर आयोजित किया गया। इसकी शुरुआत प्राचार्य डॉ. दिनेश चन्द्रा ने स्काउट गाइड झंडा रोहण के साथ कराई।

उन्होंने कहा कि रोवर्स रेंजर्स अनुशासन कर्तव्यनिष्ठा, नेतृत्व क्षमता एवं आत्मनिर्भरता का विकास करता है। ये समाज एवं जीवन निर्माण के लिए आवश्यक है। शिविर में आत्म परिचय, ध्वजारोहण, कोर्स स्टॉफ, स्काउट गाइड के नियम प्रतिज्ञा, प्रार्थना, स्काउट गाइड झंडा गीत, बायां हाथ मिलाना, सैयूल्ट, सीटी के संकेत आदि गतिविधियां सिखाई गई। इस मौके पर डॉ. नरेन्द्र कुमार बतरा, डॉ. सतेन्द्र कुमार, डॉ. वेद प्रकाश, डॉ.दिनेश कुमार, कुमकुम देवी, साक्षी गंगवार, प्रिया, शिवी, अलैना, शनी, रिजवान अहमद, सुमित कुमार, अजय कुमार आदि मौजूद रहे।

शिविर में मौजूद रोवर्स रेंजर्स। ● अमृत विचार

न्यूज डायरी

ऑनलाइन ठगी से बचने के तरीके बताए

पीलीभीत, अमृत विचार : सशस्त्र सीमा बल 49वीं वाहिनी कार्यालय में साइबर सुरक्षा जागरूकता पर एक दिवसीय कार्यशाला हुई। जिसकी शुरुआत कमांडेंट राजेंद्र कुमार ने कराई। सहायक पुलिस अधीक्षक नताशा गोयल, द्वितीय कमान अधिकारी दीपक साही, उप कमांडेंट रितेश कुमार श्रीवास्तव, प्रभाकर, अनुज कुमार आदि ने विचार रखे। कई बिंदुओं पर चर्चा हुई और आवश्यक बातें बताई गई। इंटर के सुरक्षित उपयोग के सिद्धांत, सोशल मीडिया पर बरती जाने वाली सावधानियां, गोपनीयता के उपाय, ऑनलाइन ठगी से बचाव के तरीके बताए गए।

छात्राओं को बताए कानूनी अधिकार

बीसलपुर, अमृत विचार : राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में मिशन शक्ति अभियान के तहत कार्यक्रम कराया गया। महिलाओं के कानूनी अधिकार विषय पर गोष्ठी कराई गई। मुख्य वक्ता एडवोकेट हरिशंकर ने छात्राओं को संवैधानिक व कानूनी अधिकारों के बारे में जानकारी दी। प्राचार्या डॉ. अलका मेहरा ने कहा बालिकाएं अपने कानूनी अधिकारों के प्रति सजग व जागरूक रहकर ही एक सम्मानजनक स्थिति प्राप्त कर सकती हैं। नोडल अधिकारी डॉ. चन्द्रप्रभा गंगवार ने कहा कि प्रदेश सरकार निरंतर महिलाओं की सुरक्षा के प्रति सचेत है। कई अभियान और योजनाएं चलाई जा रही है। हेल्पलाइन नंबर भी बताए गए।

ब्रीफ न्यूज

सरसों की सिंचाई कर रहे किसान की सर्पदंश से मौत

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : कोतवाली धौरहरा क्षेत्र के गांव सुधारपुरवा निवासी श्याम नारायण का 28 वर्षीय बेटा हरिशंकर बुधवार की दोपहर खेत में सरसों की फसल की सिंचाई कर रहा था। इसी बीच किसी विषैले सर्प ने उसे डस लिया। घटना की जानकारी होने पर परिजन मौके पर पहुंचे और उसे सीएचसी धौरहरा लेकर गए, जहां से हालत गंभीर होने पर डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद हरिशंकर को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। परिजन जब उसे जिला अस्पताल लेकर पहुंचे तो डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मौत की खबर आते ही परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस ने पोस्टमार्टम कराकर शव परिवार वालों को सौंप दिया है।

फंदे से लटका मिला युवक का शव

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : थाना पसगवां क्षेत्र के गांव रमपुरा निवासी ह्रदयाल के 20 वर्षीय बेटे गंगादीन की शादी सात महीने पहले शादी हुई थी। वह अपनी ससुराल गया था। परिजनों के मुताबिक बुधवार की शाम करीब चार बजे गांव में सौ मीटर की दूरी पर स्थित ससुराल में घर के अंदर उसका शव फंदे से लटका बरामद हुआ है। इससे उसके परिवार में चीख पुकार मच गई। मृतक के पिता ह्रदयाल ने बताया कि गंगादीन की शादी करीब सात माह पहले हुई थी। वह अपनी पत्नी से लड़ाई झगड़ा बहुत करता था, लेकिन बुधवार को ऐसा क्या हुआ कि उसका शव फंदे से लटका मिला। इसकी जानकारी उन्हें नहीं है। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

जीव विज्ञान प्रवक्ता डॉ. अनिल साइंस सफारी में आमंत्रित

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचार : भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा हरियाणा में होने वाले इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के तहत कृषक समाज इंटर कॉलेज के जीव विज्ञान प्रवक्ता डॉ. अनिल कुमार को आमंत्रित किया गया है। वह पंचकूला, हरियाणा में छह से नौ दिसंबर तक होने वाले साइंस सफारी गेम्स एंड एडवेंचर्स कार्यक्रम में भाग लेंगे व अपने जीव विज्ञान के नवाचारी खिलौनों का प्रदर्शन करेंगे। कॉलेज के प्रबंधक रवि प्रकाश वर्मा, डीआईओएस विनोद कुमार मिश्रा ने इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर की है।

मुक्तिधाम में चलाया साफ-सफाई अभियान

संवाददाता, सिंगाही

अमृत विचार : ग्राम पंचायत सिंगहा कलां में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए प्रधान प्रतिनिधि श्याम मोहन दीक्षित के नेतृत्व में सिंगहा खुर्द स्थित मुक्ति धाम में सफाई अभियान चलाया गया।

अभियान के तहत ग्रामीणों ने परिसर की साफ-सफाई की। प्रधान प्रतिनिधि ने ग्रामीणों के साथ मिलकर मुक्ति धाम का कचरा हटवाया। आसपास पड़े अवांछित सामान को भी हटवाया नष्ट कराया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों को स्वच्छता बनाए रखने और खुले में कूड़ा न फेंकने का संदेश भी दिया। सफाई अभियान में संतराम कनौजिया, रामकिशोर लोधी, मनीराम राधा, नीरज गुप्ता, बाबूराम पटवा सहित तमाम ग्रामीण शामिल हुए। ग्रामीणों ने कहा कि नियमित साफ-सफाई से न केवल माहौल स्वच्छ रहता है बल्कि सार्वजनिक स्थलों की गरिमा भी बनी रहती है।

- प्रधान प्रतिनिधि के साथ ग्रामीणों ने की साफ-सफाई

सिंगहा खुर्द स्थित मुक्तिधाम की साफ-सफाई करते ग्रामीण।

एक करोड़ आबादी को अब तक नहीं मिली सीधी ट्रेन सुविधा, रेल सेवा की आस बंधी, लोग कर रहे सराहना

धौरहरा सांसद ने सदन में उठाया सीधी ट्रेन सेवा का मुद्दा

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: जिले की रेल सुविधा को लेकर लंबे समय से उठ रही मांग को अब संसद में आवाज मिली है। धौरहरा सांसद आनंद भदौरिया ने गुरुवार को लोकसभा में क्षेत्र की रेल व्यवस्था को लेकर गंभीर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि डुप्लीकेट लखनऊ एसी स्पेशल मेल के को वाया सीतापुर होते हुए दिल्ली मार्ग पर चलाया जाए और धौरहरा को रेल लाइन से जोड़ा जाए।

संसद के शीतकालीन सत्र में चर्चा के दौरान सांसद ने कहा कि धौरहरा संसदीय क्षेत्र में लखीमपुर खीरी और सीतापुर जनपद की कुल 17 विधानसभा सीटें शामिल हैं, जहां की लगभग एक करोड़ की आबादी आज भी दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण शहर के लिए सीधी रेल सेवा से वंचित है। उन्होंने इसे बेहद चिंता का विषय बताया। सांसद ने बताया कि क्षेत्र के लोग आज भी राज्य की राजधानी लखनऊ या अन्य बड़े शहरों तक पहुंचने के लिए ट्रेन और बसों का सहारा लेते हैं, जिसके कारण लंबी यात्रा समय, अतिरिक्त किराया और असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि रेल मंत्री से इस विषय पर कई बार बातचीत और पत्राचार हुआ, लेकिन अभी तक ठोस समाधान सामने नहीं आया। उन्होंने सदन में क्षेत्र की रेल कनेक्टिविटी को मजबूत करने के दो प्रस्ताव रखे, जिसमें पहला प्रस्ताव धौरहरा को बाया बहराइच रेल मार्ग से जोड़ने की मांग है। इसके इसके बनने से लखीमपुर खीरी और तराई क्षेत्र के लाखों लोगों को पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल बॉर्डर क्षेत्र के लिए सीधी ट्रेन सुविधा मिल सकेगी। दूसरी मांग मोहम्मदी को वाया छोटी काशी गोला-शाहजहांपुर रेल मार्ग से जोड़ने की मांग रखी। उनका कहना था यह मार्ग बनने से शाहजहांपुर, दिल्ली, लखनऊ और देहरादून सहित कई प्रमुख रूटों पर सीधी ट्रेन सेवा संभव हो सकेगी।

स्थानीय विकास पर पड़ेगा सीधा प्रभाव

रेल संपर्क बढ़ने से क्षेत्र में औद्योगिक विकास, कृषि उत्पादों की आवाजाही, पर्यटन और व्यापार में तेजी आएगी, जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण लाभ मिलेगा। उन्होंने मांग की कि रेलवे मंत्रालय तत्काल योजना बनाकर क्षेत्र की जरूरतों को प्राथमिकता दे और जल्द निर्माण कार्य शुरू करवाया जाए।

संसद में धौरहरा को रेल लाइन से जोड़ने का मुद्दा उठाते धौरहरा सपा सांसद आनंद भदौरिया।

खुशियों का संगम : 100 जोड़ों ने लिए सात फेरे

सामूहिक विवाह योजना में जिला बना अव्वल, नए पात्रों को मौका

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: गुरुवार का दिन खुशियों से सराबोर रहा। रामापुर स्थित मंच पर उस समय भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा, जब 100 जोड़ों ने सात फेरे लेकर नई जिंदगी की शुरुआत की।

जिला प्रशासन की सतत कोशिशों का परिणाम रहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना में जिले ने लक्ष्य पूरा कर मिसाल पेश की। मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक कुमार की निगरानी और पहल पर पूर्व कार्यक्रमों में अनुपस्थित रहे जोड़ों के स्थान पर नए पात्र जोड़ों को शामिल किया गया। इस प्रकार 11 विकास खंडों के 99 जोड़े और नगर पंचायत धौरहरा का एक जोड़ा वैवाहिक मंडप तक पहुंचे और परिणय सूत्र में बंध गए। झिलमिलाती सजावट, मधुर संगीत और उत्साहपूर्ण माहौल ने कार्यक्रम को भव्यता की नई पहचान दी। मुख्य विकास अधिकारी मंच से उतरकर दूल्हा-दुल्हन से मिलने पहुंचे। उन्होंने हर जोड़े से परिचय पूछा और आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि यह खुशी केवल इन परिवारों की नहीं, बल्कि पूरे जिले की है। साथ में मौजूद पीडी एसएन चौरसिया, डीडीओ गजेंद्र प्रताप सिंह व समाज कल्याण अधिकारी वंदना सिंह ने मिलकर उपहार-शगुन किट और प्रमाण पत्र दिए। फूलों की बारिश में कई दुल्हनें भावुक हो उठीं।

नवविवाहित जोड़ों पर पुष्प वर्षा करते मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक कुमार।

गरीब परिवारों की बेटियों के लिए बड़ा सहारा है यह योजना: सीडीओ

सीडीओ अभिषेक कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना गरीब परिवारों की बेटियों के लिए सचमुच वरदान साबित हो रही है। उन्होंने इसे आनंद और खुशियों का अद्भुत अवसर बताते हुए कहा कि योजना के तहत दांपत्य जीवन की शुरुआत के लिए 60 हजार रुपये की राशि सीधे कन्या के बैंक खाते में भेजी जा रही है। उन्होंने कहा कि एक शादी में समय निकालना कठिन होता है, लेकिन आज का यह भव्य आयोजन ऐसा अवसर है, जहां जनप्रतिनिधियों-अधिकारियों ने मिलकर नवदंपतियों को आशीर्वाद दिया।

महिला ने जानलेवा हमले व धमकी का लगाया आरोप

मझगई, अमृत विचार : थाना क्षेत्र में महिला ने पड़ोसी पर नशे में आए दिन घर में घुसकर गाली-गलौज, जानलेवा हमला करने और जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पुलिस ने महिला की तहरीर पर जांच शुरू कर दी है।

गांव मुर्गहा मजरा इमलिया निवासी सावित्री देवी ने बताया कि उनका एक पड़ोसी शराब पीकर आए दिन उनके घर के बाहर हंगामा करता है और गाली गलौज करता है। उनकी बेटी को भी अपशब्द कहता है। पिछले दिनों आरोपी नशे में धुत होकर उनके घर में घुस आया और फावड़ा लेकर उन पर व उनकी बेटी पर जानलेवा हमला करने की कोशिश की। जब उन्होंने पुलिस में शिकायत की बात कही, तो आरोपी और ज्यादा उग्र हो गया और धमकाने लगा। लगातार मिल रही धमकियों और उत्पीड़न से परेशान महिला ने थाना मझगई पहुंचकर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। प्रभारी निरीक्षक राजू राव ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

स्कूलों के पास तंबाकू बेचने वाले दुकानदारों का चालान

पान की दुकान पर कार्रवाई करती टीम। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

- सात दुकानदारों को बाल श्रम ने दिया नोटिस

अमृत विचार: युवा पीढ़ी को नशे और बाल श्रम से बचाने को लेकर गुरुवार को स्वास्थ्य विभाग, पुलिस, श्रम विभाग और चाइल्ड लाइन की संयुक्त टीम ने अभियान चलाया। स्कूल और कॉलेजों के आसपास तंबाकू बेचने वाले पांच दुकानदारों का चालान किया गया और उनसे एक हजार रुपये शमन शुल्क वसूला गया। श्रम विभाग ने नाबालिग बच्चों से काम कराने वाले सात दुकानदारों को नोटिस भी जारी किया है। स्वास्थ्य विभाग की इस कार्रवाई से दुकानदारों में हड़कंप मचा रहा।

सीएमओ डॉ. संतोष गुप्ता ने बताया कि स्कूल, कॉलेज और कोचिंग सेंटरों के 100 गज के दायरे में तंबाकू उत्पाद बेचना पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है। इसके तहत तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम और तंबाकू मुक्त युवा अभियान 0.3 के तहत 9 अक्टूबर से 9 दिसंबर तक अभियान चलाया जा रहा है। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग की एनटीसीपी टीम के सदस्य काउंसलर देवनंदन श्रीवास्तव और अभिषेक कश्यप ने पांच दुकानों का चालान किया। टीम में एटीएचयू प्रभारी राम अवतार, एसआई आदित्य प्रताप सिंह, श्रम प्रवर्तन अधिकारी प्रियंका वर्मा, चाइल्डलाइन प्रतिनिधि अंजुम परवीन मौजूद रहीं। जिला श्रम प्रवर्तन अधिकारी प्रियंका वर्मा ने बताया कि बाल श्रम रोकने के लिए टीम ने सात दुकानदारों को नोटिस दिया है और आगे भी यह कार्रवाई जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि नाबालिग बच्चों को मजदूरी में लगाना कानूनन अपराध है।

सीएचसी में हुई क्लस्टर मीटिंग व मलेरिया प्रशिक्षण

मितौली, अमृत विचार : सीएचसी में आशा एवं एएनएम कार्यकर्ताओं की प्रथम क्लस्टर बैठक और मलेरिया प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीएचसी अधीक्षक डॉ. देवेंद्र सिंह ने की। स्वास्थ्य टीम को मलेरिया की रोकथाम, पहचान और नियंत्रण के विभिन्न चरणों की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में स्लाइड निर्माण, मलेरिया रोगियों की पहचान, फील्ड में जांच में सावधानियां व मच्छरों से बचाव के उपायों पर चर्चा की गई। प्रशिक्षण डॉ. रेणु बैसवार, पाठ संस्था के कोऑर्डिनेटर जुबैर अली, तथा लैब टेक्नीशियन शिवेंद्र सिंह ने दिया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से गांव–गांव जाकर जनजागरूकता फैलाने पर जोर दिया। ताकि मलेरिया संक्रमण पर समय रहते नियंत्रण किया जा सके। 25 दिसंबर तक चलने वाले टिक उत्सव टीकाकरण अभियान पर भी जानकारी दी। साथ ही आयुष्मान गोल्डन कार्ड अभियान के तहत पात्र परिवारों को अधिक से अधिक लाभान्वित किए जाने के निर्देश दिए। कार्यक्रम में बीपीएम मोहम्मद तय्यब सिद्दीकी, यूनिसेफ प्रतिनिधि पारस शुक्ला, एचवी आभा शुक्ला, ब्लॉक लेखा प्रबंधक अमित सक्सेना, फार्मासिस्ट सत्येंद्र वर्मा, स्वास्थ्य कर्मी श्याम श्रीवास्तव रहे।

अधिवक्ता दिवस के रूप में मनाई प्रथम राष्ट्रपति की जयंती

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार : भारत के प्रथम राष्ट्रपति, अधिवक्ता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ. राजेंद्र प्रसाद की जयंती सेंट्रल बार एसोसिएशन ने अधिवक्ता दिवस के रूप में मनाई। समारोह में वादकारियों के हित में उत्कृश्ट कार्य करने के कारण कई अधिवक्ताओं को सम्मानित किया गया।

सेंट्रल बार एसोसिएशन सभागार में वरिष्ठ अधिवक्ता रामअवतार वर्मा की अध्यक्षता में हुये समारोह के मुख्य अतिथि ग्राम न्यायालय के न्यायाधीश अरुण कुमार सिंह राठौड़, विशिष्ट अतिथि उप जिलाधिकारी प्रतीक्षा त्रिपाठी, तहसीलदार भीमचंद्र ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद के चित्र पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया। अतिथियों ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद के वकीलों के हित में किये गये कार्यों का बखान कर समाज में अधिवक्ताओं की महत्ता बताई। सेंट्रल बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता लालबिहारी वर्मा, सुरेश कुमार शर्मा एडवोकेट, राम अवतार मौर्य, हरिनाम पांडे आदि ने संबोधित कर संगठन हित में कार्य करने आश्वासन दिया। कार्यक्रम में तीन दर्जन अधिवक्ताओं को वादकारियों के हित में उत्कृष्ट कार्य करने के कारण शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह में मौजूद सभी अधिवक्ताओं को डायरी, पेन भेंट किया गया। सेंट्रल बार एसोसिएशन के महामंत्री अनूप वर्मा के नेतृत्व में हुए कार्यक्रम का संचालन आदर्श वर्मा एडवोकेट ने किया।

गोला तहसील के अधिवक्ता दिवस कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि। ● अमृत विचार

बाघ ने खेत की रखवाली कर रहे मजदूर पर लगाई छलांग

संवाददाता, मझगई

- बाल-बाल बचा मजदूर, भागकर बचाई जान
- मझगई कस्बे के पास जंगल से खेतों में पहुंचा बाघ, ग्रामीणों में दहशत

अमृत विचार : कस्बे के उत्तर स्थित गांव के पास बुधवार शाम उस समय अफरा-तफरी मच गई। जब गन्ने के खेत में छिपे बैठे बाघ ने खेत की रखवाली कर रहे एक मजदूर पर छलांग लगाकर अचानक हमला कर दिया। गनीमत रही कि मजदूर बाल-बाल बच गया। घटना के बाद क्षेत्र में दहशत फैल गई।

कस्बा निवासी मजदूर नन्हे रोज की तरह पुनीत गुप्ता के खेत में आवारा पशुओं से फसल की रखवाली कर रहा था। तभी गन्ने के खेत में घात लगाए बैठे बाघ ने नन्हे पर छलांग लगाकर झपट्टा मारा। गनीमत रही कि वह बाघ की गिरफ्त में नहीं आ सका। इससे उसकी जान बच गई। बाघ को देखते ही नन्हे ने शोर मचाते हुए दौड़ लगा दी, जिससे वह हमले से बच गया। मजदूर की चिल्लाहट सुनकर आसपास के खेतों में काम कर रहे लोग मौके पर पहुंचे। भीड़ और शोर-शराबा बढ़ते देख बाघ दोबारा हमला नहीं कर सका और गन्ने के खेतों की ओर भागकर ओझल हो गया। हादसे के बाद गांव में दहशत का माहौल है। स्थानीय लोगों का कहना है कि बाघ पिछले कई दिनों से खेतों में घूमता दिखाई दे रहा है। इसके बावजूद वन विभाग को घटना की जानकारी नहीं दी गई है। ग्रामीणों ने मांग की है कि वन विभाग क्षेत्र में गश्त बढ़ाए और तत्काल पिंजरा लगाकर बाघ को पकड़ने की व्यवस्था करे, जिससे किसी अनहोनी को रोका जा सके।

विभाग के नए नियमों से किसान परेशान

संवाददाता, पलिया कलां

अमृत विचार: गन्ना विभाग से जारी नए नियमों से अनेक किसान परेशान हो उठे हैं। वे इन दिनों गन्ना समिति से लेकर तहसील तक के चक्कर लगाने को विवश हैं।

ज्ञात हो कि गन्ना विभाग ने इस वर्ष गन्ना किसानों के लिए एक नया नियम लागू किया गया है, जिसके अनुसार यदि किसी किसान की कई ग्रामों में कृषि भूमि है और वहां की भूमि पर बोए गन्ने के सट्टे बने हुए हैं, तो वे सट्टे बंद कर दिए जाएंगे। उनको चालू कराने के लिए जिला गन्ना अधिकारी से परमीशन लेना आवश्यक होगा। जिसके लिए तहसील जाकर नोटरी वकील से एक शपथ पत्र बनवाना होगा जिसमें अपनी सभी कृषि भूमि के इंतखाब और पुराने सट्टों की नकल सहित गन्ना विकास समिति के सचिव से अग्रसारित कराना होगा अथवा समिति कार्यालय के माध्यम से जिला गन्ना अधिकारी को भेजना होगा। जो समस्त भूमि पर खड़े गन्ने के कुल रकबे को देखकर सट्टा चालू करने की अनुमति प्रदान करेंगे। इस नए प्राविधान को लेकर वे किसान इन दिनों काफी परेशान हैं और गन्ना समिति से लेकर तहसील तक के चक्कर लगाने को विवस हैं, जिनकी कृषि भूमि एक से अधिक ग्रामों में मौजूद है और वहां उन लोगों ने गन्ना बो रखा है। उन्हें चिंता है कि इस लंबी प्रक्रिया में कहीं गन्ना का सीजन ही न समाप्त हो जाए और उनका गन्ना खेतों में खड़ा रह जाए। उधर इस संदर्भ में जब गन्ना समिति सचिव पलिया धर्मेंद्र दुबे से जानकारी की गई तो उन्होंने भी इस बात की पुष्टि की।

गन्ना समिति पलिया में लगी किसानों की भीड़। ● अमृत विचार

- एक से अधिक गांवों में बने गन्ने के सट्टे किए जा रहे बंद

विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस पर विशेष

महीने भर में 7916 देशी, 132 विदेशी सैलानियों ने की जंगल सफारी, 36 लाख से अधिक मिला राजस्व

देश का उभरता इको-टूरिज्म डेस्टिनेशन बन रहा दुधवा

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: दुर्लभ वन्य जीव प्रजातियों के सुरक्षित आवास, प्राकृतिक परिदृश्य का संरक्षण और पर्यावरण अनुकूल पर्यटन सुविधाओं के विस्तार से दुधवा टाइगर रिजर्व देश का उभरता इको-टूरिज्य डेस्टिनेशन बन रहा है। वर्तमान पर्यटन सत्र की शुरुआत एक नवंबर को हुई थी। अब तक यहां 7916 देशी व 32 विदेशी सैलानियों ने जंगल सफारी की। एक दिसंबर तक दुधवा को 36 लाख 96 हजार 67 रुपये का राजस्व मिला।

दुधवा टाइगर रिजर्व में बाघों की साइटिंग, पक्षियों के कलरव और जंगली हाथियों के अलावा गैंडा दिखने से सैलानियों में उत्साह है। यही वजह है कि साल दर साल यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है। इनमें सिर्फ देशी सैलानी ही नहीं, बल्कि विदेशियों की भी संख्या में वृद्धि हो रही है। पहली नवंबर से 30 नवंबर के मध्य जंगल सफारी करने वाले देशी सैलानियों के अलावा 132 विदेशी नागरिक भी पहुंचे। इनमें 63 पुरुष, 65 महिलाएं और चार बच्चे शामिल रहे।

दुधवा में बाघों की साइटिंग। ● अमृत विचार

दुधवा में कुलाचें भरता बारहसिंघा।

सरोवर में उगी घास के बीच हिरण।

- पर्यटकों को लुभा रहा दुर्लभ वन्यजीवों, पक्षियों का संरक्षण और संवर्धन

एक महीने में सैलानियों की संख्या काफी देखी गई है। नववर्ष और अन्य छुट्टियों पर दुधवा में सैलानियों की आमद के लिए तैयारियां की जा रही हैं। सैलानियों को बेहतर सुविधाएं मिला इसका विशेष प्रयास रहता है। -जगदीश आर. उप निदेशक दुधवा

बढ़ रही वन्य जंतुओं की संख्या

वर्ष 2022 की वन्य पशु गणना रिपोर्ट के आंकड़ों बताते हैं कि दुधवा नेशनल पार्क में 65 हजार से अधिक, कतर्नियाघाट वन्यजीव अभयारण्य में तकरीबन 12 हजार और बफर जोन में 14 हजार से अधिक वन्य प्राणी दर्ज किए गए। इसी तरह, साल 2025 के आंकड़ों में दुधवा में वन्य जीवों की संख्या बढ़कर 1.13 लाख से अधिक, कतर्निया वन्य जीव प्रभाग में 17 हजार से अधिक और बफर जोन में करीब 15 से अधिक तक पहुंच गई। यह जैव-विविधता संरक्षण प्रयासों का परिणाम माना जा रहा है। वर्ष 2022 में दुधवा, कतर्निया और बफर जोन में तेंदुआ की संख्या 92 थी, जो 2025 में अभूतपूर्व रूप से बढ़कर 275 हो गई। वहीं, गैंडों की संख्या जहां पूर्व में 49 थी, वह 2025 में बढ़कर 66 हो गई है।

सैलानियों तक पहुंच रही सुविधाएं- जयवीर सिंह

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि इको टूरिज्म को गुणवत्तापूर्ण और समृद्ध अनुभव बनाने के लिए दुधवा, पीलीभीत और कतर्नियाघाट क्षेत्रों में नेचर गाइड्स को प्रशिक्षण दिया गया है। थारू जनजाति को पर्यटन से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। उनके पारंपरिक खानपान और संस्कृति को सैलानियों तक पहुंचाने की योजनाएं लागू हैं। साथ ही, स्थानीय निवासियों को 'होम स्टे' विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि इससे ग्रामीणों की आय बढ़ सके व पर्यटकों को स्थानीय जीवनशैली का वास्तविक अनुभव मिल सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार प्राकृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखकर, स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर और पर्यटकों को विश्वस्तरीय सुविधाएं देकर प्रदेश आने वाले वर्षों में देश का प्रमुख इको-टूरिज्म हब बनने की दिशा में अग्रसर है।

26 दिन पूर्व ट्राली चोरी का नहीं लगा सकी सुराग

केशवापुर, अमृत विचार: गोला कोतवाली क्षेत्र के गांव खम्हौल से 26 दिन पहले गांव के बाहर खड़ी दोपहिया जुट्टा ट्राली चोरी का गोला पुलिस अब तक कोई सुराग नहीं लगा सकी है। गोला थाना प्रभारी ने ट्राली चोरी का मुकदमा दर्ज कर इतिश्री कर ली है। अक्सर हो रही चोरियों से ग्रामीण भयभीत हैं। खम्हौल निवासी सद्दाम हुसैन की दोपहिया नीले रंग की जुट्टा ट्राली गांव के बाहर अन्य ट्रालियों के साथ खड़ी थी, जिसे आठ नवम्बर रात को अज्ञात व्यक्तियों के द्वारा चोरी कर ली गई थी। रविवार जब ट्राली का कोई पता नही चला तो गोला पुलिस को लिखित तहरीर दी थी, कई दिनों बाद गोला थाने में ट्राली चोरी का मुकदमा दर्ज किया गया। इस चोरी से पूरे क्षेत्र में दहशत का माहौल है। गोला पुलिस की गश्त पर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं। पुलिस की कार्यप्रणाली पर असन्तोष उपज रहा है।

अमृत विचार

बरेली, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

ब्रीफ न्यूज

चोरी की बाइक के साथ युवक गिरफ्तार

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : कोतवाली मोहम्मदी पुलिस ने कोतवाली क्षेत्र से चोरी हुई बाइक बरामद कर मोहल्ला पूर्वी लखपेड़ा निवासी सतनाम सिंह को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी का चालान कर कोर्ट में पेश किया, जहां से न्यायालय ने उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा है।

अगहन पूर्णिमा पर हुए कार्यक्रम

पलिया कलां, अमृत विचार : मार्गशीर्ष पूर्णिमा के मौके पर नगर के प्रमुख श्रीकुल आश्रम में स्थित देवी मंदिर व मोहल्ला रंगरेजान स्थित शिव मंदिर पर महिलाओं ने कीर्तन- भजन किया, वहीं पांडे बाबा मंदिर ,राधा कृष्ण मंदिर, चीनी मिल मंदिर एवं कालरात्रि मंदिर सहित संपूर्णानगर रोड पर स्थित गुदरिया बाबा मंदिर व कठारे बाबा मंदिर पहुंच पूजा-अर्चना की। श्रद्धालुओं ने इस मौके पर भगवान सत्यनारायण की कथा सुनी तथा पंडितों, पुरोहितों सहित गरीब लोगों को अन्न, वस्त्र, फल,मेवा ,मिष्ठान, दक्षिणा आदि का दान किया।

बाइकों की टक्कर में युवक घायल, गंभीर

भानपुर, अमृत विचार : थाना भीरा क्षेत्र में भवानीपुर चौराहा के पास गुरुवार की शाम दो बाइकों की आपस में भीषण टक्कर हो गई। हादसे में संजय (37) पुत्र तुलसीराम गंभीर रूप से घायल हो गए। वह भीरा से अपने घर लौट रहे थे, जबकि दूसरी बाइक सवार पंकज राज भी चोटिल हुए हैं। घायल संजय को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अश्लील मैसेज कर महिला को परेशान कर रहा युवक

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : थाना शारदानगर की एक महिला ने एसपी को तहरीर देकर बताया कि थाना पदुआ के गांव लौकिहाया निवासी विवेक वर्मा उसके मोबाइल पर कॉल कर परेशान करता है। डराता और धमकाता है। अश्लील वीडियो और मैसेज भी भेजता है। एसपी संकल्प शर्मा ने मामले को गंभीरता से लिया और रिपोर्ट दर्ज करने के आदेश पुलिस को दिए। एसपी के आदेश पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

खनन में लगे डंपर की टक्कर से शिक्षक की मौत

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : कोतवाली मोहम्मदी क्षेत्र में नेशनल हाईवे पर मंगलवार देर रात खनन में लगे डंपर की टक्कर से घायल हुए शिक्षक रामलखन की उपचार के दौरान मौत हो गई। इससे उनके परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।कोतवाली मोहम्मदी क्षेत्र के गांव मोहम्मदपुर दीना निवासी रामलखन (53) राधा कृष्ण इंटर कॉलेज में शिक्षक थे। मंगलवार को वह किसी काम से मोहम्मदी आए थे। रात में बाइक से घर वापस लौट रहे थे। बताते हैं कि मोहम्मदी स्थित एक पेट्रोल पंप के पास खनन में लगे डंपर ने पहले बरातियों के वाहनों को टक्कर मारी। इसके बाद बाइक सवार रामलखन को चपेट में ले लिया।

खेलकूद मानसिक विकास के लिए जरूरी

सिल्वर सिटी एकेडमी कोटवारा में तीन दिवसीय वार्षिक खेलकूद शुरू

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

सिल्वर सिटी में कार्यक्रम का उद्घाटन करते धर्मेंद्र गिरि मांटी। ● अमृत विचार

सिल्वर सिटी एकेडमी में वालीवॉल खेलते खिलाड़ी। ● अमृत विचार

अमृत विचार: खेलकूद विद्यार्थियों के शारीरिक व मानसिक विकास के लिए बहुत जरूरी है। युवा भाजपा नेता धर्मेंद्र गिरि मोंटी ने यह बात कही। वह गुरुवार को सिल्वर सिटी एकेडमी कोटवारा में षुरू तीन दिवसीय वार्षिक खेलकूद कार्यक्रम को मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने फीता काटकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम के पहले दिन प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भागीदारी की।

समारोह की अध्यक्षता एकेडमी प्रबंधक डॉ. हरमोहन सिंह खुराना ने की। विद्यालय के प्रधानाचार्य सचेन्द्र कुमार शुक्ल ने सभी खिलाड़ियों को खेल भावना के साथ खेल में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। खेलकूद प्रतियोगिताओं में प्रथम दिन हुई शतरंज प्रतियोगिता में अलग-अलग वर्ग में हरमीत कौर व खदीजा सिद्दीकी प्रथम रहीं। क्रिकेट में रेड हाउस प्रथम, ब्लू हाउस द्वितीय, नीडल-थ्रेड में युविका वर्मा प्रथम, कार्तिकेय द्वितीय, सैक रेस में आर्यन वर्मा प्रथम, कार्तिकेय शुक्ल द्वितीय, विराट जायसवाल तृतीय स्थान पर रहे। ब्यायज रेस प्राइमरी विंग 100 मीटर में प्रखर तृतीय, अजीत कुमार द्वितीय, विशाल तृतीय स्थान पर रहे। जूनियर वर्ग 110 मीटर दिव्यांशु राज प्रथम, जीतू यादव द्वितीय, दलजीत सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सीनियर वर्ग 100 मीटर में अनुभव दीक्षित प्रथम, अमितेश बाजपेई द्वितीय और रजनीश यादव तृतीय स्थान पा रहे। गर्ल्स रेस 100 मीटर प्राइमरी वर्ग में मोनी यादव प्रथम, मान्या राज द्वितीय, आराध्या शुक्ला तृतीय, जूनियर वर्ग में रौनक सिंह प्रथम, हरमीत कौर द्वितीय, रिया यादव तृतीय स्थान पर रहीं। सीनियर वर्ग में शिवांगी राज प्रथम बुशरा द्वितीय, जीनत ने तृतीय स्थान पाया। स्लो साइकिल रेस में आदर्श यादव प्रथम, नितिन कुमार द्वितीय और, मोहित कुमार तृतीय स्थान पर रहे।

मूड़ा अर्जुन में राम लक्ष्मण के स्वरूप की आरती उतारते आयोजक। ● अमृत विचार

रामलीला में सीता स्वयंवर की लीला का हुआ मंचन

संवाददाता, केशवापुर

अमृत विचार : मूड़ा अर्जुन गांव के वीरबाबा स्थान पर रामलीला में गुरुवार दोपहर सीता स्वयंवर में धनुष भंग की लीला का मंचन किया गया।

विश्वामित्र मुनि के साथ जनकपुर में सीता स्वयंवर देखने आये श्रीराम और लक्ष्मण को देख नगरवासी निहारते रह गए। मन ही मन सीता जी ने जगदम्बा मां से श्रीराम को वर में मांगा। आयोजकों ने रंग मंच को सुंदर वनस्पति व रंग बिरंगी फूलों, गुब्बारों से सजाया। सीता ने रंगमंच पर आकार भगवान शिव के धनुष की पूजाकर कार्यक्रम को भावनात्मक रूप दिया। मौजूद दर्शकों ने श्रीराम के जयकारे लगाए। आयोजकों राजेश वर्मा, विजय प्रकाश शर्मा, नीरज वर्मा, आलोक वर्मा, अभिषेक वर्मा, अनुज सिंह, ग्राम प्रधान रामकुमार वर्मा, भगौती प्रसाद मिश्रा, सचिन सिंह ने श्रीराम लक्ष्मण की आरती उतारी। सीता विवाह के साथ रामलीला का समापन हो गया।

मेले के लिए भूमि पूजन व सुंदरकांड पाठ सम्पन्न

भूमि पूजन करते अनुराग सारथी व अन्य पदाधिकारी। ● अमृत विचार

संवाददाता, मैगलगंज

अमृत विचार: स्थानीय आर्मी ग्राउंड में लगने वाले वार्षिक मेले की शुरुआत गुरुवार को भूमि पूजन एवं सुंदरकांड पाठ के साथ हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता अनुराग एवं सारथी ने की।

भूमि पूजन के दौरान बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, सामाजिक संगठन, व्यापारी और स्थानीय नागरिक मौजूद रहे। पूजा के बाद सुंदरकांड पाठ के दौरान चौपाइयों और भजनों से पूरा स्थल गूंज उठा।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाजपा मंडल अध्यक्ष राम मोहन गुप्ता, कमल बिहारी गुप्ता, अक्षत गुप्ता, सानू, मुदित, रानू बाजपेई, शिव शंकर तिवारी, वीरेंद्र शुक्ला, मुकेश मिश्रा, सोनू बाजपेई, मुन्ना लाल गुप्ता, अजय मिश्रा, हरिओम त्रिवेदी, अनिल गुप्ता, मोहम्मद खान, टिकू गुप्ता, बजरंग सेना के जिला अध्यक्ष ऋषभ बाजपेई, शैलेंद्र बाजपेई, गुरजीत सिंह आदि मौजूद रहे।

कॅरियर मेले में राजकीय विद्यालयों से पहुंचे 55 विद्यार्थी

लखीमपुर खीरी, अमृत विचारः राजकीय आईटीआई के ओपन ऑडिटोरियम में गुरुवार को आयोजित जनपदीय कॅरियर मेला युवा उम्मीदों का केंद्र बन गया। माध्यमिक शिक्षा विभाग के तत्वावधान में आयोजित इस मेले में जिले के हाईस्कूल और इंटरमीडिएट कॉलेजों से 55 विद्यार्थी पहुंचे।

मुख्य अतिथि सीडीओ अभिषेक कुमार ने कहा कि तकनीकी शिक्षा हो, आईटी सेक्टर, प्रतियोगी परीक्षाएं, कृषि आधारित रोजगार या स्टार्टअप हर क्षेत्र में सफल होने के अपार मौके मौजूद हैं। इस मौके पर पीडी एसएन चौरसिया, डीआईओएस विनोद कुमार मिश्र, डिप्टी सीएमओ डॉ. प्रमोद कुमार रावत, आईटीआई प्रधानाचार्य, जीआईसी प्रधानाचार्य डॉ. जगत प्रकाश सिंह आदि मौजूद रहे।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों ने दिखाया दम

संवाददाता, मोहम्मदी

लंबी कूद में प्रतिभाग करते खिलाड़ी। ● अमृत विचार

● मियांपुर में विधायक खेल स्पर्धा का आयोजन, विधायक ने किया शुभारंभ

अमृत विचार: गांव मियांपुर के खेल मैदान में युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग के तत्वावधान में आयोजित विधायक खेल स्पर्धा का शुभारंभ मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक लोकेंद्र प्रताप सिंह ने किया। इस दौरान विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख महेंद्र बाजपेई और खंड विकास अधिकारी अश्विनी सिंह भी मौजूद रहे।

खेल प्रतियोगिताओं में विभिन्न आयु वर्गों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। सब जूनियर बालक वर्ग 100 मीटर दौड़ में जुग्नेश प्रथम, जसप्रीत द्वितीय नैमिष तृतीय स्थान पर रहे। जूनियर बालक वर्ग 100 मीटर दौड़ में अविनाश पहले, आकाश दूसरे और दीपक तीसरे स्थान पर रहे। सीनियर वर्ग में सदा को पहला, शिवम को दूसरे और शादाब को तीसरा स्थान मिला। सब जूनियर बालिका 100 मीटर दौड़ में तान्या वर्मा प्रथम, रूबी द्वितीय और आकांक्षा तृतीय स्थान पर रहीं। जूनियर बालक वर्ग 1500 मीटर दौड़ में अभिषेक यादव पहले, रोहित कुमार दूसरे और बादल सिंह तीसरे स्थान पर रहे। जूनियर बालक 200 मीटर दौड़ में आकाश सिंह को पहला, गुलाब सिंह को दूसरा और ओमेंद्र सिंह को तीसरा स्थान मिला। सीनियर बालिका 100 मीटर दौड़ में नैना प्रथम, रूबी द्वितीय और सारंग देवी तृतीय स्थान पर रहीं। सीनियर बालिका वर्ग 800 मीटर दौड़ में सारंग देवी को पहला पलक को दूसरा और अलका को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। जूनियर बालिका 100 मीटर दौड़ में लखविंदर पहले सिमरन कौर दूसरे और सिदरा तीसरे स्थान पर रही। लंबी कूद जूनियर बालक वर्ग में प्रथम आकाश, द्वितीय अविनाश व तृतीय शिवम रहे। कबड्डी प्रतियोगिता में जूनियर बालक वर्ग में विजेता साहबगंज और उपविजेता पड़रिया की टीम रही। सब जूनियर बालिका वर्ग में विजेता बैदा और उपविजेता पलिया टीम को घोषित किया गया।मुख्य अतिथि विधायक लोकेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि जो खिलाड़ी विजेता बने हैं उन्होंने अथक परिश्रम और अभ्यास से यह सफलता हासिल की है, लेकिन जो इस बार विजयी नहीं हो पाए, उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

निरंतर अभ्यास और समर्पण से भविष्य में सफलता अवश्य मिलेगी। प्रतियोगिताओं के संचालन शचीन्द्र नारायण दीक्षित ने किया। इस दौरान अभिषेक मिश्रा, मुकेश बाजपेई, मोहित गुप्ता, अमित अवस्थी, संजीव कुमार, अनूप कुमार सहित अनेक पदाधिकारी व खेल प्रशिक्षक मौजूद रहे।

रामलीला में नारद मोह का हुआ मंचन

संवाददाता, निघासन

अमृत विचार : अमृत विचारः झंडी रोड स्थित नंदीश्वर बाबा स्थल पर चल रहे श्री रामलीला महोत्सव में नारद मोह और विश्व सौंदर्य विवाह प्रसंग का मंचन किया गया।

नारद जी पर मोहजाल छाने और भगवान विष्णु द्वारा लीला स्वरूप में मायावी रूप दिखाए जाने का दृश्य इतना प्रभावशाली रहा कि दर्शक भावनाओं में खो गए। वहीं विश्व सौंदर्य विवाह के दृश्य के मंचन के दौरान तालियों की गड़गड़ाहट और जयकारों से पूरा पंडाल गूंज उठा। रामलीला देखने वालों की भारी भीड़ रही।

आयोजन समिति ने बताया कि रामलीला के माध्यम से प्रतिदिन अलग-अलग धार्मिक और सांस्कृतिक प्रसंगों का मंचन कर भारतीय संस्कृति और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों का संदेश जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है।

टीकाकरण व वैक्सीन जानकारी को लेकर कार्यशाला आयोजित

संवाददाता, लखीमपुर खीरी

कार्यशाला को संबोधित करते सीएमओ डॉ. संतोष गुप्ता। ● अमृत विचार

● सीएचसी अधीक्षक व डॉक्टर हुए कार्यशाला में शामिल, सीएमओ ने की कार्यक्रम की अध्यक्षता

अमृत विचार: एएफपी-वीपीडी सर्विलेंस को लेकर एक कार्यशाला का आयोजन सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता की अध्यक्षता में शहर के निजी होटल में किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन की पहल पर आयोजित हो रही कार्यशाला में सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के अधीक्षक व चिकित्सक शामिल हुए। कार्यशाला में वैक्सीन से रोकी जा सकने वाली बीमारियों की निगरानी विषय पर जोर दिया गया। इसमें पोलियो, खसरा, रूबेला, डिप्थीरिया, पर्टुसिस और नियोनेटल टेटनस जैसी बीमारियों पर नज़र रखने पर फोकस किया गया।

सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने बताया कि बच्चों को दी जाने वाली वैक्सीन उनके रखरखाव और दिए जाने के सही तरीके के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। कार्यशाला का उद्देश्य टीकाकरण को बढ़ावा देना व सुरक्षित टीकाकरण कराना है। कार्यशाला में टीकोत्सव (विशेष टीकाकरण अभियान) को सफल बनाने के लिए सभी सीएचसी अधीक्षकों को निर्देशित किया गया है। इसकी निगरानी के भी निर्देश दिए गए हैं। कार्यशाला में जिला पुरुष अस्पताल के प्रभारी सीएमएस डॉ आरपी वर्मा व डॉ डीके पुष्कर सहित जिला प्रशिक्षण अधिकारी डॉ रवि सिंह, डिप्टी सीएमओ डॉ अमित सिंह, डॉ धनीराम भार्गव, डॉ पीके रावत समेत डब्ल्यूएचओ एसएमओ डॉ विकास सिंह आदि मौजूद रहे।

एंबुलेंस कर्मियों का दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

● बेहतर सेवा, उपकरणों के उपयोग और आपातकालीन प्रबंधन की दी जानकारी

अमृत विचार: सीएचसी फरधान में आयोजित 102-108 एंबुलेंस कर्मियों का दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का गुरुवार को समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में लखीमपुर खीरी, हरदोई और शाहजहांपुर जिले के लगभग 450 से अधिक एंबुलेंस कर्मी शामिल हुए। प्रतिभागियों को एंबुलेंस सेवा संचालन, आपातकालीन परिस्थितियों में प्राथमिक उपचार, मरीजों को सुरक्षित परिवहन, समय प्रबंधन और मरीजों के परिजनों के साथ व्यवहार संबंधी दिशा-निर्देश दिए गए।

क्षेत्रीय प्रबंधक सुमित कुमार दुबे ने एंबुलेंस स्टाफ को उनकी भूमिका, जिम्मेदारियों और जनहित में दी जा रही सेवाओं के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि एंबुलेंस कर्मी मरीज की जान बचाने की पहली कड़ी होते हैं, इसलिए उनका प्रशिक्षण व दक्षता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ट्रेनर शैलेंद्र कुमार सिंह व पुनीत कुमार सिंह ने एंबुलेंस में मौजूद मेडिकल उपकरणों के उपयोग की तकनीक, स्टेप-बाय-स्टेप प्रक्रिया और रखरखाव के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रैक्टिकल डेमो के माध्यम से आपातकालीन स्थितियों में त्वरित कार्रवाई करने की विधि भी सिखाई।

कार्यक्रम में 102/108 जिला कार्यक्रम प्रबंधक कैलाश बिष्ट, ईएमई अली अब्बास सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

Rohilkhand INFERTILITY & IVF CENTRE
द्वारा IVF कैम्प
दिल्ली का जाना-माना IVF सैन्टर
RISAA IVF
Creating life.... completing families.
अब अधूरे सपने होंगे पूरे
निःसन्तानता निवारण टेस्ट ट्यूब सैन्टर

परामर्श शुल्क मुफ्त
दिन : 8 दिसम्बर 2025 दिन सोमवार
समय : प्रातः 10:00 से 01 बजे तक
अपनी नन्हीं खुशियों को आज ही अपने घर लाये हमारे साथ !
उपलब्ध सुविधायें :-
★ निःसन्तानता सम्बन्धित जाँचें सस्ती दरों पर
★ टेस्ट ट्यूब बेबी (IVF) मार्केट रेट से 35% की छूट पर
★ लैब टेस्ट पर भारी छूट
★ इन्फर्टीलिटी अल्ट्रासाउंड मात्र 150/- में
विशेषतायें:-
★ 25 वर्षों के अनुभव के साथ।
★ ICSI, I.U.I., लेप्रोस्कॉपी हिस्ट्रोस्कोपी (दुरबीन द्वारा बच्चेदानी व अंडेदानी की जाँच)
★ उच्चतम सफलता दर ★ विश्वस्तीय आधुनिकतम IVF लैब
देश विदेश में हजारों दम्पत्ति हुए लाभान्वित आइये आप भी यह उम्मीद पाएं.....
स्थान :
IVF सैन्टर Ist Floor न्यू बिल्डिंग कमरा नं. 106
रोहिलखण्ड मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल
सुरेश शर्मा नगर चौराह, डेंटल कॉलेज रोड, बरेली
रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें : 6398018900, 8171925965

बकाया भुगतान न होने पर छह को सिर मुड़वाकर करेंगे प्रदर्शन

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार: बकाया भुगतान न होने पर गन्ना किसान 6 दिसंबर को सिर मुड़वाकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। इस सिलसिले में राष्ट्रीय किसान शक्ति संगठन के प्रदेश अध्यक्ष पटेल श्रीकृष्ण वर्मा ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में बजाज चीनी मिल गोला से पिछला व इस सत्र का गन्ना मूल्य बकाया भुगतान करने, मिल में किसानों का ऊपर का ढाई फीट गन्ना काटने से रोकने व एफआईआर दर्ज करने की मांग की गई है। मांगें पूरी न होने पर छह दिसंबर को दोपहर 12 बजे चीनी मिल के सदर गेट पर सिर मुड़वाकर विरोध प्रदर्शन करने की चेतावनी दी गई है। ज्ञापन में कहा गया है कि बजाज हिंदुस्थान शुगर लिमिटेड गोला पर पिछले सत्र का लगभग 100 करोड़ रुपये बकाया है। इस सत्र का भी 23-24 दिन का गन्ना खरीद कर पेराई कर ली गई है, पर भुगतान नहीं किया जा रहा है। मिल के विरुद्ध समिति के सचिव की ओर से मुकदमा दर्ज करवाया गया है।

उर्वरक की उपलब्धता कराने की मांग

ज्ञापन में कहा गया है कि इस समय गेहूं, सरसों, मसूर आदि की बुवाई का समय है। एनपीके व डीएपी खाद पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल रही है। इसकी उपलब्धता सुनिष्चित करने की मांग की गई है। कहा गया है कि गन्ना समिति के सचिव को समिति के प्रतिनिधियों अनिल कुमार, राधेश्याम वर्मा, राजेश कुमार, परमेश्वरदीन, नत्थूलाल, जीवन लाल व जय सिंह यादव की ओर से जुलाई माह में गन्ने का बकाया भुगतान करने के लिए प्रार्थना पत्र दिया गया था, पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

तार से टकराया ट्रक, आपूर्ति बाधित

संवाददाता, कुकरा

कुकरा में बांकेगंज रोड पर गन्ना भरे ट्रक में फंसे बिजली तारों को ठीक कटाते कर्मचारी।

● मौके पर पहुंचे बिजली कर्मियों ने तार को रस्सी से ऊंचा कराया, हादसा टला

अमृत विचार: चीनी मिल का पेराई सत्र शुरू होते ही गोला नगर सहित गांवों में भी जाम की स्थिति तो बन ही रही है, साथ ही गन्ना लदे ओवरहाइट वाहनों के निकलने से बिजली तार छू जाने से दुर्घटना होने का भय लगा रहता है।

गुरुवार दोपहर बाद कुकुरा में बांकेगंज रोड पर गन्ना लदे ओवरहाइट ट्रक के बिजली तार से टकरा जाने से विद्युत सप्लाई तो एक घंटे के लिये बाधित ही हुई, साथ ही एक बड़ा हादसा बच गया। कुकुरा से बांकेगंज कस्बे को जा रहा गन्ना भरा ट्रक सड़क के बीच ऊपर निकले बिजली के तारों में फंस गया, जिससे ट्रक चालक ने ट्रक रोका और नीचे उतर गया।

विद्युत कर्मचारी को सूचना दी गई। मौके पर पहुंचे विद्युत कर्मियों ने तार को रस्सी से ऊंचा कराया। इसके बाद ट्रक आगे बढ़ा, जिसके चलते एक घंटे से अधिक समय तक विद्युत आपूर्ति बाधित रही। गनीमत रही कोई दुर्घटना नहीं हुई। ग्रामीणों ने आरोप लगाते हुए कहा है कि यहां ओवरहाइट वाहनों के निकलने पर विद्युत तार रस्सी आदि से उठा दिए जाते हैं और वाहन निकल जाते हैं।

इसका स्थाई समाधान न होने के चलते कभी भी किसी बड़ी दुर्घटना होने से इनकार नहीं किया जा सकता है।

ब्रीफ न्यूज

कारतूस-तमंचा के साथ युवक गिरफ्तार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : सदर बाजार थाना के उप निरीक्षक हरेंद्र सिंह ने गुरुवार शाम 4 बजे एक व्यक्ति को संदिग्ध अवस्था में खिरनीबाग रामलीला मंच के पास घूमते हुए पकड़ा। तलाशी में उसके कब्जे से तमंचा और कारतूस बरामद किया। पकड़े गए आरोपी की पहचान कामरान अहमद निवासी अशोक नगर थाना कोतवाली सिटी जिला हरदोई का पुलिस ने उसका चालान कर दिया।

किशोरी नकदी-जेवर लेकर घर से लापता

शाहजहांपुर, अमृत विचार : अल्हागंज थाना क्षेत्र के गांव बथुआ के एक व्यक्ति ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि 30 नवंबर की शाम 8:30 बजे उसकी 17 वर्षीय पुत्री बिना बताए घर से निकल गई है। उसकी पुत्री किसी से अपने फोन पर बात करती थी। उसकी पुत्री का मोबाइल स्वीच ऑफ है। उसकी पुत्री घर से 40 हजार रुपये ओर जेवर ले गई है। उसने पुत्री को तलाश किया और नहीं मिली। उसने आशंका व्यक्त की है कि उसकी पुत्री को कोई बहला फुसला कर ले गया है। पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर ली है। पुलिस किशोरी की तलाश कर रही है।

किशोरी को अपहरण करके ले गया युवक

सिंधौली, अमृत विचार : एक व्यक्ति ने थाने पर दी गई तहरीर में बताया बुधवार सुबह खेत पर काम करने के लिए गया था। उसकी नाबालिग बहन घर पर अकेली थी। आरोप है कि गांव का एक युवक उसकी बहन को अपहरण करके ले गया है। वह घर पर गया तो उसकी बहन नहीं मिली। वह आरोपी के घर पर शिकायत करने के लिए गया तो आरोपी के परिवार वाले झगड़ा करने के लिए उतारु हो गए। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि तहरीर मिल गयी और आगे कार्रवाई की जाएगी।

ई- रिक्शा ट्रैक्टर से टकराया, लोग घायल

सिंधौली, अमृत विचार : गांव सरथौली निवासी धनसिंह ने थाना पर दी तहरीर में बताया कि उसके पिता रामनारायन और चाचा बलराम कटिया बुजुर्ग में एक बरात में शामिल होने के बाद ई-रिक्शा पर बैठकर शाहजहांपुर जा रहे थे। काजीपुर गांव के निकट ई-रिक्शा गलत मोड़कर ट्रैक्टर से टकरा गया, जिससे दोनों लोग घायल हो गए। दोनों का निजी अस्पताल में इलाज कराया गया। उन्होंने ई-रिक्शा चालक के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

ग्राम पंचायत अधिकारियों ने काली पट्टी बांधकर किया विरोध प्रदर्शन

ऑनलाइन उपस्थिति व गैर विभागीय कार्यों के विरोध में उतरे हैं कर्मचारी

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: जिले के ग्राम पंचायत अधिकारियों व ग्राम विकास अधिकारियों ने विभिन्न मांगों को लेकर सभी ब्लॉक मुख्यालयों पर काली पट्टी बांधकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि जब तक उनकी मांगों पर सरकार ठोस निर्णय नहीं लेती, तब तक उनका आंदोलन जारी रहेगा।

जिले में तैनात ग्राम पंचायत अधिकारी और ग्राम विकास अधिकारी ऑनलाइन उपस्थिति व गैर विभागीय कार्य कराए जाने से नाराज हैं। उनका कहना है कि ग्राम पंचायतों में नेटवर्क की समस्या बनी रहती है। इससे ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज कराने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। कहीं इंटरनेट नहीं चलता है तो कहीं इसकी 'स्पीड' काफी कम रहती है। साथ ही, गैर सरकारी कार्य कराए जाने से उनकी ग्राम पंचायतों से संबंधित कार्य भी पूरे नहीं हो पाते हैं। इन समस्याओं को लेकर ग्राम पंचायत अधिकारी व ग्राम विकास अधिकारी समन्वय समिति के नेतृत्व में नकहा ब्लॉक में प्रदर्शन लगातार चौथे दिन भी जारी रहा। प्रदर्शनकारियों ने ऑनलाइन उपस्थिति व्यवस्था व ग्राम पंचायत सचिवों से लिए जा रहे गैर विभागीय कार्यों को तत्काल समाप्त करने की मांग की। आंदोलन में ग्राम पंचायत अधिकारी/ग्राम विकास अधिकारी प्रिया वर्मा, सीमा मिश्रा, शशि शेखर मिश्रा, आशुतोष वर्मा, सोनू वर्मा, पूजा वर्मा, मनीष सिंह, सुधीर कुमार, सतवीर राणा, सर्वेश कुमार, अंजलि भास्कर, राहुल सिंह आदि शामिल हुए।

नकहा विकास खंड पर प्रदर्शन करते ग्राम पंचायत अधिकारी। ● अमृत विचार

अनिश्चितकालीन धरना-प्रदर्शन शुरू करने की चेतावनी

मितौली। मितौली ब्लॉक कार्यालय पर सचिवों ने काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया। सचिवों का कहना है कि लगातार थोपे जा रहे गैर-विभागीय कार्यों से ग्रामीण विकास योजनाओं की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। प्रदर्शन के दौरान सचिवों ने नारेबाजी कर अपना विरोध दर्ज कराया। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर उनकी मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं की गई तो वे ब्लॉक मुख्यालय पर अनिश्चितकालीन धरना-प्रदर्शन शुरू करेंगे। प्रदर्शन में मनोज कुमार भार्गव, ब्रह्मप्रकाश तिवारी, योगेंद्र वर्मा, राजेंद्र प्रसाद, धर्मेंद्र बहादुर वर्मा, धीरेंद्र वर्मा और विवेक वर्मा सहित कई सचिव मौजूद रहे।

अब चांदपुर में दिखा बाघ, किसानों के उड़े होश

खुटार, अमृत विचार: गांव चांदपुर के मजरा बिलाहरा में स्थित गद्दी बाबा स्थान के पास गुरुवार शाम 6 बजे किसानों ने चकरोड पर बाघ को टहलता देखा तो उनके होश उड़ गए। जबकि चांदपुर के पहाड़पुर में बाघ एक गोवंश का शिकार कर चुका है। बावजूद इसके वन विभाग ध्यान नहीं दे रहा है। गांव चांदपुर निवासी किसान राम सेवक अर्कवंशी, अवनीश त्रिवेदी ने बताया कि गुरुवार शाम 6 बजे बिलाहरा में गन्ने की छिलाई करके वापस घर लौट रहे थे। तभी गद्दी बाबा स्थान के सामने रोड पर बाघ दिखाई दिया। इससे पैरो तले जमीन खिसक गई। बाद में किसी तरह घर पहुंचे तो लोगों को जानकारी दी। ग्रामीणों ने बताया कि दो दिसंबर की रात को चांदपुर के मजरा पहाड़पुर में बाघ ने एक आवारा पशु का निवाला बना लिया था।

जलालाबाद में युवक को घर बुलाकर मारी गोली

- मकान खाली कराने को लेकर चल रहा विवाद पुराना
- पुलिस को शिकायत देने के बाद भी कार्रवाई नहीं

जलालाबाद, अमृत विचार : गुरुवार शाम थाना क्षेत्र के ग्राम रुस्तमपुर में जमीनी विवाद को लेकर दबंगों ने एक युवक को घर से बाहर बुलाकर गोली मार दी। गोली उसके कंधे में लगी, जिससे वह वहीं गिर पड़ा। फायरिंग की आवाज सुनकर परिजन घर से बाहर निकले तो हमलावर मौके से फरार हो गए। घटना के बाद परिजनों ने पुलिस को सूचना दी, मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल को एम्बुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया, जहां उसका उपचार जारी है।

घायल जगदीप सिंह पुत्र अमरिक का बेटा हर्षदीप सिंह ने बताया कि उनके मकान को लेकर आरोपी रति पाल शर्मा निवासी ग्राम चुनौर शाहजहांपुर से सिविल कोर्ट में मामला विचाराधीन है। आरोपी मकान पर कब्जा करना चाहता है। उसी विवाद के चलते वह कुछ दिनों से दबाव बना रहा था। हर्षदीप ने बताया कि चार-पांच दिन पहले भी आरोपियों ने धमकी दी थी, जिसकी शिकायत पुलिस से की गई थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। आरोप है कि विवाद के चलते गुरुवार शाम आरोपी चार-पांच लोगों के साथ आए और जगदीप सिंह को घर से बुलाकर गोली मार दी।

थाना प्रभारी राजीव कुमार ने बताया कि घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। मामले की जांच-पड़ताल की जा रही है। पुलिस हमलावरों की तलाश में जुटी है।

धर्मांतरण कराने के आरोपी पर रिपोर्ट दर्ज

शाहजहांपुर, अमृत विचार : अल्हागंज थाना के मोहल्ला आजाद नगर निवासी रामजी मिश्रा ने थाने पर दी गई तहरीर में बताया विश्व हिन्दू परिषद का नगर अध्यक्ष हूं। उसे लोगों ने जानकारी दी कि आरोपी मान सिंह निवासी पुराना साहबगंज थाना अल्हागंज अपने घर में ईसाई धर्म की मीटिंग हर रविवार को करता है और धर्म परिवर्तन करवाता है। रविवार दोपहर मोहल्ला बगिया आशीष गुप्ता आरोपी मान सिंह के घर पर गए। आरोपी ने आशीष गुप्ता को मकान देने, शादी कराने और आर्थिक मदद कर देने का लालच दिया। आरोपी ने उससे कहा कि धर्म परिवर्तन कर दो। मान सिंह आये दिन अपने घर पर पादरियों को भी बुलवाता है और उनकी मदद लेता है। पुलिस ने आरोपी मान सिंह के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

महिला आयोग की सदस्य ने सुनीं समस्याएं

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य अर्चना मजूमदार ने कहा कि आयोग का लक्ष्य देश की प्रत्येक महिला को न्याय, सम्मान और समान अवसर दिलाना है। राष्ट्रीय महिला आयोग आपके द्वार कार्यक्रम इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इसका उद्देश्य महिलाओं की समस्याओं को स्थानीय स्तर पर सुनकर उनका समाधान सुनिश्चित करना है। वह गुरुवार को आपके द्वार (जनसुनवाई) कार्यक्रम के तहत जनसुनवाई कर रही थीं। उन्होंने कलेक्ट्रेट स्थित अटल सभागार में 94 महिलाओं की शिकायतों की सुनवाई की और संबंधित अधिकारियों को इन शिकायतों के त्वरित समाधान के निर्देश दिए।

इस दौरान उन्होंने कहा कि जनसुनवाई के माध्यम से आयोग सीधे उन महिलाओं तक पहुंच रहा है, जो किसी कारणवश अपनी शिकायत उच्च स्तर तक नहीं पहुंचा पाती हैं।

यह कार्यक्रम महिलाओं को सशक्त बनाने के साथ-साथ उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी करता है। जनसुनवाई में घरेलू हिंसा, दुष्कर्म, विवाह संबंधी प्रकरण, भरण-पोषण और साइबर क्राइम से संबंधित शिकायतें सुनी गईं। शिकायत निवारण के साथ-साथ कार्यक्रम के दौरान महिलाओं को उनके संवैधानिक अधिकारों, कानूनी प्रावधानों और आत्मनिर्भरता से जुड़ी योजनाओं की जानकारी भी दी गई।

इस मौके पर राज्य महिला आयोग सदस्य सुजीता कुमारी, सीएमओ डॉ. संतोष गुप्ता, एडीएम नरेंद्र बहादुर सिंह, एएसपी अमित राय, डीपीओ लवकुश भार्गव, भारत प्रसाद आदि मौजूद रहे।

जनसुनवाई करतीं राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य अर्चना मजूमदार। ● अमृत विचार

● अटल सभागार में आयोजित जनसुनवाई में महिलाओं ने रखी अपनी पीड़ा

शाहजहांपुर से चुराए जेवर फरीदपुर में बेचे

शाहजहांपुर, अमृत विचार: हरदोई जिले के थाना बेहटा गोकुल निवासी सिरोमननगर निवासी बाल कृष्ण वाजपेयी ने सदर बाजार थाना में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि वह पत्नी लता वाजपेई और भाभी कूपरा देवी के साथ बरेली में एक रिश्तेदारी में शादी गए थे। सोमवार दोपहर ट्रेन द्वारा बरेली से शाहजहांपुर आए। वह परिवार के साथ रोडवेज बस अड्डे पर आए और हरदोई जाने वाली बस में चढ़ गए। उन्होंने बस के अंदर एक बैग रख दिया। पत्नी और भाभी को सीट पर बैठाकर पानी बोतल लेने नीचे आ गए। इसी दौरान उनका बैग चोरी हो गया। बैग में नकदी, जेवर, साड़ी समेत आठ लाख रुपये का सामान था। पुलिस ने चोर को चिन्हित करके उसे पकड़ लिया। पुलिस आरोपी चोर को लेकर फरीदपुर में एक सराफा की दुकान पर गई ओर चोरी के खरीदे गए जेवर बरामद कर लिए। पुलिस सराफा व्यापारी को नोटिस देकर थाना में हाजिर होकर होने की बात कहकर वापस चली आई है।

तहसील प्रशासन का शत-प्रतिशत एसआईआर फॉर्म जमा किए जाने का दावा

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार: तहसील प्रशासन ने गुरुवार की शाम तक एसआईआर के शत-प्रतिशत फॉर्म जमा होने का दावा किया। अभी फॉर्म भरकर जमा करने की नियत तिथि 11 दिसंबर है।

गोला विधानसभा में कुल चार लाख तीन हजार 722 मतदाता हैं, जो जिले में मतदाताओं की संख्या के आधार पर लखीमपुर सदर विधानसभा के बाद दूसरी सबसे बड़ी विधानसभा है। विधानसभा के 411 बूथों पर बूथ लेवल अफसरों ने निर्धारित समयावधि से पहले ही शत-प्रतिशत गणना प्रपत्र भरा कर जमा करा लिए हैं।एसडीएम प्रतीक्षा त्रिपाठी ने बताया कि सभी 411 बूथों पर भी बूथ लेवल अफसरों ने पूरे मनोयोग से लगकर गणना प्रपत्र वितरित करने से लेकर फार्म भराकर जमा कराने का कार्य किया। गुरुवार की शाम चार बजे तक मतदाताओं के 99.95 प्रतिशत गणना प्रपत्र भरकर जमा करा लिए गए। गणना प्रपत्र भरने में युवा, महिलाएं व वरिष्ठ नागरिक जागरूक दिखे। इससे सभी के फॉर्म निर्धारित समय से पहले ही जमा हो गए। गणना प्रपत्र अपलोड हो जाने के बाद अब सभी प्रपत्र की जांच की जाएगी। कई बूथ लेवल अफसरों को बूथों पर शत-प्रतिशत फॉर्म अपलोड किए जाने को लेकर पहले ही एडीएम नरेंद्र बहादुर सिंह, एसडीएम प्रतीक्षा त्रिपाठी, तहसीलदार भीमचंद की ओर से सम्मानित भी किया जा चुका है।

गोला तहसील सभागार में बीएलओ के साथ बैठक करते एसडीएम और तहसीलदार।

● शाम चार बजे तक 99.95 प्रतिशत गणना प्रपत्र अपलोड

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

JOB REQUIREMENT
CapitalNeed.com
We are Hiring for
➨ Telly Caller's
➨ Sales Officer
➨ Computer Operator
Fresher's Also Apply
Bareilly (U.P.)
Mob.: 8171260301, 7906461762

देशी शराब का शटर तोड़कर 44 पेटी चोरी

संवाददाता, भानपुर

अमृत विचार : थाना भीरा क्षेत्र में चोरी की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। बुधवार की रात चोरों ने मालपुर में स्थित एक देशी शराब की दुकान का शटर तोड़ दिया। चोर दुकान में रखी 44 पेटी शराब और हजारों रुपये की नगदी चोरी कर ले गए। इससे पुलिस की गश्त व्यवस्था पर एक बार फिर सवाल उठने लगे हैं।

मालपुर में स्थित ठेका देशी शराब के संचालक करन जायसवाल ने बताया कि बुधवार की रात चोरों ने दुकान का शटर तोड़ दिया और अंदर दाखिल हो गए। विंडीज मजेदार की 26 पेटियां, विंडीज 42 डिग्री की 18 पेटियां, दुकान में रखी कुछ नगदी, डीवीआर और मॉनीटर चोरी कर ले गए। सुबह घटना की जानकारी हुई। इससे आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। दुकान संचालक ने घटना की सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने निरीक्षण कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है। लगातार हो रही चोरी की घटनाओं से क्षेत्र में दहशत का माहौल है, वहीं पुलिस गश्त पर स्थानीय लोग सवाल उठा रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यदि रात्रि गश्त सही से होती तो चोर इस घटना को अंजाम नहीं दे पाते। चौकी इंचार्ज पड़रिया तुला दीपक तिवारी ने बताया कि मामला चोरी का सामने आया है। फिलहाल जांच चल रही है। अभी रिपोर्ट दर्ज नहीं की गई है।

शराब की दुकान का टूटा शटर।

जेब काटने वाले गिरोह का सरगना पकड़ा

संवाददाता, शाहजहांपुर/ पुवायां

अमृत विचार: ई-रिक्शा पर बैठे सवारी की जेब काटकर साथी की बाइक पर बैठकर भागने वाले गिरोह के सरगना को एसओजी और पुवायां पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 1500 रुपये औरर तमंचा बरामद किया है। जलालाबाद पुलिस इस गिरोह के एक सदस्य को पकड़ चुकी है।

एसओजी प्रभारी धर्मेंद्र कुमार और महिला उप निरीक्षक साक्षी त्यागी टीम के साथ पुवायां क्षेत्र में वाहनों की चेकिंग कर रही थी। पुलिस को सूचना मिली कि हरना नगला के एक व्यक्ति की 15 हजार रुपये की जेब काटकर चोरी करने वाले दो आरोपी एक स्कूल के पास आ रहे है। पुलिस ने उनकी बाइक रोकने का प्रयास किया तो एक युवक बाइक से नीचे गिर गया। पुलिस ने उसे पकड़ लिया और उसका साथी भाग गया। पकड़ा गया आरोपी सर्वेश निवासी बारह पत्थर चौराहा थाना जलालाबाद है। पुलिस ने उसके कब्जे से 1950 रुपये, तमंचा और आधार कार्ड बरामद किया है। आरोपी ने बताया 23 नवंबर को अपने साथी शनि उर्फ हऊआ और सोनू को लेकर पुवायां क्षेत्र में शिकार की तलाश में आए थे। उसने अपने साथी सोनू के साथ मोपेड पर सवार एक व्यक्ति की 15 हजार रुपये की जेब काटी थी। आरोपी पर पहले से विभिन्न धाराओं के आठ मुकदमे है। बताते है ई-रिक्शा पर जेब काटकर रुपये चुराने के बाद पीछे से आ रहे साथी की बाइक पर बैठकर भाग जाते है। पकड़ा गया आरोपी गिरोह का सरगना है। जलालाबाद पुलिस इस गिरोह के एक सदस्य को पकड़ा था। पुलिस ने आरोपी का चालान कर दिया। टीम में उप निरीक्षक मनोज कुमार, शिशुपाल आदि स्टाफ मौजूद रहा।

पुलिस हिरासत में चोरी का आरोपी। ● अमृत विचार

● नकदी, आधार कार्ड, तमंचा बरामद, गिरोह का एक सदस्य जलालाबाद में पकड़ा जा चुका

चार दिन से लापता युवक का तालाब में मिला शव

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: शहर में नामे महाराज की कोठी के पीछे तालाब में कुंभी के नीच दबे एक युवक का शव मिलने से शहर में सनसनी फैल गई। शव की पहचान नौरंगाबाद निवासी पंचर मिस्त्री टिंकू उर्फ मुनीश अली खान (35) के रूप में हुई है। वह 1 दिसंबर की दोपहर तीन बजे से लापता था।

मोहल्ला नौरंगाबाद निवासी टिंकू उर्फ मुनीश अली पंचर बनाने का काम करता था। वह 1 दिसंबर की दोपहर तीन बजे घर से निकला था। उसके बाद वापस नहीं लौटा। परिवार वालों ने उसकी काफी खोजबीन की, लेकिन कोई पता नहीं चला। अगले दिन उसकी सदर कोतवाली में गुमशुदगी दर्ज कराई गई थी। गुरुवार की सुबह कुछ लोग तालाब के किनारे गए थे। इस बीच उनकी नजर कुंभी के नीचे दबे शव पर पर पड़ी। शव होने की सूचना से आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। तमाम लोगों की भीड़ मौके पर जमा हो गई। सूचना पर सदर कोतवाली पुलिस भी मौके पर पहुंचे। पुलिस ने जलकुंभी हटाकर शव को बाहर निकलवाया। शव की पहचान टिंकू के रूप में होने पर परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस के मुताबिक टिंकू नशे का आदी था। वह नशा कर तालाब तक पहुंचा। डूबने से उसकी मौत हो गई। परिवार वालों ने हत्या कर शव तालाब में फेंके जाने की आशंका जताई है। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शहर कोतवाल राजेश कुमार सिंह ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

● 1 दिसंबर से लापता था युवक, दर्ज थी गुमशुदगी

सूचना

मेरे पति श्री अशोक कुमार गोयल की मृत्यु दिनांक 18.08.2025 को हो चुकी है। उनके नाम मकान खसरा नं. 712 सुर्खा छावनी, अन्दर चुन्गी, बरेली उत्तर प्रदेश-243001 पिरामल कैपिटल हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड से लोन लिया था, जो मैं पूरा लोन जमा कर चुकी हूँ। अब मैं उक्त आवास के कागजात छुड़वाना चाहती हूँ। **मन्जू गोयल पत्नी स्व. श्री अशोक कुमार गोयल निवासी 53, नीलकंठ कालोनी, अलखनाथ मंदिर, बरेली।**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपने बडे भाई अनिल से उसके गलत आचरण एवं दुर्व्यवहार के कारण उससे अपने सम्बन्ध विच्छेद कर लिये हैं। भविष्य में उसके द्वारा किये गये किसी भी कृत्य का एवं लेन देन का मुझसे कोई सरोकार नहीं होगा। वह अपने कृत्यों का स्वयं जिम्मेदार होगा। **नीरज पुत्र श्री तेजराम निवासी 147- सिकलापुर आजम नगर चौराहा थाना बारादरी जिला बरेली**

सूचना

मैं परवीन पहले मेरा नाम परवीन बानो था। अब मैंने अपना नाम बदलकर परवीन रख लिया है। भविष्य में मुझे परवीन के नाम से ही जाना जाये। **परवीन पत्नी स्व. नुसरत अली निवासी 38 जखीरा जिला बरेली।**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपने पुत्र फरहान उद्दीन को गलत आचरण एवं दुर्व्यवहार के कारण सम्बन्ध विच्छेद कर अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में उसके द्वारा किए गए किसी भी कृत्य के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरा व मेरे परिवार से कोई वास्ता नहीं होगा। मोहम्मद शमीम उद्दीन पुत्र मोहम्मद हफीज उद्दीन निवासी 353 मलूकपुर बाजदारान छोटी मस्जिद बरेली- 243001

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

पलिया के चौराहों पर अतिक्रमण से जाम

संवाददाता, पलिया कलां

अमृत विचार: नगर के प्रमुख स्थानों पर बढ़ रहा अतिक्रमण बड़ी समस्या बन गया है। कमल चौराहा, मेला सिंह चौराहा, रामलीला गेट चौराहा व पुराना बस अड्डा क्षेत्र में अवैध पार्किंग, फलों के ठेले और दुकानदारों द्वारा सड़क पर फैलाया गया सामान लगातार यातायात व्यवस्था में बाधा उत्पन्न कर रहा है। इससे हर पाल जाम की स्थिति बनी रहती है।

सुबह से देर रात तक इन मार्गों पर दोपहिया, चौपहिया वाहनों की अवैध पार्किंग व फलों के ठेलों के लाइनों से खड़े होने के कारण सड़कें सिकुड़ जाती हैं। वहीं, मेला रोड, सब्जी मंडी रोड व माल गोदाम रोड पर कई दुकानदार अपनी दुकान का आधा सामान सड़क पर रख देते हैं, जिससे स्थितियां और गंभीर हो जाती हैं। चौकी चौराहा पर तो रोडवेज बसों का दिनभर सड़क किनारे खड़ा रहना आम बात बन चुका है, जिसके चलते राहगीरों, विशेषकर स्कूल और कॉलेज के छात्रों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। कई बार जाम लगने से एंबुलेंस और जरूरी सेवाओं के वाहन भी फंस जाते हैं।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि प्रशासन की अनदेखी के चलते फुटपाथ समाप्त हो चुके हैं और सड़कें अस्थायी दुकानों में बदल गई हैं।

अतिक्रमण के कारण कमल सिनेमा चौराहे पर लगा जाम। ● अमृत विचार

● ठेले-खोखे, अवैध पार्किंग और दुकानदारों का सामान बना मुसीबत

यूरिया के लिए लाइन में लगे दो भाइयों को पीटा

कलान, अमृत विचार : कलान थाना क्षेत्र के ग्राम सनाय निवासी हरिओम ने थाने पर दी तहरीर में बताया वह वारा कला साधन सहकारी समिति पर यूरिया लेने गया था जहां भीड़ अधिक होने के कारण खाद लेने के लिए लोग लाइन में खड़े थे। वह भी लाइन में खड़ा हो गया। उसका भाई सोहित भी साथ था। साधन सहकारी समिति का सुरजीत चौकीदार अपने खास लोगों को यूरिया दिलाने लगा, जिसका उसने विरोध किया। इसी को लेकर चौकीदार उससे खुन्नस मान बैठा। आरोप है कि चौकीदार अपने कई लोगों को लेकर आया और उसको पीटने लगा। जब उसका भाई सोहित बचाने आया तो आरोपियों ने उसे भी पीट दिया। तहरीर पुलिस को दी गई है।

हवन के साथ रूद्र महायज्ञ की हुई पूर्णाहुति

संवाददाता, औरंगाबाद

अमृत विचार: ब्रम्हदेव स्थान तकियापर मंदिर परिसर में आयोजित पांच दिवसीय रूद्र महायज्ञ का हवन व भंडारा के साथ समापन हो गया। 29 नवंबर से चल रहे इस कार्यक्रम में कस्बा औरंगाबाद के लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। यज्ञाचार्य पं श्री राम शत्रुहन शुक्ल व सुधाकर तिवारी ने मंत्रोच्चारण के साथ-साथ विधि विधान से पूजा अर्चना कर हवन संपन्न कराया।

यजमानों ने देवी देवताओं के नाम हवन किया और आहूतियां डालीं। भंडारे में श्रद्धालुओं को महाप्रसाद के रूप में खीर पूड़ी सब्जी का महाभोग परोसा गया। इस दौरान यजमान विपुल मिश्र व उनके सहयोगी बसन्त मिश्र,रामसरन तिवारी, हाकिम मिश्र,अजय मिश्र, यज्ञ समिति के अध्यक्ष मुरारी लाल गुप्ता, निकेत दीक्षित, यज्ञदत्त मिश्र,संजय मिश्रा,कक्के मिश्र,धीरु, कान्हा गुप्ता,कमलेश राजपूत आदि लोग मौजूद रहे।

हवन कुंड में आहुतियां डालते श्रद्धालु। ● अमृत विचार

न्यूज ब्रीफ

दिव्यांग के खोखे में लगाई आग

पीलीभीत, अमृत विचार : देर रात एक दिव्यांग के खोखे में आग लगा दी गई। घटना बुधवार रात को न्यूरिया थाना क्षेत्र के ग्राम सेमपुर में हुई। यहां के निवासी चोखेलाल पान सिगरेट का खोखा चलाते है। वह दिव्यांग है। उनके खोखे में आग लगा दी गई। जिसमें काफी सामान जल गया। गुरुवार को उसकी शिकायत थाना पुलिस से की गई। एसओ सुभाष मावी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। पीड़ित की मदद कराई जाएगी।

ध्वस्तीकरण कार्रवाई एक सप्ताह बाद थमी

बरेली, अमृत विचार : सूफी टोला में गुड लाइफ मैरिज हॉल और एवान-ए-फरहत बरातघर पर दो दिन से चल रही ध्वस्तीकरण की कार्रवाई पर गुरुवार को रोक दी गई। एवान-ए-फरहत के संचालकों की याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने सात दिन याचिकाकर्ताओं को अंतरिम सुरक्षा प्रदान करते हुए 10 दिसंबर तक यथास्थिति बनाए रखने के निर्देश बरेली विकास प्राधिकरण को दिए। इसके साथ ही गुड मैरिज हॉल से सटे मकानों के मालिकों के आग्रह पर दोनों जगह ध्वस्तीकरण की कार्रवाई सात दिन के लिए रोक दी गई। सूफी टोला में अवैध निर्माण के रूप में चिह्नित गुड लाइफ मैरिज हॉल और एवान-ए-फरहत बरातघर के ध्वस्तीकरण के लिए बरेली विकास प्राधिकरण की टीम मंगलवार से कार्रवाई कर रही है।

कन्हैया गुलाटी पर धोखाधड़ी के दो और मुकदमे दर्ज

खुशबू एन्क्लेव के निवासी से निवेश के नाम पर ठगे आठ लाख

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- पवन विहार के अमित से 12 लाख ठगे, दोनों मुकदमे बारादरी थाने में दर्ज

अमृत विचार : कन्हैया गुलाटी के खिलाफ लाखों रुपये की धोखाधड़ी के दो मामले और दर्ज हुए हैं। दोनों ही मामलों की शिकायत साइबर सेल में हुई थी। इन्वेस्टमेंट कराने के नाम पर लाखों रुपये के ठगी के दोनों मामले बारादरी थाने में दर्ज हुए हैं। बारादरी पुलिस ने दोनों मामलों में जांच शुरू कर दी है।

बारादरी थाना क्षेत्र के खुशबू एन्क्लेव निवासी मोहम्मद वासित मलिक ने साइबर सेल को दिए शिकायती पत्र में बताया कि उनके साथ करीब आठ लाख रुपये की ऑनलाइन धोखाधड़ी की गई है। वासित मलिक के अनुसार, आरोपी कन्हैया गुलाटी ने भरोसे में लेकर आठ लाख रुपये का ऑनलाइन आरटीजीएस ट्रांजेक्शन करा लिए। निर्धारित के समय बाद जब पैसा वापस मांगा तो वह टालमटोल करने लगा। इससे जुड़े सभी साक्ष्य, जैसे आरटीजीएस ट्रांजेक्शन के स्क्रीनशॉट, बैंक विवरण, मोबाइल चैट और कॉल रिकॉर्ड आदि साइबर सेल को उपलब्ध कराए हैं। इसके आधार पर आरोपी के खिलाफ बारादरी थाने में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

उधर, दूसरा मुकदमा पवन विहार कालोनी निवासी अमित कुमार ने 12 लाख की ठगी का लिखाया है। आरोप है कि कन्हैया गुलाटी ने 12 लाख आरटीजीएस कराकर रकम हड़प ली। ट्रांजेक्शन की पूरी डिटेल साइबर सेल को दी गई है। दोनों मामलों में एफआईआर दर्ज कर बारादरी पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

हत्या के मामले में जेल में बंद बुजुर्ग की इलाज के दौरान मौत

बरेली, अमृत विचार : हत्या के मामले में छह साल से जिला जेल में सजा काट रहे बुजुर्ग की इलाज के दौरान मौत हो गई। परिजनों ने जेल प्रशासन पर समय से इलाज न कराने का आरोप लगाया है। फतेहगंज पश्चिमी के गांव सहसा निवासी जमुना प्रसाद (71) हत्या के मामले में जेल में सजा काट रहे थे। एक महीने से उनकी तबीयत खराब चल रही थी। जिसके चलते उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बुधवार देर रात इलाज के दौरान उनकी सांसें थम गईं। इसकी सूचना जेल प्रशासन ने उनके परिजनों को दी। बुजुर्ग की पत्नी शिव देवी का रो-रोकर बुरा हाल है। मृतक के दो बेटे और एक बेटी है। जेल जाने से पहले जमुना प्रसाद सिलाई का काम करते थे।

नो एंट्री में ट्रक घुसाया, टीएसआई समेत चार पुलिस कर्मी निलंबित

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- एसएसपी ने दो होमगार्ड व दो पीआरडी जवानों के खिलाफ भी कार्रवाई को लिखा पत्र
- स्टेडियम रोड पर बुधवार नो एंट्री में ट्रक की चपेट में आने से गई थी महिला की जान

अमृत विचार : डेलापीर चौराहे पर बुधवार दोपहर नो एंट्री में घुसे बेकाबू ट्रक की टक्कर से स्कूटी सवार महिला सुनीता की मौत मामले में गुरुवार को एसएसपी अनुराग आर्य ने टीएसआई समेत चार पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया है। इसमें एक महिला हेड कांस्टेबल भी शामिल है। वहीं होमगार्ड के दो और पीआरडी के दो जवानों के खिलाफ कार्रवाई के लिए पत्र लिखा है। सभी के खिलाफ विभागीय जांच के भी निर्देश दिए गए हैं।

स्टेडियम रोड पर ट्रक ने स्कूटी सवार दंपती को चपेट में ले लिया था। हादसे में महिला सुनीता की मौके पर मौत हो गई थी और उनके पति मुकेश घायल हो गए थे। ट्रक नो इंट्री के दौरान डेलापीर की तरफ से घटनास्थल तक पहुंचा था। चालक ने पूछताछ में बताया था कि सौ रुपये लेकर पुलिस कर्मियों ने ट्रक को नो एंट्री जोन में जाने दिया था।

इधर, दुर्घटना के बाद आक्रोशित भीड़ ने चौराहे पर तैनात ट्रैफिक पुलिस कर्मियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा कर सख्त कार्रवाई की मांग की थी। इसी क्रम में गुरुवार को एसएसपी अनुराग आर्य ने मामले का संज्ञान लेते हुए एसपी ट्रैफिक अकमल खान की रिपोर्ट के आधार पर ड्यूटी में लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ कार्रवाई की। इसमें टीएसआई सतनाम सिंह, मुख्य आरक्षी सोनू कुमार, महिला मुख्य आरक्षी अंजू रानी, आरक्षी सौरभ को निलंबित कर दिया गया। इसके अलावा दो होमगार्ड प्रभु दयाल व रामरतन एवं दो पीआरडी जवान मान सिंह व धर्मपाल के खिलाफ विभागीय कार्रवाई के लिए जिला कमांडेंट होमगार्ड एवं जिला युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी को पत्र लिखा गया है।

बेंगलुरू-बरेली फ्लाइट पौने दो घंटे लेट

बरेली, अमृत विचार : देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो कई दिनों से फ्लाइट के परिचालन को लेकर संकट में चल रही है। इसका असर बरेली-बेंगलुरू और मुंबई उड़ानों पर भी पड़ रहा है। गुरुवार को बेंगलुरू-बरेली फ्लाइट करीब पौने दो घंटे देरी से यहां एयरपोर्ट पर पहुंची। इतनी ही देरी से बरेली से भी बेंगलुरू के लिए रवाना हुई।

कफ सिरप का अच्छा विकल्प है धनिया और सोंठ का पानी

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- बीमारी में चिकित्सक घरेलू नुस्खे अपनाने की दे रहे सलाह

अमृत विचार : बीते दिनों एक बच्चे की कोडीन युक्त कफ सिरप से मौत के बाद लोगों में इस सिरप को लेकर डर बढ़ गया है। चिकित्सकों ने भी अब कोडीन युक्त कफ सिरप लेने की सलाह बेहद कम देना शुरू कर दिया है।

इस वजह से लोगों ने आयुर्वेदिक और घरेलू नुस्खों को अपनाना शुरू कर दिया है। खासकर सर्दी-खांसी-जुकाम के मौसम में लोग जड़ी-बूटियों व प्राकृतिक उपचार को प्राथमिकता दे रहे हैं ताकि स्वास्थ्य सुरक्षित रहे और दुष्प्रभावों से बचा जा सके।जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. अमरदीप ने बताया कि सर्दी, जुकाम और खांसी की समस्या में सितोपलादि चूर्ण बेहद प्रभावी रहता है। सूखी खांसी में इसे घी और शहद के साथ मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने पर लाभ होता है। इसके अलावा ठंड से बचाव और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आयुर्वेद ने सोंठ और धनिया के पानी को बहुत लाभदायक माना है। घर पर आधा चम्मच सोंठ और एक चम्मच धनिया पानी में उबालकर पीने से पाचन ठीक रहता है और इम्युनिटी मजबूत होती है। इससे शरीर के अंदर संक्रमण से लड़ने की क्षमता बढ़ती है (

संस्कृति पर हुए अनेक प्रहार, पर सनातन अडिग:रामभद्राचार्य

कार्यालय संवाददाता, संभल

कथा के दौरान आरती में शामिल कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य व अन्य अतिथि।

अमृत विचार: संभल के ऐंचोड़ा कंबोह स्थित कल्कि धाम में चल रही विश्व की पहली कल्कि पुराण कथा के चौथे दिन जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत को नष्ट करने के अनेक प्रयास इतिहास में हुए, लेकिन सनातन धर्म आज भी अडिग खड़ा है और आगे भी अडिग रहेगा।

स्वामी रामभद्राचार्य ने नालंदा विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि जब राक्षसी विचारधारा वाले आक्रमणकारियों ने नालंदा के विशाल पुस्तकालय में आग लगाई, तो वह आग छह महीने तक जलती रही। इस आग में अनगिनत प्राचीन धर्मग्रंथ भस्म हो गए, जिनमें से कई अब कभी नहीं मिल सकते। उन्होंने कहा कि कल्कि पुराण के अनेक श्लोक भी समय के साथ लुप्त हो गए थे, जिन्हें ब्राह्मणों ने स्मृति से पुनः लिखा और आज 35 अध्यायों का कल्कि पुराण उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि कल्कि धाम के लोकार्पण के अवसर पर वह कल्कि पुराण का पूर्णतः शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत करेंगे, ताकि भावी पीढ़ियों को शास्त्रों का वास्तविक ज्ञान मिल सके।

दबंगों ने नशे में महिला से की अभद्रता

बरेली, अमृत विचार : नशे में दबंगों ने बुधवार रात शहर के मोहल्ला गंगापुर में महिला से अभद्रता की। विरोध करने पर आरोपियों महिला के पति और देवरों पर हमला कर दिया। हमलावरों ने लाठी-डंडों से पिटाई करने के साथ हवाई फायरिंग भी की। जिसकी वीडियो पीड़िता ने पुलिस को सौंपी है। पुलिस ने मामले में आठ लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

पीड़िता शिवानी के मुताबिक बुधवार रात वह घर के बाहर पति का इंतजार कर रही थी। आरोप है कि तभी मोहल्ले के नितिन, समीर और रितिक, जो शराब के नशे में थे, वहां से निकल रहे थे। आरोप है कि तीनों ने उनके साथ अभद्रता करनी शुरू कर दी। विरोध करने पर मारपीट पर उतारू हो गए।

फार्म सं. INC-26

(कंपनी (निगमन) नियम, 2014 के नियम 30 के अनुसार)
कंपनी के पंजीकृत कार्यालय को एक राज्य से दूसरे राज्य में बदलने के लिए समाचार पत्र हेतु विज्ञापन प्रकाशित

केंद्र सरकार– उत्तरी क्षेत्र पीठ, दिल्ली के समक्ष
कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 13(4) और कंपनी (निगमन) नियम, 2014 के नियम 30(5)(ए) के मामले में
और

वर्ल्डवाइड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (ओपीसी) प्राइवेट लिमिटेड जिसका पंजीकृत कार्यालय 167 बुखारपुरा, ओल्ड सिटी, बरेली, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत, 243005 के मामले में – याचिकाकर्ता

एतद्द्वारा जनसामान्य को सूचित किया जाता है कि कम्पनी ने कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 13 के तहत कम्पनी के मेमोरेंडम ऑफ एसोसिएशन में परिवर्तन लाने हेतु पुष्टिकरण के लिए केंद्र सरकार को आवेदन प्रस्तुत करने का प्रस्ताव किया है, यह विशेष प्रस्ताव असाधारण आम बैठक में कम्पनी को सक्षम करने हेतु 04 दिसम्बर 2025 को आयोजित बैठक में कम्पनी के पंजीकृत कार्यालय को "उत्तर प्रदेश राज्य" से "हरियाणा राज्य" में बदलने हेतु पारित किया गया।

कोई भी व्यक्ति जिसका हित कंपनी के पंजीकृत कार्यालय के प्रस्तावित परिवर्तन से प्रभावित होने की संभावना है, वह निवेशक शिकायत प्रपत्र भरकर एमसीए–21 पोर्टल (www.mca.gov.in) पर जमा कर सकता है या जमा करवा सकता है या पंजीकृत डाक द्वारा अपने हित की प्रकृति और विरोध के आधार बताते हुए एक हलफनामे के साथ अपनी आपत्तियों को क्षेत्रीय निदेशक, उत्तरी क्षेत्र, बी–2 विंग, द्वितीय तल, पर्यावरण भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली–110003 को पंजीकृत डाक द्वारा प्रेषित करें तथा इसकी एक कॉपी आवेदक कम्पनी को इसके नीचे वर्णित पंजीकृत कार्यालय पर इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से चौदह दिनों के भीतर भेज दे:

तीसरी मंजिल, ऑर्किड सेंटर, सेक्टर 53, गोल्फ कोर्स रोड, गाँव हैडनपर विरान, डीएलएफ क्यूई, गुड़गांव, हरियाणा – 122002

167 बुखारपुरा, ओल्ड सिटी, बरेली, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत, 243005
हस्ताक्षरकर्ता/–
कृते और आवेदक की ओर से
वर्ल्डवाइड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (ओपीसी) प्राइवेट लिमिटेड
हस्ता/–
गौरव गोले
निदेशक
डीआईएन: 09279390

दिनांक: 05.12.2025
स्थान: बरेली

महात्मा बुद्ध लोक कल्याण एवं ग्राम्य विकास संस्थान
निघासन, लखीमपुर खीरी — अल्पसंख्यक संस्थान

डी.एल.एड.(बी०टी०सी०) — कालेज कोड–340003

1.	ऑनलाइन पंजीकरण प्रारम्भ होने की तिथि	24.11.2025
2.	ऑनलाइन पंजीकरण की अंतिम तिथि	15.12.2025
3.	ऑनलाइन आवेदन शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि	16.12.2025
4.	पूर्ण आवेदन के प्रिंट आउट लेने की अंतिम तिथि	18.12.2025

ऑनलाइन माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम से आवेदन स्वीकार्य एवं विचारणीय नहीं होगें।

प्रवेश हेतु संपर्क करें मो0– 8090079814, 8299368431
वेबसाइट– mblkgs.in पर Registration करें। नोट– आरक्षित अभ्यार्थियों हेतु विशेष छूट

कार्यालय जिला पंचायत बदायूं

पत्रांक: 1128/जि.पं./नि.अनु./2025–26 — **सार्वजनिक सूचना** — दिनांक 04.12.2025

उ.प्र. शासन के आदेश सं. 05/2019/2902/33–2–2019–198 जी/2018 दिनांक 16 अगस्त 2019 व शासनादेश सं. 1129/33–2–2020–167जी/2018 दिनांक 03 जून 2020 में दी गई व्यवस्था के अधीन समस्त जिला पंचायत में पंजीकृत ठेकेदारों, लो.नि.वि. एवं सिंचाई विभाग के पंजीकृत ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि पंचम राज्य वित्त आयोग, 15 वां वित्त आयोग (टाइड/अनटाइड) अन्तर्गत प्राप्त धनराशि के सापेक्ष स्वीकृत 28 कार्यो की सामान्य निविदायें दिनांक 19.12.2025 को दोपहर 12:00 बजे तक बन्द लिफाफे में आमंत्रित की जाती है जो इसी दिनांक 19.12.2025 की दोपहर 02:00 बजे से कार्यालय जिला पंचायत बदायूं में खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र किसी भी कार्य दिवस में दिनांक 19.12.2025 समय 11:00 बजे तक कार्यालय जिला पंचायत से प्राप्त कर सकते हैं। निविदा शुल्क की धनराशि फार्म–5, आर.टी.जी.एस. (RTGS)/एन.ई.एफ.टी. (NEFT) के माध्यम से जिला निधि के खाता सं. 09830100009167 आई.एफ.एस.सी. कोड BARB0BADAUN में जमा करना अनिवार्य होगा और जमा निविदा शुल्क की यूनिक नम्बर रसीद व 10% (दस प्रतिशत) धरोहर (जमानत) धनराशि की एफ.डी.आर. जो अपर मुख्य अधिकारी के पद नाम से बंधक हो के साथ–साथ जी.एस.टी. पंजीकरण प्रमाण पत्र, आयकर व ठेकेदारी का नवीनीकरण/पंजीकरण प्रमाण पत्र को स्कैन कर निविदा प्रपत्र के साथ लगाना अनिवार्य है। किसी भी निविदा पर बिना कारण बताये स्वीकृत/अस्वीकृत/निरस्त करने का अधिकार सक्षम प्राधिकारी/अध्यक्ष जिला पंचायत में निहित होगा। सशर्त प्राप्त निविदा तथा नियत तिथि व समय उपरान्त कोई भी वाद व प्रार्थना पत्र स्वीकार्य नहीं होगा। निविदा सम्बन्धी अन्य समस्त जानकारी BUDAUN.NIC.IN पर भी देखा जा सकता है। निविदा सम्बन्धी अन्य कोई जानकारी किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय आकर प्राप्त की जा सकती है। विवरण निम्न प्रकार है:–

क्र.	क्षेत्र पंचायत का नाम	कार्य का नाम	अनु. धनराशि (रू. में)	धरोहर धनराशि	निविदा मूल्य GST सहित	कार्य पूर्ण करने की अवधि
		पंचम राज्य वित्त				
1.	दातागंज	ग्राम पंचायत बिहारीपुर में ब्लाक दातागंज में सोनपाल धोबी के घर से कब्रिस्तान तक सी.सी. कार्य।	842405	84250	1200	60 दिन
		15 वां वित्त आयोग अनटाइड				
2.	आसफपुर	ग्राम सिसरका में तालेवर आसफपुर दिवाकर के घर से आसफपुर चंदौसी मार्ग तक मि.खं	759026	75950	1200	60 दिन
3.	जगत	ग्राम पंचायत थल्लिया नगला में जू.हा. सकूल से कब्रिस्तान तक मि.खं.	452548	45300	1200	60 दिन
		15 वां वित्त आयोग टाइड				
4.	जगत	ग्राम मरमई में कलेक्टर सिंह यादव के मकान से नहर तक नाला निर्माण कार्य।	246151	24650	1200	60 दिन
5.	जगत	ग्राम मरमई में देवी मंदिर से तालाब तक नाला निर्माण कार्य।	402190	40250	1200	60 दिन
6.	इस्लामनगर	ग्राम नगला बारहा में रविन्द्र कुमार के मकान से नाले तक नाला निर्माण कार्य।	541294	54150	1200	60 दिन
7.	समरेर	ग्राम लहडेरी में हरिपाल सिंह के घर से दौरी तक नाला निर्माण कार्य।	637608	63800	1200	60 दिन
8.	उझानी	ग्राम वरामयखेड़ा में प्रजापति समाज से पुलिया तक नाला निर्माण कार्य।	583554	58400	1200	60 दिन
9.	उझानी	ग्राम भडकुईया में ओमकार के खेत से नदी पुल तक नाला निर्माण कार्य।	774650	77500	1200	60 दिन
10.	जगत	ग्राम खेड़ा बुजुर्ग में मंदिर से नदी तक नाला निर्माण।	399983	40000	1200	60 दिन
11.	जगत	ग्राम गभियाई नगला में दुर्जन सिंह के घर से तालाब तक नाला निर्माण कार्य।	404397	40450	1200	60 दिन
12.	उझानी	ग्राम अल्लीपुर मडईया में कल्लू मौर्य के घर से कमरा नदी तक नाला निर्माण कार्य।	578540	57900	1200	60 दिन
13.	उझानी	ग्राम कुलुआ देहर में खेम करन के घर से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	509910	51000	1200	60 दिन
14.	वजीरगंज	ग्राम कतगांव अम्बेडकर पार्क से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	301352	30150	1200	60 दिन
15.	उझानी	ग्राम रौली में सचिवालय से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	799036	79950	1200	60 दिन
16.	अम्बियापुर	ग्राम बैरामई में पंचायत घर से स्कूल तालाब तक नाला निर्माण कार्य	323755	32400	1200	60 दिन
17.	अम्बियापुर	ग्राम बैरामई में प्रा.वि. से ग्राम समाज इण्टर कॉलेज में पास नाला निर्माण कार्य	236691	23700	1200	60 दिन
18.	सहसवान	ग्राम गंगापुर में रमेश के मकान के कोने से सामुदायिक शौचालय तक नाला निर्माण कार्य	698349	69850	1200	60 दिन
19.	जगत	ग्राम गुरूगांव में दीनदयाल यादव के मकान से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	799092	79950	1200	60 दिन
20.	जगत	ग्राम पासतोर मुकेश के घर से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	210099	21050	1200	60 दिन
21.	सलारपुर	बगुलीनगर भजरा से ग्राम राफियाबाद रोड पर अवशेष नाला निर्माण कार्य	481169	48150	1200	60 दिन
22.	उझानी	ग्राम पंचायत बसावनपुर में महेन्द्र पाल के घेर से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	499306	49950	1200	60 दिन
23.	म्याऊ	ग्राम पंचायत जमालपुर के मझरा जिन्दी नगला में महेन्द्र के खेत से उत्तरपाल कश्यप के खेत तक नाला निर्माण कार्य	784035	78450	1200	60 दिन
24.	बिसौली	ग्राम करखेड़ी में परसिया पंपगांव मार्ग से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	489903	49000	1200	60 दिन
25.	कादरचौक	ग्राम पसेई में सोमवीर यादव के मकान से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	845397	84550	1200	60 दिन
26.	उझानी	ग्राम अब्दुल्लागंज तालाब के पास सुनील सिंह के घर से पुलिया के पास समेन्द्र सिंह के घर तक नाला निर्माण कार्य।	297326	29750	1200	60 दिन
27.	उझानी	ग्राम ज्योपारवाला बजार में पुराने नाले से धूविया तालाब तक नाला निर्माण कार्य।	775715	77600	1200	60 दिन
28.	जगत	ग्राम जगत में सी.सी/रामसिंह के मकान से पुलिया तक नाला निर्माण कार्य।	402190	40250	1200	60 दिन

नोट:– (1) जिला पंचायत के पंजीकृत ठेकेदारों लो.नि.वि. एवं सिंचाई विभागों में पंजीकृत ठेकेदारों द्वारा प्रस्तुत प्रपत्र 1,2 व 3 प्रमुख सचिव पंचायतीराज अनु.–2 के पत्रांक 819/33–2–2007–100 जी/2006 दिनांक 10 अप्रैल 2007 के अनुसार वैध होना अनिवार्य है।
2. कार्यो के अनुबन्ध आदि की कार्यवाही सक्षम स्तर से स्वीकृति प्राप्त होने के उपरान्त एवं धनराशि की उपलब्धतानुसार ही किया जायेगा।
3. निर्माण कार्यो में जी.एस.टी. का भुगतान पृथक से देय होगा। जो कार्यो के प्राक्कलन में पृथक से नियमानुसार लगायी गयी है।

पवन कुमार गोयल, अभियन्ता, जिला पंचायत, बदायूं — दिनेश प्रताप सिंह, अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत, बदायूं — वर्षा सिंह, अध्यक्ष, जिला पंचायत, बदायूं

धनराशि मिली फिर भी अभिभावकों ने नहीं खरीदे स्वेटर

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- बिना स्वेटर के विद्यालय में पढ़ने आ रहे बच्चे, बोले जल्दी लेंगे स्वेटर
- शिक्षक बोले पैरेंट्स मीटिंग में अभिभावकों को किया जा रहा जागरूक

अमृत विचार : परिषदीय विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए यूनिफार्म, जूता- मोजा, बैग खरीदने के लिए डीबीटी के माध्यम से अभिभावकों के बैंक खाते में धनराशि भेजी जा चुकी है, मगर स्कूलों में तमाम छात्र-छात्राएं बिना स्वेटर, जूता- मोजा के पहुंच रहे हैं। कुछ विद्यार्थियों ने बताया कि उनके पास पिछले साल का स्वेटर है, कुछ ने बताया कि अभी स्वेटर लिया नहीं गया है। शिक्षकों ने बताया कि मीटिंग में कुछ अभिभावक जारी की गई धनराशि खर्च होने की बात कहकर जल्द स्वेटर खरीदने की बात कहते हैं।

नगर क्षेत्र के कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय बालजती में गुरुवार को मध्याह्न भोजन के दौरान बच्चे स्कूल परिसर में खेल रहे थे। कुछ छात्राएं स्वेटर न पहने होने के कारण धूप में बैठी थीं। विद्यालय में 50 प्रतिशत बच्चे बिना स्वेटर के आए थे। विद्यालय में एसआईआर का काम भी चल रहा था। प्रधानाचार्य एसआईआर में सुपरवाइजर का काम कर रहे हैं। सहायक अध्यापिका जुबिया खान ने बताया कि विद्यालय में 256 बच्चे पंजीकृत हैं। जिसमें से 247 बच्चों के अभिभावकों के खातों में डीबीटी के माध्यम से यूनिफार्म की धनराशि जारी हो चुकी है। पैरेंट्स मीटिंग में अभिभावकों से स्वेटर खरीदने को बोला गया है, कुछ अभिभावकों ने जल्दी ही स्वेटर खरीदने की बात कही है।

प्राथमिक विद्यालय गौंटिया खुर्रम में शिक्षिका तब्बसुम बच्चों को स्मार्ट क्लास में पढ़ा रही थीं। विद्यालय में 45 बच्चे पंजीकृत हैं। जिसमें से 43 बच्चों की डीबीटी के माध्यम से राशि जारी हो चुकी है। इसके बाद भी विद्यालय में 40 प्रतिशत बच्चों पर स्वेटर और जूते नहीं थे। शिक्षिका ने बताया कि इस महीने की पैरेंट्स मीटिंग में दोबारा अभिभावकों स्वेटर खरीदने के लिए बोला जाएगा।

कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय बुखारा में कक्षा छह और आठ के कुछ बच्चे पुरानी यूनिफार्म पहने हुए थे। स्वेटर न होने पर उन्होंने बताया कि स्वेटर छोटा हो गया है। पापा से बोलकर नया लिया जाएगा। विद्यालय में करीब 35 प्रतिशत बच्चे बिना स्वेटर के कक्षा में बैठे थे। कुछ बच्चे बिना यूनिफार्म के ही आए थे। प्रधानाध्यापिका उर्मिला ने बताया कि विद्यालय में 262 बच्चे पंजीकृत हैं। जिसमें से 164 बच्चों की यूनिफार्म की राशि जारी हुई थी है। बताया कि अगर पैरेंट्स मीटिंग में ड्रेस पहनकर आने पर ज्यादा कहने पर अभिभावक बच्चों को स्कूल भेजना बंद कर देते हैं, इसलिए उनसे ज्यादा नहीं कहा जाता है।

> यूनिफार्म व स्वेटर की धनराशि सीधे अभिभावकों के खातों में जाती है। विद्यालय के प्रधानाध्यापकों से कहा गया है कि वे पैरेंट्स मीटिंग में अभिभावकों को यूनीफार्म आदि खरीदने के लिए जागरूक करें।
> – डा. विनीता, बीएसए

किशोरी के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज

टांडा, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक ने कोतवाली में तहरीर देकर कहा कि वह रविवार को अपने माता-पिता के साथ किसी काम से बाहर गया था। घर पर उसकी बहन अकेली थी। जब वह वापस आया तो उसकी बहन घर पर नहीं थी।

नगर निगम ने शुरू की श्रमिकों की जांच

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- मुख्यमंत्री के आदेश के बाद बांग्लादेशी व रोहिंग्या प्रवासियों के सत्यापन प्रक्रिया की तेज

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आदेश के अनुपालन में नगर निगम ने बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों के सत्यापन की प्रक्रिया आरंभ कर दी है। नगर निगम के अधीन कार्य कर रहे ठेकेदारों के श्रमिकों का व्यापक सत्यापन कराया जा रहा है।

नगर आयुक्त के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने ठेकेदारों, कार्यदायी एजेंसियों और उनकी फर्मों का विस्तृत डेटा तैयार करना शुरू कर दिया है। कौन-सा ठेकेदार कितने मजदूरों को काम पर लगाए हुए है, उनकी पहचान क्या है और वे कहां से आए हैं, इन सभी बिंदुओं का रिकॉर्ड अनिवार्य किया गया है।

इसके साथ ही डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन में लगे कामगारों की सूचीकरण प्रक्रिया भी जारी है। निगम का फोकस विशेष रूप से उन श्रमिकों पर है जिनकी पहचान संदिग्ध या अधूरी पाई जा रही है। ऐसे मजदूर जिनकी डॉक्यूमेंटेशन संदिग्ध लग रही है उनके सत्यापन के लिए विशेष टीमें गठित की गई हैं। टीमें फील्ड में जाकर एक-एक व्यक्ति के बारे में जानकारी जुटा रही हैं। ताकि उनकी पहचान करके उनके देश वापस भेजा जा सके।

> शासन के निर्देश पर ठेकेदार और संस्थाओं में काम करने वाले श्रमिकों की सूची तैयार करने के निर्देश दिए हैं। अधिकारियों की टीमें बना दी गई हैं। सभी श्रमिकों का सत्यापन कराया जा रहा है।–
> –संजीव कुमार मौर्य, नगर आयुक्त

सम्मन मुद्दालय
व अदालत श्रीमान् उपजिलाधिकारी आंवला जिला बरेली
वाद संख्या टी–202512130207143 सन् 2025
शिवम आदि बनाम जानकी आदि

1. जानकी देवी पत्नी प्रेमशंकर 2. सुरेश चन्द्र पुत्र कल्यानदास 3. विनोद शर्मा पुत्र ओमप्रकाश शर्मा 4. चन्द्रप्रकाश पुत्र प्रेमशंकर 5. नन्दकुमार पुत्र धर्मपाल 6. बाबूराम पुत्र धर्मपाल 7. वेदप्रकाश पुत्र धर्मपाल 8. नरेशपाल पुत्र मलखान 9. गौरव पुत्र नन्दकिशोर 10. सौरभ पुत्र नन्दकिशोर 11. सरला पत्नी नन्दकिशोर समस्त निवासीगण मो. बागवख्शी कस्बा व तहसील आंवला जिला बरेली 12. वीरवती पत्नी भगवानदास 13. कान्तादेवी पत्नी सत्यपाल 14. आरती पत्नी चन्द्रराज 15. केतकी पत्नी महीपाल 16. रामचन्द्र पुत्र इन्द्र 17. प्रेमपाल पुत्र रामचरन 18. सूरजपाल पुत्र रामचरन 19. रूमसिंह पुत्र रामचरन 20. नोनीराम पुत्र कढ़ेराम 21. ब्रजपाल पुत्र कढ़ेराम 22. शंकरलाल पुत्र कढ़ेराम 23. आशादेवी पत्नी ब्रजपाल 24. गुड्डू पुत्र महेन्द्रपाल 25. रामदेवी पत्नी हरपाल समस्त निवासीगण ग्राम अलीनगर तहसील आंवला जिला बरेली 26. ग्राम प्रधान ग्राम अलीनगर तहसील आंवला जिला बरेली

चूंकि मुसम्मी अशोक पुत्र लालाराम वादी निवासी मो. वागवख्शी कस्वा तहसील आंवला जिला बरेली हाल निवासी सी 01/599 गली नं. 3 सोनिया विहार पुराना करावल नगर दिल्ली ने आपके नाम एक नालिस वास्ते 24 उ.प्र. राजस्व संहिता 2006 के दायर की है लिहाजा आपको हुक्म दिया जाता है कि आप तारीख 08.12.2025 को अदालत या मारफत किसी वकील के जो मुकदमा हाजा से वखूवी वाकिफ हो और जो मुकदमा हाजा की जवाबदेही कर सके मय कागजात मुतलका के हाजिर हो वरना आपकी गैर हाजिरी मुकदमा हाजा फैसला होगा। अत: आप तारीख 01.12.2025 मेरे दस्तखत व मोहर अदालत से जारी किया गया।

उपजिलाधिकारी
आंवला जिला बरेली

ऑनलाइन हाजिरी के विरोध में प्रदर्शन

बरेली, अमृत विचार : ऑनलाइन हाजिरी के विरोध में ग्राम पंचायत सचिवों का चौथे दिन गुरुवार को भी ब्लाकों पर धरना-प्रदर्शन जारी रहा।

शुक्रवार से सभी सचिव सरकारी वाट्सएप ग्रुप से लेफ्ट होकर प्रदर्शन करेंगे। संगठन के प्रांतीय आह्वान पर जिले की सभी ग्राम पंचायतों में सचिव सोमवार से काली पट्टी बांधकर ऑनलाइन उपस्थिति और गैर-विभागीय कार्यों का विरोध कर रहे हैं। संघ के जिलाध्यक्ष जितेंद्र गंगवार ने बताया कि सरकार उनकी ऑनलाइन हाजिरी लगाने के लिए दबाव बना रही है।

बुलडोजर कार्रवाई से जल निकासी व्यवस्था ध्वस्त

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- आजादी से पहले बना भवन, मलबे में निकली पुरानी ईंट दिखाई

अमृत विचार : बरेली विकास प्राधिकरण की सूफी टोला में दो बरातघरों पर दो दिन से जारी कार्रवाई पर सुप्रीम कोर्ट के स्टे के बाद एवान ए फरहत बरातघर के मालिक सरफराज वली खां का गुरुवार को दर्द छलक हुई।

मीडिया के सामने अपनी पीड़ा बयां करते हुए कहा कि ये बुलडोजर बरातघर पर नहीं मेरे सीने पर चला है। इस दौरान उनके परिवार के अन्य लोग भी मौजूद रहे।बरातघर के संचालक पक्ष के अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट का स्टे आर्डर लेकर जब मौके पर पहुंचे, उसके कुछ देर बाद ही एवान ए फरहत के मालिक सरफराज वली खां भी मौके पर आ गए। बरातघर के मलबे से ईंट उठाकर बोले कि ये देखें इस पर वर्ष 1942 की तिथि पड़ी हुई। इसकी नींव गवाही दे रही है कि इसका निर्माण देश की आजादी से पहले हुआ था। बीडीए अफसरों को तमाम दस्तावेज भी दिखाए, लेकिन बरातघर तोड़ दिया गया।

न्यूज ब्रीफ

दो औषधि निरीक्षकों को मिला प्रशस्ति पत्र

अमृत विचार, लखनऊ : खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग, उत्तर प्रदेश (एफएसडीए) द्वारा नारकोटिक्स दवाओं के अवैध व्यापार, उनके डायवर्जन तथा नशे के रूप में दुरुपयोग को रोकने हेतु एक माह का विशेष राज्यव्यापी अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान विभिन्न राज्यों की फर्मा से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर जिला स्तर पर छापेमारी, निरीक्षण एवं प्रवर्तन की प्रभावी कार्रवाई की गई। इस सफल अभियान के लिए मुख्यालय से नियुक्त दो ड्रग इंस्पेक्टर वैभव बब्बर एवं सीमा सिंह को सम्मानित करते हुए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन आयुक्त डॉ .रोशन जैकेब ने गुरुवार को बताया कि नारकोटिक्स ब्यूरो ग्वालियर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और रांची समेत विभिन्न राज्यों की फर्मों से प्राप्त सूचनाओं को विभाग ने संगठित रूप से संकलित किया तथा उनका गहन विश्लेषण किया। इन सूचनाओं के आधार पर जिला स्तर पर छापेमारी, निरीक्षण एवं प्रवर्तन की कार्रवाई की है।

गन्ना पर्यवेक्षक पद की डीपीसी हो : अतुल

अमृत विचार, लखनऊ : गन्ना विभाग में बीते 36 वर्षों से गन्ना पर्यवेक्षक की पदोन्नति गन्ना विकास निरीक्षक के पद पर नहीं हुई है। विभाग में डीपीसी न होने की वजह से गन्ना पर्यवेक्षक बिना पदोन्नति सेवाएं दे रहे हैं। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद उप्र. के महामंत्री अतुल मिश्रा ने नाराजगी व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव उप्र. सरकार से मांग करते हुए कहा कि राज्य कर्मचारियों को उनका अधिकार मिलना चाहिए, पदोन्नति के लिए विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया जाए। संयुक्त परिषद के महामंत्री ने ज्ञापन के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी को अवगत कराया कि मुख्य सचिव द्वारा समस्त विभागों को कई बार निर्देशित किया जा चुका है कि कर्मचारियों की पदोन्नति समय पर की जाये। परन्तु गन्ना विभाग द्वारा शासनादेशों को अनदेखी कर पदोन्नति की प्रक्रिया को विगत कई वर्ष से लम्बित रखे हुये है।

भूजल सुधरा, किसानों का भविष्य सुरक्षित

अमृत विचार, लखनऊ : जालौन में योगी आदित्यनाथ सरकार की जल संरक्षण नीतियों ने बड़ा बदलाव लाया है। जिले में भूजल स्तर दो मीटर तक बढ़ा है, जिससे खेतों की सिंचाई आसान हुई और कृषि चक्र स्थिर हुआ। हजारों चेकडैम, तालाबों के पुनर्जीवन और फार्म पॉन्ड्स ने जल पुनर्भरण को मजबूत किया। कई ब्लॉकों में ट्यूबवेल पंपिंग के घंटे बढ़े हैं, जिससे सिंचाई लागत घटी है। जल उपलब्धता बढ़ने से फसल उत्पादन में तेज वृद्धि और पलायन में गिरावट दर्ज की गई है। जल पंचायतों और सामुदायिक प्रयासों से जालौन को राष्ट्रीय जल पुरस्कार भी मिला, जिसने इसे जल संरक्षण का मॉडल बना दिया।

पूर्वांचल विकास का नया केंद्र बनकर उभरा

अमृत विचार, लखनऊ : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में पूर्वांचल विकास का नया केंद्र बनकर उभरा है। वाराणसी और आसपास के जिलों में उद्योग, लॉजिस्टिक्स और पर्यटन क्षेत्र तेजी से विस्तार ले रहे हैं। वाराणसी में चल रही 48 औद्योगिक परियोजनाओं में 1,180 करोड़ का निवेश और भावी परियोजनाओं के लिए 5,700 करोड़ के प्रस्ताव से 15,000 से अधिक रोजगार सृजन की संभावना बनी है। सड़क, रेल और एयर कनेक्टिविटी से उद्योगों को लाभ मिला है। भंडारण क्षमता, एग्री-लॉजिस्टिक्स और औद्योगिक टाउनशिप परियोजनाओं ने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को नई मजबूती दी है। पूर्वांचल अब यूपी की वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी के प्रमुख स्तंभों में शामिल है।

रोजगार नीतियों से बदला आर्थिक परिदृश्य

अमृत विचार, लखनऊ : योगी सरकार की रोजगार नीतियों ने यूपी में बड़ी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की नींव रखी है। प्रदेश की बेरोजगारी दर 19 फीसदी से घटकर 2 .4 आ गई है, जो नीति आधारित विकास मॉडल की सफलता को दर्शाती है। एमएसएमई सेक्टर की 96 लाख इकाइयों ने 2 करोड़ से अधिक युवाओं को रोजगार दिया है। कौशल विकास मिशन से 14 लाख युवा प्रशिक्षित हुए, जिनमें से 5 .66 लाख को नौकरी मिली। रोजगार महाकुंभ, जीसीसी नीति 2025 और सरकारी प्रोत्साहन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ा है। महिला श्रम भागीदारी भी 25 फीसदी तक पहुंची है, जिससे परिवारों की आर्थिक स्थिति में बड़ा सुधार आया है।

सचिवालय सेवा के 8 अधिकारी बनेंगे विशेष सचिव, बढ़ेंगे पद

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उप्र.सचिवालय सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए बड़ा अवसर खुल गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विशेष सचिव के आठ नए पदों के सृजन को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही सचिवालय सेवा से विशेष सचिव बनने वाले अधिकारियों की कुल संख्या 35 से बढ़कर 43 हो गई है।

सूत्रों के मुताबिक, सचिवालय सेवा से विशेष सचिव बनने वाले अधिकारियों के आठ पद बढ़ाने का प्रस्ताव कैबिनेट से 6 मई को स्वीकृत हो गया था, लेकिन संबंधित आदेश जारी नहीं हो पा रहा था। बताते हैं कि शासन के एक उच्चाधिकारी ने इस फाइल को रोक रखा था। वह अधिकारी सचिवालय सेवा के दो संयुक्त सचिवों के सेवानिवृत्त हो जाने का इंतजार कर रहे थे। इनमें से एक अधिकारी 31 अक्टूबर को और दूसरे अधिकारी 30 नवंबर को सेवानिवृत्त हुए। इन दोनों के सेवानिवृत्त हो जाने के बाद पद बढ़ाए जाने की फाइल आगे बढ़ी। सचिवालय संघ के अध्यक्ष अर्जुन देव भारती ने मुख्यमंत्री योगी, मुख्य सचिव और संबंधित प्रमुख सचिव के प्रति आभार व्यक्त किया है। उनका कहना है कि इससे न केवल पदोन्नति के अवसर बढ़ेंगे, बल्कि अनुभवी अधिकारियों को नीति-निर्माण के उच्च स्तर पर कार्य करने का अधिक अवसर मिलेगा।

मानक पूरे न करने वाले मदरसे में पांच शिक्षकों की नियुक्ति

झांसी के मदरसे में फर्जीवाड़ा : पूर्व रजिस्ट्रार ने नियुक्ति को सही ठहराते हुए दे दी वित्तीय अनुमति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- तीन कमरों के मदरसे में तैनात हैं 24 शिक्षक, मान्यता रद होने के बाद भी नहीं पूरा हुआ मानक

अमृत विचार: झांसी के नगरीय क्षेत्र में जर्जर तीन कमरों में मदरसा कॉस्मोपॉलिटन कॉलेज, भट्टागांव संचालित हो रहा है। यह एक अनुदानित मदरसा है। जिसमें पहले से 24 अध्यापक तैनात हैं। जो सरकारी फंड से हर महीने मोटा वेतन उठा रहे हैं। हकीकत यह है कि मदरसे में बच्चों की संख्या न के बराबर है। इस मदरसे की मान्यता पहले मदरसा बोर्ड द्वारा निलंबित की गई थी। जिसे मानक पूरा करने की शर्त पर बहाल किया गया। समय सीमा 2016 में समाप्त हो गई। पर, आज तक मानक पूरे नहीं हो सके। मदरसे में नियुक्तियों पर रोक लगा दी गई थी। इसके बाद भी मदरसा बोर्ड के तत्कालीन रजिस्ट्रार और संप्रति मुरादाबाद मंडल के उपनिदेशक का कार्य देख रहे जगमोहन सिंह बिष्ट ने पांच नए शिक्षकों की नियुक्तियों का अनुमोदन और भुगतान की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में 22 जुलाई 2016 को नई मदरसा नियमावली लागू की थी। जिसमें भवन, कक्ष संख्या और छात्र-शिक्षक अनुपात के मानक सख्त कर दिये थे। 2017 में प्रदेश में भाजपा की सरकार आई। शासन ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिये कि अनुदानित मदरसों के मानक की जांच कराई जाए। आठ महीने में जांच रिपोर्ट आई। जिसमें 35 मदरसे मानकविहीन संचालित पाये गये। पर, स्थानीय अधिकारियों की मिलीभगत के कारण मदरसा कॉस्मोपॉलिटन कॉलेज भट्टागांव का नाम सूची में नहीं डाला गया।

अधिकारी ने दी थी मानकविहीन होने की रिपोर्ट

अमृत विचार : झांसी के तत्कालीन जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी ने 28 जुलाई 2021 को मदरसा बोर्ड के रजिस्ट्रार को लिखित रूप से रिपोर्ट दी थी कि मदरसा कॉस्मोपॉलिटन कॉलेज भट्टागांव मानक विहीन है। इसमें भविष्य में किसी भी नियुक्ति पर वित्तीय अनुमोदन न दिया जाए। इस रिपोर्ट को भी मदरसा बोर्ड के तत्कालीन रजिस्ट्रार ने नजरअंदाज कर दिया। मदरसे में गलत तरीके से पांच नए शिक्षकों की नियुक्तियों पर न केवल अनुमोदन प्रदान किया, बल्कि भुगतान की वित्तीय सहमति भी जारी कर दी। अनुमोदन देते समय न तो मदरसे के भवन व मानकों की जांच की गई। न ही छात्र-शिक्षक के अनुपात का परीक्षण किया गया। शिक्षकों की नियुक्ति व वित्तीय अनुमोदन मदरसा प्रबंधन, जिला स्तर के कुछ अधिकारियों की मिलीभगत से यह खेल किया गया। इस खेल में सरकारी धन का लाखों रुपये का दुरुपयोग किया गया।

खेलोगे तो खिलोगे, मुख्यमंत्री ने किया आह्वान

महंत अवेद्यनाथ महाराज सप्तम अखिल भारतीय प्राइजमनी पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/गोरखपुर

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के हर नौजवान से अपेक्षा की है कि वह किसी न किसी खेल से जुड़ें, क्योंकि 'खेलोगे तो खिलोगे' केवल नारा नहीं, बल्कि जीवन का सिद्धांत है। उन्होंने कहा कि कबड्डी जैसे खेल स्फूर्ति, टीम भावना और सामूहिक कार्य संस्कृति को बढ़ाते हैं। खेल, व्यक्ति को अनुशासन, त्वरित निर्णय क्षमता और आत्मविश्वास देता है।

क्षेत्रीय स्टेडियम में ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज सप्तम अखिल भारतीय प्राइजमनी पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता-2025 के विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत में प्राचीन काल से खेलों के प्रति जागरूकता रही है और पिछले 11 वर्षों में पीएम मोदी की प्रेरणा से खेल संस्कृति को नई दिशा मिली है। खेलो इंडिया, सांसद-विधायक खेल प्रतियोगिताएं और विभिन्न खेल मिशनों के कारण आज भारत ओलंपिक, एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ और विश्व चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है।

कबड्डी प्रतियोगिता की विजेता यूपी टीम को 2 लाख रुपये का चेक देते प्रदान कर पुरस्कृत करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, साथ में अन्य।

यूपी की टीम विजेता, पूर्वोत्तर रेलवे बना उपविजेता

अमृत विचार : ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज सप्तम अखिल भारतीय प्राइजमनी पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता-2025 में उत्तर प्रदेश की टीम ने खिताब जीता, जबकि पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर उपविजेता रही। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विजेता यूपी टीम को 2 लाख रुपये, ट्रॉफी व मेडल दिया, जबकि उपविजेता टीम को 1 लाख रुपये और ट्रॉफी प्रदान की। हरियाणा और आंध्र प्रदेश की टीमें तीसरे स्थान पर रहीं। दोनों को 50-50 हजार रुपये का चेक और ट्रॉफी दी गई। प्रतियोगिता में 12 टीमों के 168 खिलाड़ियों और 24 कोच-मैनेजरों ने प्रतिभाग किया। खिलाड़ियों ने तीन दिनों तक रोमांचक मुकाबलों में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई।

राष्ट्रीय विद्यालयीय कुश्ती के विजेता सम्मानित

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर स्थित वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में आयोजित 69वीं राष्ट्रीय विद्यालयीय ग्रीको रोमन कुश्ती (अंडर-17 व 19 वर्ग) के विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया। प्रतियोगिता में 23 राज्यों की 23 टीमों के 393 खिलाड़ी और 81 कोच/मैनेजर शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने स्वर्ण विजेताओं को 75,000 रुपये, रजत विजेताओं को 50,000 रुपये और कांस्य विजेताओं को 30,000 रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की। मुख्यमंत्री ने युवाओं को 2030 में अहमदाबाद में होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारी अभी से शुरू करने की सलाह दी।

सभी विभाग समन्वय बना निर्माण कार्यों को दें गति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- मुख्य सचिव ने बीडा की महायोजना-2045 और ललितपुर फार्मा पार्क के निर्माण कार्यों की समीक्षा की

एसपी गोयल

अमृत विचार : मुख्य सचिव एसपी गोयल ने कहा कि परियोजनाएं प्रदेश के औद्योगिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए सभी विभाग आपसी समन्वय स्थापित कर तेज गति से कार्य करें। उन्होंने सभी निर्माण कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा करने और कार्यों में आने वाली बाधाओं को तत्परता से दूर करने के लिए निर्देशित किया।

मुख्य सचिव, गुरुवार को अपने कार्यालय में प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग ग्रुप (पीएमजी) की बैठक में बुन्देलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (बीडा) की महायोजना-2045 तथा ललितपुर में प्रस्तावित फार्मा पार्क सहित यूपीडा की प्रमुख औद्योगिक परियोजनाओं की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में अवगत कराया गया कि बीडा की महायोजना-2045 के लिए कुल 8349 एकड़ भूमि अर्जन हेतु दिसंबर 2025 से मार्च 2026 तक माहवार लक्ष्य तय कर दिया गया है। आसामी पट्टा भूमि के त्वरित क्रय के लिए मंत्रिपरिषद अनुमोदन हेतु प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसे शीघ्र शासन को भेजा जाएगा। बीडा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल एवं सेक्टर प्लानिंग का कार्य प्रगति पर है और इसे दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीडा क्षेत्र के बाहर राइजिंग मेन पंप स्टेशन एवं ओएंडएम कार्य जल निगम द्वारा किए जाएंगे, जिसके लिए एमओयू की प्रक्रिया जारी है। पंपिंग स्टेशन, सीडब्ल्यूआर एवं आरओडब्ल्यू हेतु भूमि चिन्हित की जा चुकी है तथा परीक्षण उपरांत डीपीआर संशोधन की प्रक्रिया जारी है। एक्टिवेशन क्षेत्र के लिए 15 मेगावाट विद्युत आपूर्ति की डीपीआर स्वीकृत हो चुकी है, जबकि शेष 40 मेगावाट की डीपीआर तैयार की जा रही है। 60 मीटर चौड़ी मुख्य सड़क की डीपीआर प्राप्त हो चुकी है और अन्य सड़कों की डीपीआर दिसंबर 2025 तक तैयार कर ली जाएगी।

रोहिंग्या व बांग्लादेशी अप्रवासियों पर कार्रवाई तेज, पुलिस व खुफिया इकाइयों का जांच अभियान शुरू

अमृत विचार, लखनऊ, एजेंसी : प्रदेश सरकार द्वारा अवैध रूप से रह रहे रोहिंग्या और बांग्लादेशी अप्रवासियों के खिलाफ राज्यव्यापी कार्रवाई के बीच, पुलिस और खुफिया इकाइयों ने गुरुवार को प्रमुख जिलों में गहन सत्यापन अभियान चलाया। इस समन्वित अभियान के तहत, राज्य की राजधानी लखनऊ, कन्नौज, प्रयागराज, वाराणसी, मेरठ, अलीगढ़, गाजियाबाद, गोरखपुर, आगरा, सहारनपुर, मथुरा और कई अन्य जिलों में इसी तरह की जांच की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने नगर निकायों और पुलिस इकाइयों को अपने क्षेत्र में रहने वाले सभी संदिग्ध विदेशी नागरिकों की पहचान करने, उनके दस्तावेजों की जांच करने और वैध दस्तावेजों के अभाव वाले अप्रवासियों की जिला-वार सूची तैयार करने का निर्देश दिया है। अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने अधिकारियों को सरकारी भवनों और पुलिस केंद्रों की पहचान करने का निर्देश दिया है जिन्हें निर्वासन प्रक्रिया पूरी होने तक अस्थायी हिरासत केंद्रों में परिवर्तित किया जा सके।

काशी विश्वनाथ धाम: 4 साल में 26 करोड़ श्रद्धालु

अमृत विचार, लखनऊ : नव्य-भव्य काशी विश्वनाथ धाम ने चार वर्षों में लगभग 26 करोड़ श्रद्धालुओं का स्वागत किया है। धाम का विस्तार 3,000 से बढ़कर 5 लाख वर्ग फीट होने से दर्शन की सुविधा, सुगमता और सुरक्षा बढ़ी है। बेहतर व्यवस्था, व्हीलचेयर, गोल्फ कार्ट, चिकित्सा, जर्मन हैंगर और ठंड-गर्मी में राहत देने वाली व्यवस्थाओं से भक्तों का अनुभव सहज हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नियमित समीक्षा से काशी वैश्विक धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र बनी है।

आरक्षित वर्ग के युवकों को मिलेगा कोचिंग का लाभ

राज्य बयूरो, लखनऊ

- यूपीपीसीएस-2025 मुख्य परीक्षा के लिए नि:शुल्क कोचिंग को मांगे गए आवेदन

अमृत विचार : भागीदारी भवन के संयुक्त निदेशक आनंद कुमार सिंह ने बताया कि प्रतिभाशाली युवाओं को उच्च गुणवत्ता का मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से समाज कल्याण विभाग द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उक्त क्रम में ही यूपीपीसीएस प्री परीक्षा-2025 उत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए मुख्य परीक्षा की निःशुल्क कोचिंग का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस कोचिंग में दाखिले के लिए आवेदन प्रक्रिया 12 दिसंबर 2025 तक जारी रहेगी।

गोमती नगर में गुरुवार को आयोजित समाज कल्याण की बैठक संबोधित कर रहे थे। संयुक्त निदेशक ने बताया कि परीक्षा की तैयारी छत्रपति शाहू जी महाराज शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, भागीदारी भवन में आयोजित की जाएगी। उन्होंने बताया कि यह सुविधा केवल पुरुष अभ्यर्थियों के लिए उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि इसके अंतर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के वे अभ्यर्थी, जिनकी पारिवारिक वार्षिक आय 6 लाख रुपये से अधिक न हो तथा जिन्होंने यूपीपीसीएस प्रारम्भिक परीक्षा-2025 उत्तीर्ण की हो, उन्हें लेटरल एंट्री से प्रवेश दिया जाएगा।

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण समय से पूरा करें : रिणवा

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देशित किया है कि मतदाता सूची के विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े सभी कार्य निर्धारित समय में पूर्ण किए जाएं। साथ ही गुरुवार को उन मतदाताओं से अपील की है कि जिन्होंने अभी तक अपने गणना प्रपत्र जमा नहीं किए हैं, वे अंतिम तिथि का इंतजार न करें, शीघ्र बीएलओ को प्रपत्र उपलब्ध करा दें। उन्होंने बताया कि एसआईआर की समयसीमा बढ़ाकर 11 दिसंबर 2025 कर दी गई है, इसलिए पात्र मतदाता अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने के लिए आगे आएं।

आयुष चिकित्सकों की ग्रामीण क्षेत्रों में नियुक्ति जरूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- विकसित यूपी 2047 को लेकर पर्यटन क्षेत्र की रूपरेखा को लेकर हुई बैठक

विकसित यूपी 2047 की तैयार की जा रही रूपरेखा पर चर्चा के लिए आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते प्रमुख सचिव आयुष रंजन कुमार।

अमृत विचार : प्रमुख सचिव आयुष रंजन कुमार ने कहा कि राज्य में समग्र स्वास्थ्य सेवा को बढ़ाने के लिए आयुष चिकित्सा प्रोटोकॉल का मानकीकरण, नए आयुष चिकित्सकों की ग्रामीण क्षेत्रों में अनिवार्य नियुक्ति तथा आयुष सेवाओं का दूरस्थ क्षेत्रों तक विस्तार अत्यंत आवश्यक है। साथ ही आयुष को चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित करने पर भी विशेष बल दिया।

प्रमुख सचिव आयुष, गुरुवार को योजना भवन में विकसित यूपी 2047 को लेकर तैयार की जा रही रूपरेखा पर चर्चा के लिए परामर्श बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। प्रमुख सचिव योजना आलोक कुमार ने सुझाव दिया कि अयोध्या, वाराणसी, मथुरा जैसे तीर्थ स्थलों पर आध्यात्मिक पर्यटन के साथ वेलनेस पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने औषधीय जड़ी-बूटियों की खेती को प्रोत्साहित करने और आयुष क्षेत्र में पंजीकृत योग्य चिकित्सा पेशेवरों की संख्या बढ़ाने पर भी जोर दिया। साथ ही, वर्ष 2047 के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए अल्पकालिक और दीर्घकालिक रणनीति तैयार करने की आवश्यकता बताई। प्रमुख सचिव पर्यटन, अमृत अभिजात ने मानक गुणवत्ता, प्रमाणन, ब्रांडिंग और प्रशिक्षित थेरेपिस्ट वर्कफोर्स जैसे मुद्दों के समाधान पर बल दिया।

मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं पूर्व डीसीजीआई डॉ. जीएन सिंह ने सुझाव दिया कि पीलीभीत और गोरखपुर जैसे क्षेत्रों में दो आयुष घाटियां विकसित की जाएं।

इको-टूरिज्म | **विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस पर विशेष**

पर्यटकों को लुभा रहा वन्यजीवों का संरक्षण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि वन, सिंचाई सहित अन्य विभागों से समन्वय कर पर्यटकों के लिए आकर्षक सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। हमारा प्रयास वन्य जीव संरक्षण को सुदृढ़ करते हुए स्थानीय समुदाय को आजीविका के नए अवसरों से जोड़ना है।

पर्यटन मंत्री ने गुरुवार को जारी बयान में बताया कि प्रदेश में गैंडा, बाघ, बारहसिंघा, घड़ियाल जैसे दुर्लभ वन्यजीव न सिर्फ सुरक्षित हैं, बल्कि उनके लिए वातावरण भी विकसित किया गया है। दुधवा, पीलीभीत, कतर्नियाघाट, अमानगढ़ और सोहगीबरवा जैसे वन क्षेत्र पर्यटकों को विशेष अनुभव प्रदान करते हैं। उन्होंने बताया कि तराई, ब्रजभूमि, गंगा नदी का क्षेत्र, बुंदेलखंड और विंध्य वनक्षेत्र हर इलाके में जैव विविधता के संरक्षण और सतत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा निरंतर कार्य किया गया है।

तीन वर्षों में 161 करोड़ रुपये खर्च

अमृत विचार : मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि इको-टूरिज्म विकास बोर्ड ने पिछले तीन वर्षों में 161 करोड़ रुपए से अधिक की राशि खर्च कर विभिन्न प्राकृतिक स्थलों पर पर्यटन सुविधाएं विकसित की हैं। इनमें मार्ग सुधार, कैफेटेरिया, इको-फ्रेंडली विश्राम स्थलों, गजिबो, नेचर ट्रेल, बर्ड वॉचिंग स्थान और बच्चों के लिए खेलने के क्षेत्र जैसी सुविधाएं शामिल हैं। पिछले तीन वर्षों में निरंतर बढ़ता निवेश राज्य की प्राथमिकताओं को स्पष्ट करता है।

विकसित यूपी 2047 की ओर बढ़े कदम

अमृत विचार : पर्यटन मंत्री ने बताया कि हाल ही में संपन्न 'विकसित उत्तर प्रदेश 2047' कार्यशाला में ईको-टूरिज्म को राज्य की भविष्य रणनीति का अहम आधार माना गया है। वेटलैंड्स और वाइल्ड लाइफ जोन में हरित नेटवर्क विकसित किया गया है। उत्तर प्रदेश को प्रकृति-आधारित पर्यटन का नया प्रमुख गंतव्य बनाने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि इको टूरिज्म को गुणवत्तापूर्ण और समृद्ध अनुभव बनाने के लिए दुधवा, पीलीभीत और कतर्नियाघाट क्षेत्रों में नेचर गाइड्स को प्रशिक्षण दिया गया है। साथ ही, स्थानीय निवासियों को होम स्टे विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर 150 आईएएस अफसरों का होगा प्रशिक्षण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- केंद्रीय कार्मिक मंत्रालय ने ट्रेनिंग प्रोग्राम के लिए जारी की 547 पात्र अधिकारियों की सूची
- यूपी के 113 अधिकारी शामिल 15 जनवरी तक कराना होगा पंजीकरण, 2 फरवरी से प्रशिक्षण

अमृत विचार : अखिल भारतीय सेवाओं में पदोन्नति पाए राज्य सिविल सेवा अधिकारियों के लिए केंद्र सरकार ने 128वें इंडक्शन ट्रेनिंग प्रोग्राम (आईटीपी) की तैयारियां पूरी कर ली हैं। कार्मिक एवं प्रशिक्षण मंत्रालय ने देशभर के 547 पात्र आईएएस अधिकारियों की सूची जारी करते हुए राज्यों को निर्देश दिया है कि वे पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर अपने अधिकारियों का नामांकन सुनिश्चित करें। प्रशिक्षण की कुल सीटें 150 तय की गई हैं, इसलिए समय पर पंजीकरण कराने वालों को ही मसूरी में प्रशिक्षण का अवसर मिल सकेगा।

सूची में यूपी के 113 अधिकारी शामिल है, ऐसे में कार्मिक विभाग ने सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश दिए हैं कि 15 जनवरी तक होने वाले पंजीकरण में पहले आओ को आधार मानते हुए अतिशीघ्र पंजीकरण प्रक्रिया पूरी कराएं। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी में यह प्रशिक्षण 2 फरवरी से 13 मार्च 2026 तक आयोजित होगा। केंद्रीय कार्मिक मंत्रालय ने साफ कहा है कि पूर्व चयन सूची में शामिल वे अधिकारी, जो किसी कारण पूर्व प्रशिक्षण में भाग नहीं ले पाए और वर्तमान चयन सूची के सभी अधिकारी इसमें सम्मिलित होने के पात्र हैं।

अकादमी ने राज्यों को निर्देश दिया है कि नामांकित अधिकारी 15 जनवरी 2026 तक की वेबसाइट पर अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण पूरा कर लें। समयसीमा के बाद पंजीकरण स्वीकार नहीं किया जाएगा।

व्यक्ति अपने विचारों के सिवा कुछ नहीं है। वह जो सोचता है, वह बन जाता है।
–महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता

निर्णय से नकार तक

संचार साथी ऐप को अचानक वापस लेने का निर्णय कई राजनीतिक, तकनीकी और सामाजिक प्रश्न उठाता है। सरकार ने इससे पहले इसे मोबाइल फ़ोन में अनिवार्य रूप से शामिल कराने की कोशिश की, चाहे उपभोक्ताओं के माध्यम से या हैंडसेट कंपनियों के जरिए, लेकिन दबाव बढ़ते ही इसे वापस लेना बताता है कि सरकार विपक्ष के आरोपों से ज्यादा सार्वजनिक स्वीकार्यता को लेकर असहज हो गई थी। सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब विश्व की कोई भी सरकार इस तरह के ऐप को प्री-इंस्टॉल करने की बाध्यता नहीं बनाती, तो भारत को इतनी गहन चिंता क्यों हुई?

साइबर अपराध, डिजिटल फ्रॉड और मोबाइल चोरी की समस्या महत्वपूर्ण अवश्य है, लेकिन इन्हें हल करने के लिए दुनिया भर में स्वैच्छिक उपकरण अपनाए जाते हैं, न कि बाध्यकारी ऐप। सरकार यह समझा न सकी कि यह कदम जनहित में है, न ही यह कि बाध्यकारी इंस्टॉलेशन नागरिकों की सुरक्षा के लिए अनिवार्य क्यों है। यदि सरकार समय रहते ऐप की तकनीकी संरचना, डेटा सुरक्षा प्रोटोकॉल और निजता-संरक्षण की गारंटी जनता के साथ साझा करती, तो शायद स्थिति अलग होती। पारदर्शिता की इस कमी ने जनता में संदेह बढ़ाया कि कहीं यह निगरानी उपकरण तो नहीं। विपक्ष ने इसी बिंदु को पकड़ा और जासूसी के आरोपों को उछाला। सरकार ने इससे पहले भी कई बार अपने फैसलों पर यू-टर्न लिया है। नीति-निर्माण में लचीलेपन को लोकतांत्रिक गुण माना जा सकता है, लेकिन बार-बार हुई पीछे हटने की घटनाएं यह संकेत भी देती हैं कि फैसले पर्याप्त विचार-विमर्श के बिना लिए जा रहे हैं। यदि नीति निर्माण पर सवाल खड़े होने लगें, तो लंबे समय में इससे सरकार की विश्वसनीयता पर दुष्प्रभाव पड़ता है। यह निर्णय पूरी तरह नकारात्मक प्रभाव डालेगा यह कहना गलत होगा। इससे यह संदेश गया कि सरकार विपक्ष और जनता की आवाज़ पर कान देती है, तो सरकार के प्रति जनविश्वास बढ़ सकता है। लगेगा कि सरकार प्राइवेसी संबंधी चिंताओं पर संवेदनशील है और निर्णयों को एकतरफा नहीं थोपती। प्रश्न यह भी उठता है कि जब ऐप को लेकर शुरुआती जनता का रुझान अच्छा था और लोग स्वेच्छा से इसे डाउनलोड कर रहे थे, तो प्री-इंस्टॉल अनिवार्यता की आवश्यकता क्यों पड़ी? यह सरकार की नीति-निर्माण शैली में निहित एक असंगति को उजागर करता है। अगर लोग इसे अपना ही रहे थे, तो उन्हें मजबूर करने की आवश्यकता क्यों? यह कदम उल्टा अविश्वास पैदा करता है, न कि सुरक्षा।

इस निर्णय से सरकार को लाभ यह हो सकता है कि वह इसे 'जनभावना का सम्मान' बताते हुए सकारात्मक कहानी गढ़ सके। सरकार यह कह सकती है कि उसका उद्देश्य सुरक्षा था, निगरानी नहीं और वह नागरिकों की प्राइवेसी को सर्वोपरि मानती है। इसके साथ ही वह यह भी साबित करना चाहेगी कि वह लोकतांत्रिक आलोचना को स्वीकार करती है, लेकिन नीति-निर्माण का मूल पाठ है कि पारदर्शिता और विश्वास किसी भी लोकतांत्रिक शासन की नींव हैं। संचार साथी ऐप प्रकरण ने सरकार को यह सिखा दिया होगा कि तकनीकी समाधान जितने उपयोगी होते हैं, उतने ही संवेदनशील भी और जनस्वीकृति के बिना कोई भी डिजिटल नीति आगे नहीं बढ़ सकती।

प्रसंगवश

सीरिया में मिलीं तीन हजार बरस पुरानी ऋग्वेद रेखाएं

भारतीय वैदिक संस्कृतियों ने न सिर्फ दुनिया को एक सूत्र में पिरोया है, बल्कि 'ऋग्वेद' विधाओं के जरिए 'वसुधेव कुटुंबकम्' का नारा भी समूचे संसार में बुलंद हुआ। हाल में पुरातत्व गाथाओं के अध्ययन में एक बात सिद्ध हुई है कि सीरिया में आज से तीन हजार साल पहले भारतीय वैदिक संस्कृति 'ऋग्वेद' की ऋचाएं उकेरी गई थीं। संगीत की धुनों का आगाज तभी से हुआ था। पता ये भी चला है कि सीरियाई सीमाएं अखंड भारत का हिस्सा थीं। ऋग्वेद की ऋचाए वैदिक अध्याय की सबसे पुरानी हैं, जिसके शुरूआती निशान सीरिया से जुड़े पाए जाते हैं, यानी उनका उद्गम वहीं से हुआ। पिछले दिनों इसको लेकर एक संयुक्त शोध हुआ।

डॉ. रमेश ठाकुर
लेखक

शोध में सीरियाई शहर 'लाम्चू' के 'उगारित' प्रांत में मिले भजनों के प्राचीन ग्रंथ 'हिम्न टू निकल' में कई समानताएं भारतीय संगीत और परंपराओं में पाई गईं। इससे तय होता है कि हमारी पारंपरिक वैदिक संस्कृति शताब्दियों से समूची दुनिया को भाईचारे, सभ्यता, मानवता, एकजुटता और संगीत का पाठ पढ़ाती-सुनाती आई हैं। ये खोज यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ता व प्रसिद्ध प्रोफेसर डैन सी बासियू द्वारा की गई है। बासियू ने कंप्यूटर टूल्स की सहायता से ग्रंथों के रिद्म और मेलोडी के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करके ये बात जानी। सीरिया के उगारित प्रांत की गुफाओं में पट्टिका पर उकेरे गए भजन में आज भी बाकायदा ऋग्वेद की श्रृंखलाओं की कड़ियां मौजूद हैं। उनका जब उन्होंने मिलान किया, तो आपस में समानताएं मिली।

'मित्तानी साम्राज्य और संगीत यात्रा' के अध्ययन पर भी कई मर्तबा विभिन्न देशों में शोध हुआ, उनमें भी हर दफे ऐसी ही समानताएं मिलीं थीं। भारत और पश्चिमी सभ्यताओं के बीच सदैव सांस्कृतिक पुल रहा। ये बात अलग है कि अब दोनों की सभ्यताएं भिन्न-भिन्न हो गई हैं। पश्चिमी सभ्यता ने मॉर्डन युग को पूरी तरह से अपना लिया है, पर, भारत आधुनिक होते हुए भी, अपनी मूल जड़ों से नहीं कटा, आज भी जुड़ा है। संगीत-सभ्यता की ताकत को कोई कमतर नहीं आंक सकता, क्योंकि संगीत प्राचीन सभ्यताओं को जोड़ने वाली असली वैश्विक भाषा रही है। भले ही, एक इंसान दूसरे इंसान की जुबान न समझ पाए, पर संगीत की धुन एक-दूसरे को आसानी से समझ आती है। संगीत ऋग्वेद की ही देन है और ऋग्वेद भारत की।

'ऋग्वेद' से जुड़ी इस रिसर्च में जो तथ्य निकले हैं, उनको लेकर शोधकर्ता बासियू ने कहा है कि यही धुनें और पैटर्न यूनानी कवयित्री सैफो की कविताओं और जर्मन कवि फ्रेडरिक होल्डरलिन की रचनाओं में भी दिखती हैं। दोनों महान रचनाधर्मियों की कविताओं में 'ऋग्वेद' की झलक है। उन्होंने विश्व से आह्वान किया है कि संगीत की वैश्विक भूमिका को नए सिरे से परिभाषित करना होगा। शोध में ये भी पुष्टि हुई कि विभिन्न देशों के संगीत विधा में भी ऋग्वेद का पैटर्न मिलता है। ये मेल निश्चित रूप से दुर्लभ है, इसलिए कह सकते हैं कि संगीत का जन्म 'ऋग्वेद' से ही हुआ, हालांकि ये बात भारतीय इतिहासकार सदियों से कहते आए हैं कि भजन की धुनें 'ऋग्वेद' से ही फूटी हैं।

ऋग्वेद, जिसका मूल अर्थ है स्तुति का ज्ञान, इसीलिए हिंदू धर्म में इसे चार सबसे पुराने और पवित्र वेदों में गिना गया है। यह संस्कृत श्लोकों का एक संग्रह है, जो देवताओं की स्तुति करता है। सीरिया से इस ग्रंथ की जड़ें जुड़ना बताता है कि भारतीय संस्कृति के तत्व पहले कहां-कहां मौजूद थे।

संचार साथी ऐप पर फैसला बदलने की मजबूरी

विवेक सक्सेना
अयोध्या

सरकार ने सभी स्मार्टफोन में संचार साथी ऐप अनिवार्य किया और फिर विवाद होने के बाद आदेश वापस भी ले लिया। ये पूरा घटनाक्रम कई गंभीर सवाल भी खड़े करता है।

साइबर अपराधों की बढ़ती जटिलता, 'डिजिटल अरेस्ट' से लेकर गुमनाम व बड़े पैमाने पर घपलों, आम जनता के साथ आए दिन ठगी आदि के तमाम ऐसे मामले हैं, जिसमें साइबर अपराधियों ने सुरक्षा खामी का भरपूर फायदा उठाया है। फर्जी या छेड़छाड़ किए हुए आईएमईआई नंबरों के धड़ल्ले से इस्तेमाल ने भी कानून और प्रवर्तन एजेंसियों के लिए अपराधियों को खोज निकालना लगभग नामुमकिन बना दिया है। साइबर अपराध पर सुप्रीम कोर्ट ने भी चिंता जताई। ऐसे में सरकार द्वारा सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर संबंधी इन कमजोरियों के निवारण के लिए उठाए गए कदम पर राजनीति चिंतनीय है। हालांकि, दुनियाभर में किसी भी देश ने स्मार्टफोन में साइबर सुरक्षा ऐप को पहले से लगाना अनिवार्य नहीं किया है। एकमात्र अपवाद रूस को छोड़कर, जिसने सरकारी संदेश सेवा 'मैक्स' को सभी फोन और टैबलेट में इंस्टॉल करना अनिवार्य किया है। सरकार ने सभी स्मार्टफोन में संचार साथी ऐप अनिवार्य किया और फिर विवाद होने के बाद आदेश वापस भी ले लिया।

सरकार का कहना है कि इस ऐप के जरिये डिजिटल स्कैम, फर्जी कॉल और दूसरी धोखाधड़ियों को रोकने में मदद मिलेगी, लेकिन इसके साथ ही निजता के उल्लंघन की चिंता भी खड़ी होती है। कहीं यह ऐप यूजर्स के निजी जीवन में ताकझांक तो नहीं करेगा? इससे लोगों की निजता को लेकर सवाल उठ रहे हैं। डेटा की सुरक्षा और उसके बेजा इस्तेमाल को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने निजता को मौलिक अधिकार माना है। चौतरफा विरोध के बाद केंद्र ने भले साफ किया हो कि इस ऐप को अपने फोन में रखना या डिलीट करना यूजर की मर्जी पर निर्भर करता है, लेकिन इससे चिंता का समाधान नहीं होता।

सरकार ने हाल में साइबर सिक्यॉरिटी से जुड़े दो आदेश दिए हैं। 28 नवंबर को 'सिम बाइंडिंग' का निर्देश दिया। व्हाट्सऐप, टेलिग्राम जैसे सभी कम्युनिकेशन से कहा कि वे अपनी सर्विस को सिम कार्ड से जोड़कर रखें। मतलब कि ये ऐप तभी चलें, जब मोबाइल में सिम लगा हो। टेलिकम्युनिकेशन कंपनियों ने इस फैसले का स्वागत किया। इसी बीच पहली दिसंबर को स्मार्टफोन निर्माताओं को मार्च 2026 तक सभी नये यंत्रों (डिवाइस) में डिवाइस ऑथेंटिसिटी के सत्यापन के लिए संचार साथी ऐप इंस्टॉल करना अनिवार्य करने के आदेश दे दिये। निर्देश में साफ कहा गया कि ये ऐप 'पहली बार इस्तेमाल या डिवाइस सेटअप के समय अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए आसानी से नजर आने वाला और सुगम पहुंच वाला हो तथा इसकी कार्यशीलताओं को अक्षम या सीमित नहीं किया जा सके', जिसका मतलब यह हुआ कि इस ऐप को फोन के ऑपरेटिंग सिस्टम के भीतर उच्च सुरक्षा मंजूरी दी जाएगी।

निजता पर संभावित खतरे मुख्य रूप से इसके द्वारा मांगी जा रही अत्यधिक अनुमतियों से जुड़े हैं। ऐप कैमरा, एसएमएस, फोन कॉल्स, डिवाइस आईडी, फोटो-मीडिया फाइल और स्टोरेज तक पहुंच मांगता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को अपने डेटा की सुरक्षा को लेकर चिंता होती है। लोग मानते हैं कि इससे उनकी निजी जानकारियां सरकार या अन्य एजेंसियों द्वारा ट्रैक की जा सकती हैं, जिससे निगरानी और जासूसी का खतरा बनता है। राज्य निगरानी (स्टेट सर्विलांस) के लिए इस ऐप के दुरुपयोग और सुरक्षा से समझौते के बाद किसी बदनीयत व्यक्ति या संगठन द्वारा करोड़ों उपयोगकर्ताओं को निशाना बनाए जाने की आशंका मौजूद है।

पेगासस सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल के साथ जो हुआ है, उसे देखते हुए यह डर बेबुनियाद भी नहीं है। हालांकि संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने संसद में कहा कि यह ऐप पूरी तरह स्वैच्छिक और लोकतांत्रिक व्यवस्था से जुड़ा है। यूजर्स चाहें तो ऐप को सक्रिय कर इसका लाभ ले सकते हैं और न चाहें तो वे किसी भी समय इसे अपने फोन से आसानी से डिलीट कर सकते हैं। ऐप के पक्ष में कहा जा सकता है कि यह फोन की असलियत जांचने, धोखाधड़ी रिपोर्ट करने, मोबाइल ब्लॉक करने और खोए हुए फोन का पता लगाने में मदद करता है। यह ऐप आईएमईआई नंबर की जांच करता है और यूजर्स को फर्जी कनेक्शनों की जानकारी देने में सहायक है। इसके जरिए फर्जी कॉल या धोखाधड़ी को रोका जा सकता है।

सरकार का तर्क है कि अब तक 1.5 करोड़ लोगों ने ऐप को डाउनलोड किया है। विरोध के बीच एक दिन में ही छह लाख लोगों ने ऐप को डाउनलोड करने के लिए पंजीकरण कराया। इस ऐप से चोरी हुए 26 लाख हैंडसेट का पता लगाया गया और 41 लाख मोबाइल ब्लॉक हो चुके हैं। वहीं मुख्य आलोचना यह है कि संचार साथी ऐप को अनिवार्य रूप से मोबाइल में इंस्टॉल करने को निगरानी और जासूसी बताया जा रहा है। विपक्षी पार्टियों द्वारा इसे नागरिकों की निजता पर बड़ा खतरा बताते हुए इस ऐप को असंवैधानिक करार दिया गया है। विपक्षी नेताओं का कहना है कि यह ऐप लोगों की निजी जानकारी पर नजर रखने का साधन बन सकता है।

कांग्रेस ने भाजपा को 'भारतीय जासूस पार्टी' होने का आरोप लगाते हुए दावा किया कि ये ऐप लोगों के घरों में घुसने का षडयंत्र है। डिवाइस के सच्चेपन के सत्यापन के लिए सरकार के पास पहले ही कम घुसपैठ वाले साधन मौजूद हैं। संचार साथी वेब पोर्टल, एसएमएस-आधारित परीक्षण और यूएसएसडी कोड पर्याप्त होने चाहिए। कम घुसपैठ वाले विकल्पों की अनदेखी करके, संचार साथी पर जारी निर्देश आनुपातिकता संबंधी मानक को धता बताते हैं। इस ऐप की उपयोगिता और सुरक्षा तत्त्वों को देखते हुए यह माना जा सकता है कि यह ऐप फर्जीवाड़े और चोरी के खिलाफ एक सक्षम उपकरण साबित हो सकता है, हालांकि नागरिक गोपनीयता के अधिकार का सम्मान करते हुए उसकी पारदर्शिता और यूजर नियंत्रण के पहलुओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

आमने सामने

स्वतंत्रता के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू बाबरी मस्जिद के पुनर्निर्माण के लिए सरकारी धन का उपयोग करना चाहते थे, लेकिन सरदार वल्लभभाई पटेल ने इसे रोक दिया। मोदी सरकार ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी बनाकर पटेल को सम्मान दिया।
–राजनाथ सिंह
केंद्रीय रक्षा मंत्री

सरकार रोज कोई नया विवाद खड़ा करती है, ताकि जनता के असली मुद्दों से ध्यान हटाया जा सके। यह बयान उसी भटकाव की राजनीति का हिस्सा है। यह सब असली मुद्दों जैसे प्रदूषण, बेरोजगारी से ध्यान भटकाने की साजिश है।
–प्रियंका गांधी
कांग्रेस सांसद

पीएमओ, राजभवनों के नाम बदलने के निहितार्थ

प्रो. महेश चंद गुप्ता
शिक्षाविद्

पीएमओ, राजभवनों और केंद्रीय सचिवालय के नाम परिवर्तन के साथ ही भारत एक नए दौर में प्रवेश कर गया है, जहां शासन सेवा का प्रतीक बनेगा।

अक्सर कहा जाता है कि नाम में क्या रखा है? लेकिन भारतीय संस्कृति इस प्रश्न का सीधा उत्तर देती है कि नाम में ही सब कुछ रखा है। हमारे यहां 'यथा नाम तथा गुण' की परंपरा उतनी ही पुरानी है, जितनी हमारी सभ्यता। जब हम 'राम' का नाम लेते हैं, तो हमारे भीतर स्वतः शांति, करुणा और मर्यादा का भाव जाग उठता है। 'कृष्ण' का नाम लेते ही मन में प्रेम और मधुरता की अनुभूति होती है। हमारी मान्यताओं के अनुसार नाम एक ध्वनि है, ऊर्जा है, पहचान है और दिशा है, इसीलिए हमारे समाज में नाम केवल किसी की पहचान ही नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व और नेतृत्व का वाहक है।

मौजूदा दौर में जब दुनिया के अनेक देशों में मूल्यहीनता, आपसी संघर्षों, तानाशाही और सत्ता केंद्रित शासन का बोलबाला है, तब मोदी सरकार ने प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम 'सेवा तीर्थ', राजभवनों का नाम 'लोक भवन' और केंद्रीय सचिवालय का नाम 'कर्तव्य भवन' करके एक गहरी सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित किया है। यह केवल बोर्ड बदलने अथवा दीवारों पर नई पट्टिका लगाने का कदम भर नहीं है, बल्कि इसके पीछे शासन की आत्मा बदलने वाले सांकेतिक, दार्शनिक और वैचारिक बदलाव की भावना निहित है। पीएम नरेंद्र मोदी बार-बार कहते रहे हैं कि वे प्रधान सेवक हैं और उनका कार्य सत्ता का प्रदर्शन नहीं बल्कि सेवा की साधना है।

उनके इसी मनोभाव के अनुरूप प्रधानमंत्री कार्यालय को अब सेवा तीर्थ कहा जाएगा। हमारे यहां तीर्थ शब्द का बड़ा महत्व है। तीर्थ शब्द पवित्रता, तप, श्रद्धा और जन कल्याण के भाव को व्यक्त करता है। हम तीर्थ उन स्थानों को कहते हैं, जहां लोग समाधान, शांति और आशा की उम्मीद लेकर जाते हैं। मोदी सरकार ने पीएमओ को तीर्थ कहकर यह संदेश दिया है कि वहां सत्ता संचालन नहीं, सेवा का कार्य होगा। राज भवनों का नाम बदलकर लोक भवन करना एक क्रांतिकारी कदम है। 'राज' शब्द में हमेशा एक दूरी, एक अधिकार और सत्ता भाव का अहसास जन मानस को होता रहा है, लेकिन 'लोक' शब्द में अपनापन, भागीदारी और साझेदारी का भाव समाया हुआ है। केंद्रीय सचिवालय का नाम कर्तव्य भवन रखने के पीछे नौकरशाही में सेवा भाव और कर्तव्य बोध का संचार करने का भाव निहित है। दशकों से इसे अधिकार, फाइलों की गति, निर्णयों की शक्ति और नौकरशाही की ताकत का प्रतीक माना जाता रहा है, लेकिन अब जब इसका नाम कर्तव्य भवन कर दिया गया है, तो अब प्रत्येक अधिकारी को हर घड़ी स्मरण रहेगा कि शासन का आधार अधिकार नहीं, कर्तव्य है।

दो दिन पहले तक जब हम प्रधानमंत्री कार्यालय सुनते थे तो मन में एक विशाल, अधिकार प्रदर्शित करने वाली इमारत का भाव आता था, लेकिन सेवा तीर्थ नाम सुनते ही मन में एक अलग ही पवित्रता, जनता से जुड़ाव और विनम्रता का भाव उमड़ने लगा है। यही इस नामकरण का वास्तविक निहितार्थ है। राज कपूर की फिल्म का मशहूर गीत हर किसी को याद है- मेरा जूता है जापानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी। नाम के साथ पहचान का रिश्ता कैसा गहरा होता है, इस गीत से बेहतर कोई उदाहरण नहीं हो सकता। जापानी शब्द जापान की आत्मा से जोड़ देता है, रूसी शब्द रूस से और हिंदुस्तानी दिल की धड़कन बना रहता है। यानी नाम हमेशा भाव जगाते हैं, भाव संस्कृति गढ़ते हैं और संस्कृति राष्ट्र का चरित्र तय करती है।

मोदी सरकार ने सिर्फ नाम ही नहीं बदले हैं, बल्कि संदेश दे दिया है कि अब सत्ता जनता के पास लौट रही है। राजभवन अब उस पुराने औपनिवेशिक प्रतीक जैसे नहीं रहेंगे, जहां जनता दूर खड़ी ताकती रहे। मेरे विचार में भविष्य में यह भी संभव है कि प्रधानमंत्री कार्यालय और राजभवनों तक जनता की सहज पहुंच और बढ़े, क्योंकि मोदी सरकार का संकल्प ही जनता का शासन, जनता के लिए शासन और जनता के बीच रहकर शासन है।

देश में यह पहला अवसर है, जब कोई सरकार हर मोर्चे पर कर्तव्य-पथ, अमृत काल और सेवा जैसे शब्दों को अपने कामकाज की आधारशिला बनाकर काम कर रही है। ऐसे में अब कर्तव्य भवन केवल नाम नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय मनोवृत्ति का निर्माण करने वाला है। यह नाम एक ऐसी भावना को बढ़ाएगा जो नौकरशाही को अधिक उत्तरदायी, संवेदनशील और नैतिक बनाएगी। यह नामकरण भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का महत्वपूर्ण अध्याय है। हम सब जानते हैं कि मोदी सरकार ने पहले भी कई औपनिवेशिक, विदेशी आक्रांताओं के नाम वाले और अप्रासंगिक नामों को बदलकर भारतीयता से जुड़े नाम स्थापित किए हैं। राजपथ को कर्तव्य पथ बनाना और मुगल गार्डन को अमृत उद्यान बनाना इसके बड़े उदाहरण हैं।

विपक्षी दल आलोचना कर रहे हैं। वह सवाल उठा रहे हैं कि यह सब करके सरकार करना क्या चाह रही है? सरकार का इसके पीछे कोई छिपा हुआ एजेंडा नहीं है, बल्कि सरकार का उद्देश्य तो स्पष्ट है। सरकार भारतीय संस्कृति को उसका खोया हुआ गौरव लौटाने के लिए हर काम करना चाहती है। कुछ लोगों को नाम बदलने का यह अभियान प्रतीकात्मक लग सकता है, मगर अभियान यह भारतीय आत्मा, भारतीय विचार और भारतीय मूल्यों की पुनः स्थापना है।

सोशल फोरम

आस्ट्रेलियाई कवि मारिया रिल्के के नाम एक पत्र

पुनर्वसु जोशी
ब्लॉगर

प्रिय रेनर मारिया रिल्के,

दरअस्ल, यह पत्र आपको कल लिखा था, दिसंबर की ठंड से ठिठुरते हुए, दिसंबर की शुरुआत के पहले दिन के उन अंधेरे क्षणों में, जब कुछ ही देर में रोज़ की तरह रात, अपनी पारी पूरी कर जाने की तैयारी कर रही थी। कदाचित, इस दुनिया से आपके जाने का भी यही दिन था। शायद यही समय भी।

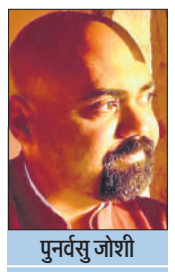

आपकी और मेरी सदी के बीच एक बड़े अंतर के बावजूद, मैं आपको यह ख़त उसी तरह भेज रहा हूं, जिस तरह कोई याचक अपनी प्रार्थनाओं को हर्फों में निथार कर, अपने इष्ट की मूर्ति के सामने चुपचाप रख आता है। भीतर यह उम्मीद लिए कि इष्ट की पाषाण प्रतिमा भले ही बोलेगी नहीं, पर व्यथा को सुन तो लेगी।

आपने एक बार लिखा था, सब कुछ मनन है और हमें सवालों के साथ तब तक जीना सीख लेना चाहिए, जब तक उनके जवाब, ऋतुओं की तरह ख़ुद-ब-ख़ुद हमारे सामने खुलने न लग जाएं। श्रीमान फ्रान्ज़ को लिखे आपके वे ख़त, एक आत्मीय ईमानदारी के साथ आज भी हमारे साथ मौजूद हैं। एकांत की याद दिलाते हुए, हमें हमारे अपने भीतर जाने का आग्रह करते हुए, लेकिन, कहीं न कहीं, आपके उन खतों को लिखने और मेरे इस जवाब को लिखने के बीच के समय में दुनिया बहुत ज़्यादा बदल गई है, रेनर। अब हवा में एक अजीब तरह की बैचेनी है और दुनिया की धड़कन में एक अजीब तरह की तेज़ी।

आप यह जान कर हैरान होंगे, रेनर! कि आज की इस दुनिया में, बिना अकेलापन महसूस किये एकांत में रहना कितना मुश्किल है। कहने को तो एकांत एक क्लिक से मिल सकता है, लकिन वह सच्चा एकांत, जैसा आप अपनी चिठ्ठियों में लिखा करते थे, वह एकांत जो आत्मा को विस्तार देता था, अब पहले से कहीं ज़्यादा दुर्लभ है। अब हम पहले से भी ज़्यादा आसानी से ख़ुद से पलायन करते हैं और पलायन के तरीके हमेशा हमारे मुठ्ठी में ही रहते हैं।

और प्रेम की तो क्या ही कहूं, रेनर। क्या ही कहूं। प्रेम जो आपके लिए एक लम्बा चलने वाला शिष्यत्व था, एक ऐसा अनुभव जहां दो एकांत, एक दूसरे को बचाते हुए, एक दूसरे का अभिवादन करते हुए, एक दूसरे के इर्द-गिर्द रहते हैं, वैसा प्रेम लुप्त हो गया है।

शेष शुभ!

सादर, एक यायावर जो सतत आपके बताए एकांत की खोज में है।

सामयिकी

स्वास्थ्य सुविधा के अभाव में जीते पहाड़ के गांव

उत्तराखंड के ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रो में बसे गांवों का दृश्यमान सौंदर्य किसी चित्र की तरह मन मोह लेता है, परंतु इन पहाड़ियों के भीतर एक ऐसी सच्चाई छिपी है, जिसे देखना जितना ज़रूरी है उतना ही कष्टकारी भी। यहां के तमाम गांव आज भी बुनियादी स्वास्थ्य सुविधा के इंतजार में है। गांव में न अस्पताल हैं न ही कोई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, जबकि स्वास्थ्य सुविधा किसी भी समाज की पहली आवश्यकता होती है।

देश की जनसंख्या के एक बड़े हिस्से का जीवन ग्रामीण क्षेत्रों में व्यतीत होता है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार लगभग साठ प्रतिशत महिलाएं और चालीस प्रतिशत किशोरियां समय पर स्वास्थ्य जांच नहीं करा पातीं। पर्वतीय जिलों के लिए यह प्रतिशत और भी चिंताजनक हो जाता है, जहां दूरी और परिवहन की कमी स्वास्थ्य सेवा को और कठिन बना देती है।

निशा आर्य
एक्टिविस्ट

गांव की युवा पीढ़ी इस स्थिति को गहराई से महसूस करती है, हालांकि यह समस्या केवल युवाओं तक सीमित नहीं है। उम्रदराज लोगों के लिए यह स्थिति और गंभीर हो जाती है। किसी भी समाज में बुजुर्गों के लिए उपचार सबसे सहज उपलब्ध होना चाहिए, क्योंकि उन्हें सबसे अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। गांवों के कई परिवार आर्थिक रूप से भी कमजोर होते हैं। रोज मजदूरी करने वाले परिवारों के लिए इलाज का खर्च उठाना कठिन हो जाता है। ग्रामीण इलाकों में चिकित्सा सुविधा की अनुपलब्धता के कारण कई बार लोग घरेलू उपचार पर निर्भर हो जाते हैं, या झोलाछाप डॉक्टरों के पास जाते हैं। इससे स्थिति बिगड़ने का खतरा बढ़ जाता है।

स्वास्थ्य सुविधा केवल बीमार होने पर दवा तक सीमित नहीं होती, इसमें जागरूकता, रोकथाम, समय पर जांच और उचित सलाह शामिल होती है। पर्वतीय क्षेत्रों में गर्भवती महिलाओं के लिए यह और भी महत्वपूर्ण होता है। कई रिपोर्ट बताती हैं कि दूरदराज क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान नियमित जांच नहीं मिल पाती, जिससे प्रसव संबंधी जटिलताओं का खतरा बढ़ जाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी लगभग पैंतीस प्रतिशत घरों के पास स्वास्थ्य केंद्र तक पहुंचने में आधे घंटे से अधिक समय लगता है। पर्वतीय क्षेत्रों में यह दूरी और समय कहीं अधिक बढ़ जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार सुरक्षित मातृत्व और शिशु स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य केंद्र की उपलब्धता अनिवार्य है।

सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई गई हैं, जिनका उद्देश्य दूरदराज क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवा पहुंचाना है। परंतु योजनाओं का लाभ तभी मिलता है, जब वे सही ढंग से लागू हों। कागजों में दर्ज योजनाएं गांव के जीवन में बदलाव तब ही लाती हैं, जब वे व्यवहारिक रूप से जमीन पर उतरती हैं। अब समय आ गया है कि प्रशासन इस क्षेत्र की वास्तविक जरूरतों को समझें और स्वास्थ्य सुविधा को प्राथमिकता दे। यह किसी प्रदर्शन की मांग नहीं, बल्कि जीवन का अधिकार है। हर व्यक्ति को उपचार पाने का वही अधिकार होना चाहिए जो शहरों में रहने वालों को मिलता है।

गांव हमारे देश की वह तस्वीर हैं. जो अक्सर नजरों से दूर रह जाती है। प्रकृति भले ही खूबसूरत हो पर जीवन केवल सुंदर दृश्यों से नहीं चलता। जीवन चलता है सुविधा के साथ, सुरक्षा के साथ और इस विश्वास के साथ की बीमारी की स्थिति में इलाज पास ही उपलब्ध है। पहाड़ के गांवों का यह दर्द तभी कम होगा जब स्वास्थ्य सुविधा गांव तक पहुंचेगी और उनका जीवन सुरक्षित और संतुलित बन सकेगा।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

टाइम ट्रैवल

विज्ञान, अंतरिक्ष और समय का संगम

समय मानव जीवन की सबसे रहस्यमय अवधारणा है। यह वह आयाम है, जो हर क्षण हमारे अस्तित्व को आगे बढ़ाता है, परंतु जिसे हम रोक नहीं सकते। सभ्यता की शुरुआत से ही मनुष्य यह समझने की कोशिश करता आया है कि क्या समय की गति को नियंत्रित किया जा सकता है, क्या अतीत या भविष्य में यात्रा संभव है? समय यात्रा या टाइम ट्रैवल का विचार इसी जिज्ञासा से जन्मा और आज यह कल्पना से निकलकर वैज्ञानिक शोध का गंभीर विषय बन चुका है। हाल के वर्षों में वैज्ञानिकों ने समय और अंतरिक्ष को समझने के लिए कई नई खोजें की हैं। ऑस्ट्रिया की एकेडमी ऑफ साइंसेज और वियना विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने क्वांटम स्विच प्रयोग में एक फोटॉन को उसकी प्रारंभिक अवस्था में लौटाने में सफलता पाई। यह मानवीय स्तर की समय यात्रा तो नहीं है, लेकिन यह दर्शाता है कि सूक्ष्म कणों की दुनिया में समय की दिशा बदली जा सकती है। इसी तरह, एटम इंटरफेरोमीटर का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक गुरुत्वाकर्षण के कारण होने वाले सूक्ष्म समय विस्तार को मापने की नई विधि विकसित कर रहे हैं। यह प्रयोग भविष्य में ऐसी घड़ियां बनाने का आधार बन सकता है, जो ब्रह्मांडीय स्तर पर भी समय की सटीकता को माप सकें।

राजेश श्रीनेत
वरिष्ठ पत्रकार

कारण और परिणाम का संतुलन

इसी साल 2025 में एक नए सिद्धांत में कोनिकल सिंगुलैरिटी वाले ब्रह्मांड की परिकल्पना की गई है, जिसमें समय एक चक्र के रूप में घूम सकता है। इस मॉडल के अनुसार यदि ब्रह्मांड की संरचना किसी स्थान पर कोन के आकार में मुड़ी हुई हो, तो वहां समय अपने आप पर लौट सकता है यानी अतीत और भविष्य आपस में जुड़ सकते हैं। एक अन्य अध्ययन ने ग्रैंडफादर पैराडॉक्स जैसी दार्शनिक उलझनों का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत किया है। शोधकर्ताओं का कहना है कि यदि कोई प्रणाली समय चक्र से गुजरे, तो उसकी ऊर्जा और स्मृति स्वतः रीसेट हो जाती है। इस प्रकार, कारण और परिणाम का संतुलन बना रहता है और कोई विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता। यह विचार क्वांटम संगति सिद्धांत से जुड़ा हुआ है। इसी बीच कॉस्मिक स्ट्रिंग की संरचनाओं पर भी अध्ययन चल रहा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि ऐसी अत्यंत घनी और पतली स्ट्रिंग्स ब्रह्मांड में मौजूद हों, तो वे अंतरिक्ष-काल को इस प्रकार मोड़ सकती हैं कि बंद काल वक्र बन जाए। इससे समय एक लूप में बदल सकता है, जिससे समय यात्रा सैद्धांतिक रूप से संभव हो जाती है।

अतीत में लौटना अभी भी रहस्य

बीसवीं सदी की शुरुआत में अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत ने समय और अंतरिक्ष की हमारी समझ को पूरी तरह बदल दिया था। इससे पहले इन्हें दो अलग-अलग इकाइयां माना जाता था, परंतु आइंस्टीन ने बताया कि ये दोनों मिलकर अंतरिक्ष-काल (स्पेस-टाइम) नामक एक चार आयामी संरचना बनाते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, जब कोई वस्तु बहुत तेज गति से चलती है, तो उसके लिए समय धीमा हो जाता है। यही समय विस्तार (टाइम डाइलेशन) है, जो समय यात्रा की वैज्ञानिक नींव रखता है। यह विचार केवल सैद्धांतिक नहीं है। प्रयोगों में पाया गया है कि पृथ्वी के चारों ओर उपग्रहों में लगे परमाणु घड़ियों का समय जमीन की घड़ियों से थोड़ा धीमा चलता है। यह अंतर बहुत सूक्ष्म होता है, पर सटीक गणनाओं से इसकी पुष्टि हुई है। इसका अर्थ यह है कि जो वस्तु तेजी से चल रही है, उसके लिए समय की गति सचमुच बदल जाती है। ब्लैक होल के पास यह प्रभाव और अधिक स्पष्ट होता है। वहां गुरुत्वाकर्षण इतना प्रबल होता है कि समय लगभग थम जाता है। वैज्ञानिक मानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति ब्लैक होल के निकट कुछ मिनट बिताए और फिर पृथ्वी पर लौटे, तो यहां सैकड़ों वर्ष बीत चुके होंगे। इस प्रकार भविष्य की यात्रा सैद्धांतिक रूप से संभव है। परंतु अतीत में लौटना अब भी रहस्य है, क्योंकि भौतिकी के अधिकांश नियम समय की दिशा को उलटने की अनुमति नहीं देते। सापेक्षता सिद्धांत से ही वर्महोल की कल्पना उत्पन्न हुई, एक काल्पनिक सुरंग जो ब्रह्मांड के दो दूरस्थ बिंदुओं को जोड़ सकती है। यदि वर्महोल के दोनों सिरों पर समय की गति अलग-अलग हो, तो यह सैद्धांतिक रूप से समय में आगे पीछे जाने का मार्ग बन सकता है। हालांकि अब तक इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला है, पर वैज्ञानिक इसे गणितीय समीकरणों के माध्यम से संभव मानते हैं।

मानव पर गहरा प्रभाव

खगोलशास्त्रियों ने दूरस्थ क्वासरों के अध्ययन से यह भी पाया है कि अत्यधिक दूर स्थित ब्रह्मांडीय पिंडों की गतिविधियों में समय का प्रवाह अपेक्षा से धीमा दिखाई देता है। यह कॉस्मिक टाइम डाइलेशन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यानी जैसे-जैसे ब्रह्मांड फैल रहा है, समय स्वयं भी फैल रहा है। क्वांटम स्तर पर भी समय को लेकर नई समझ विकसित हो रही है। वैज्ञानिकों का मत है कि समय और स्थान संभवतः ब्रह्मांड के मूल तत्व नहीं, बल्कि किसी गहरे क्वांटम ढांचे से उत्पन्न गुण हैं। यदि यह सत्य है, तो समय की दिशा और प्रवाह केवल हमारी चेतना का अनुभव हो सकता है, वास्तविक नहीं। समय यात्रा का विषय दार्शनिक दृष्टि से भी उतना ही रोचक है। यदि कोई व्यक्ति अतीत में जाकर कुछ बदल दे, तो क्या वर्तमान बदल जाएगा? यह प्रश्न मानव स्वतंत्र इच्छा और नियति दोनों पर गहरा प्रभाव डालता है। स्थिर ब्रह्मांड सिद्धांत के अनुसार अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों समान रूप से अस्तित्व में हैं, हम केवल एक बिंदु से दूसरे की ओर बढ़ते हैं। इस दृष्टिकोण में समय यात्रा केवल धारणा का विस्तार है, वास्तविक गमन नहीं। विज्ञान कथाओं में यह विषय हमेशा से लोकप्रिय रहा है। एचजी वेल्स की द टाइम मशीन से लेकर इंटरस्टेलर और टेनेट जैसी फिल्मों तक, समय यात्रा ने लोगों को न केवल मनोरंजन दिया है, बल्कि विज्ञान के प्रति जिज्ञासा भी जगाई है। इंटरस्टेलर में दिखाया गया ब्लैक होल का समय विस्तार वास्तविक आइंस्टीनियन गणनाओं पर आधारित था और वैज्ञानिक रूप से सही भी माना गया। इन सभी प्रयोगों और सिद्धांतों से यह स्पष्ट है कि समय केवल एक बहती हुई नदी नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की संरचना का सक्रिय तत्व है। हम अभी उसकी सतह को ही समझ पाए हैं, पर जैसे-जैसे तकनीक और सिद्धांत आगे बढ़ रहे हैं, भविष्य में समय को समझने और नियंत्रित करने की संभावना वास्तविक होती जा रही है। कुल मिलाकर समय यात्रा अब केवल कल्पना की सीमा में सीमित नहीं रही, बल्कि आधुनिक भौतिकी की गंभीर खोज बन चुकी है। चाहे यह कभी व्यावहारिक रूप ले या नहीं, यह मानवता को यह विश्वास अवश्य दिलाती है कि ब्रह्मांड में असंभव कुछ नहीं है।

जब विज्ञान ने दिमाग को काबू करने की कोशिश की

रोचक किस्सा

मैड्रिड विश्वविद्यालय के स्नातक जोस डेलगाडो (1915-2011) को येल विश्वविद्यालय में भले ही एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर का पद मिला हो, लेकिन इस प्रतिष्ठित संस्थान के शरीर विज्ञान विभाग में उनका शोध बेहद अजीब था, क्योंकि यह कुल मिलाकर मन पर नियंत्रण से संबंधित था। हम मजाक नहीं कर रहे हैं: 1950 और 60 के दशक में येल में रहते हुए, डेलगाडो ने प्राइमेट्स के मस्तिष्क में इलेक्ट्रोड इम्प्लांट लगाए और एक रिमोट कंट्रोल का इस्तेमाल करके रेडियो फ्रीक्वेंसी जारी की जिससे जानवर जटिल गतिविधियां कर पाए। बाद में, उन्होंने एक बैल के मस्तिष्क में एक इम्प्लांट लगाया और उस जानवर के साथ रिंग में उतरे और अपने ट्रांसमीटर का इस्तेमाल करके उसे चार्ज होने से पहले ही रोक दिया। शायद सबसे ज्यादा चिंताजनक बात यह थी कि डेलगाडो ने कम से कम 25 लोगों को तार से जोड़ा था। व्यावहारिक रूप से, उनके उपकरण का असर सिर्फ लोगों की आक्रामकता पर था, लेकिन वे मन पर नियंत्रण पाने के लिए लगातार प्रयास करते रहे, एक बार उन्होंने डरावने अंदाज में कहा था, "हमें मस्तिष्क को इलेक्ट्रॉनिक रूप से नियंत्रित करना होगा। किसी दिन सेनाओं और जनरलों को मस्तिष्क के विद्युतीय उत्तेजना से नियंत्रित किया जाएगा।"

जंगल की दुनिया

गोल्डन लंगूर: असम-भूटान की सीमा का सुनहरा रत्न

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य असम और पड़ोसी देश भूटान की सीमा पर बसे घने, शांत और जैव-विविधता से समृद्ध जंगलों में एक अनोखा जीव पाया जाता है-गोल्डन लंगूर। अपनी चमकीली सुनहरी फर और सौम्य व्यवहार के कारण यह बंदर दुनिया की सबसे रहस्यमयी और मनमोहक प्रजातियों में गिना जाता है। हैरानी की बात यह है कि इतना सुंदर और दुर्लभ जीव वैज्ञानिकों की नजर में पहली बार 1950 में आया। उससे पहले तक स्थानीय लोग इसके बारे में जानते तो थे, लेकिन आधुनिक विज्ञान को इसकी उपस्थिति की कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी। गोल्डन लंगूर अपनी लंबी रेशमी पूंछ, नरम सुनहरी से लेकर क्रीम रंग तक फैली फर और अभिव्यक्तिपूर्ण चेहरे की वजह से तुरंत ध्यान आकर्षित करता है। ये आमतौर पर 40 से 50 कीड़ों, फलों, पत्तियों और फूलों पर निर्भर रहते हैं। इनका अधिकांश जीवन ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर बीतता है, जहां ये छोटे समूहों में रहते हुए शांतिपूर्वक भोजन और आश्रय खोजते हैं।

इनकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि ये 'एंडेमिक' प्रजाति हैं, यानी दुनिया में केवल एक सीमित क्षेत्र असम के पश्चिमी हिस्से और भूटान के दक्षिणी इलाकों में ही पाए जाते हैं। यही सीमित आवास इन्हें और भी संवेदनशील बनाता है। जंगलों का कटाव, मानव बस्तियों का फैलाव, सड़क निर्माण और कृषि गतिविधियों के कारण इनका प्राकृतिक घर लगातार सिकुड़ता जा रहा है। इसी वजह से गोल्डन लंगूर आज संकटग्रस्त श्रेणी में शामिल है और इनका संरक्षण बेहद आवश्यक हो गया है। सरकारों, स्थानीय समुदायों और संरक्षण संगठनों द्वारा इनके आवास को बचाने, जागरूकता बढ़ाने और वैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहित करने की लगातार कोशिशें हो रही हैं। गोल्डन लंगूर न केवल प्राकृतिक विरासत का अनमोल हिस्सा हैं, बल्कि यह भी याद दिलाते हैं कि पृथ्वी पर मौजूद हर प्रजाति कितनी कीमती है और उसके संरक्षण की जिम्मेदारी हम सबकी है। - फीचर डेस्क

तीन हजार तारों का भरापूरा परिवार सप्तऋषि तारामंडल

जानकारी

अंतरिक्ष के तारामंडलों में सर्वाधिक लोकप्रिय सप्तऋषि तारामंडल का अस्तित्व 12 .7 करोड़ साल पुराना है। सप्तऋषि तारामंडल तीन हजार तारों का भरा पूरा परिवार है। अमेरिका स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलिना के वैज्ञानिकों के नए शोध में इसका खुलासा हुआ है। सप्तऋषि तारामंडल को प्लीएड्स (सेवन सिस्टर्स) भी कहा जाता है। यह तारा मंडल हिंदू पुराणों में खास स्थान रखता है, तो दुनिया में इससे अधिक लोकप्रिय कोई दूसरा तारामंडल नहीं है। सप्तऋषि में सात तारों को बखूबी नग्न आंखों से देखा जा सकता है। इसके किस्से और चर्चे दुनियाभर में सदियों से मशहूर हैं। मगर नई खोज ने इस तारामंडल की गहराई में झांकने का प्रयास किया और नई जानकारियां सार्वजनिक की हैं।

बबलू चंद्रा
नैनीताल

पूर्व में इस मंडल में माना जाता था कि सप्तऋषि में सात तारों के साथ एक हजार तारों का विशाल समूह है, मगर नई खोज के अनुसार इस तारा मंडल में तीन हजार तारे शामिल हैं, जो एक ही समय में और एक ही गैस के बादलों से इनका निर्माण हुआ है। यह दो हजार प्रकाशवर्ष के दायरे में फैले हुए हैं। तारों की इस अजूबी दुनिया को दूरबीन से बखूबी देखा जा सकता है। अब यह तारे एक दूसरे से बहुत दूर-दूर बिखर चुके हैं।

खोजकर्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि स्वच्छंद तारा समूह एक स्थान में स्थायी नहीं होते हैं। सप्तऋषि मंडल में कुछ मिलियन सालों में आकाश गंगा के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव और पास के बादलों से टक्कर के कारण तारे धीरे-धीरे एक-दूसरे से दूर जा रहे हैं। यानी बिखरने लगे हैं। अगले कुछ लाखों साल बाद इसके सातों चमकीले खूबसूरत तारे अलग-अलग दिशाओं में चले जाएंगे।

सप्तऋषि मंडल का धार्मिक आध्यात्मिक व वैदिक महत्व

हिंदू धर्म और ज्योतिषशास्त्र में सप्तऋषि तारा मंडल का बहुत ऊंचा धार्मिक, आध्यात्मिक और वैदिक महत्व है और पवित्र माना जाता है। सप्तऋषि तारा मंडल को सात महान ऋषियों का आकाशीय रूप माना जाता है, जिनमें कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि व भारद्वाज शामिल हैं। ये सात ऋषि वेदों के द्रष्टा हैं और ब्रह्मज्ञान के संरक्षक माने जाते हैं।

वैज्ञानिकों के अध्ययन का बड़ा केंद्र

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के तारों के वरिष्ठ खगोल वैज्ञानिक डॉ. शशिभूषण पांडे कहते हैं कि सप्तऋषि तारामंडल खगोल वैज्ञानिकों के अध्ययन का बड़ा केंद्र है। समय-समय पर वैज्ञानिक इस पर अध्ययन करते आ रहे हैं। नया अध्ययन बेहद दिलचस्प है। इस तारामंडल की भविष्य में और कई जानकारियां निकलकर सामने आएंगी।

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	85,265 .32	26,033 .75
बढ़त	158 .51	47 .75
प्रतिशत में	0 .19	0 .18

सोना 1,31,600 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,80,000 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

www.amritvichar.com

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2550, राज श्री 1800, फ़ॉर्चून कि . 2245, रविन्द्रा 2445, फॉर्चुन 13 किग्रा 1975, जय जवान 1990, सचिन 2020, सूरज 1990, अवसर 1875, उजाला 1910, गृहणी 13 किग्रा 1870, क्लासिक (किग्रा) 2155, मोर 2185, चक्र टिन 2315, ब्लू 2100, आशीर्वाद मस्टर्ड 2330, स्वास्तिक 2505

किराना : हल्दी निजामाबाद 17000, जीरा 24500, लाल मिर्च 14000-18000, धनिया 9000-11000, अजवायान 13500-20000, मेथी 6000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 31000, (प्रतिकि .) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 840, किसमिस पीली 300-400, मखाना 800-1100

चावल (प्रति कु .) : डबल चाबी सेला 9600, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 4850, शर्बती स्टीम 5200, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 7400, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1-5 किग्रा) 10100, हरी पत्ति नेचुरल 9100, जेनिथ 8400, गलैक्सी 7400, सूमो 4000, गोल्डन सेला 7900, मंसूरी पनघट 4350,लाडली 4000

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9800, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 12000-13400, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली 7250-7450 मलका दाल 7550-8900, मलका छाँटी 7550, दाल उड़द बिलासपुर 8000-9000, मसूर दाल छोटी 10000-11600, दाल उड़द दिल्ली 10300, उड़द साबुत दिल्ली 9900, उड़द धोवा इंदौर 11800, उड़द धोवा 9800-10400,चना काला 7050, दाल चना 7450, दाल चना मोटी 7600, मलका विदेशी 7300, रूपकिशोर बेसन 8000, चना अकोला 6800, डबरा 6900-8800, सच्चा हीरा 8500, मोटा हीरा 10400, अरहर गोला मोटा 7800, अरहर पटका मोटा 8300, अरहर कोरा मोटा 8700, अरहर पटका छोटा 10000-10600, अरहर कोरी छोटी 11000

चीनी : पीलीभीत 4300, द्वारकेश 4280

हल्द्वानी मंडी

चावल : शरबती- 3100, मसूरी- 1100, बासमती- 6500, परमल- 1000

दाल दलहन : काला चना- 4400, साबुत चना दाल- 4100, मूंग साबुत- 6900, राजमा- 9200-12100, दाल उड़द- 7100, साबुत मसूर दाल- 4200, मसूर दाल- 3400, उड़द साबुत- 5500, काबुली चना- 9900, अरहर दाल- 10200, लोबिया/करमानी- 2400

भारत-रूस व्यापार को संतुलित बनाने की जरूरत

केंद्रीय मंत्री गोयल बोले- द्विपक्षीय व्यापार 70 अरब डॉलर तक पहुंचा

- दोनों पक्षों ने 2030 तक 100 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य किया निर्धारित

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत-रूस व्यापार मंच के दौरान केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, रूसी राष्ट्रपति कार्यालय के डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ मक्सिम ओरेशिकन और फिक्की अध्यक्ष अनंत गोयनका।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने गुरुवार को कहा कि भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने तथा इसे और अधिक संतुलित बनाने की दिशा में काम करने के व्यापक अवसर मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता वस्तुएं, खाद्य उत्पाद, मोटर वाहन, ट्रैक्टर, भारी वाणिज्यिक वाहन, स्मार्टफोन जैसे इलेक्ट्रॉनिक, औद्योगिक कल-पुर्जे और वस्त्र भारत से रूस को निर्यात बढ़ाने की क्षमता रखने वाले में क्षेत्रों में शामिल हैं।

गोयल ने उद्योग मंडल फिक्की द्वारा आयोजित भारत-रूस व्यापार मंच की बैठक में कहा द्विपक्षीय व्यापार 70 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच रहा है, लेकिन हम आराम से नहीं बैठ सकते, हमें आगे बढ़ना होगा और संतुलन बनाना होगा। भारत का रूस को निर्यात 2024-25 में 4.9 अरब अमेरिकी डॉलर रहा जबकि आयात 63.8 अरब डॉलर था। इससे व्यापार घाटा करीब 59 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। दोनों पक्षों ने 2030 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने कहा कि भारत सेवा क्षेत्र में भी रूस को बड़ी पेशकश कर सकता है।

रूसी संघ के राष्ट्रपति कार्यालय के डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ मैक्सिम ओरेश्किन ने कहा कि रूस के आयात में भारत की हिस्सेदारी दो प्रतिशत से भी कम है और इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। ओरेश्किन ने कहा कि अधिक संतुलित व्यापार के लिए इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत छह प्रमुख क्षेत्रों में आपूर्ति बढ़ा सकता है जिनमें कृषि, औषधि, दूरसंचार उपकरण, औद्योगिक कल-पुर्जे एवं मानव संसाधन शामिल हैं। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल ने प्रक्रियाओं को सरल बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि भारतीय व्यवसाय रूस को निर्यात बढ़ा सकें।

भारत-कनाडा ने व्यापार पर बातचीत की रूपरेखा और तौर-तरीकों पर की चर्चा

नई दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और कनाडा के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री मनिंदर सिद्धू ने बुधवार को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत शुरू करने की रूपरेखा, उद्देश्यों और तौर-तरीकों पर चर्चा की। दोनों पक्ष हाल ही में इस समझौते पर बातचीत फिर से शुरू करने पर सहमत हुए हैं, जिसे आधिकारिक तौर पर व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) कहा जाता है। इसका उद्देश्य 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 50 अरब डॉलर तक बढ़ाना है। गोयल ने एक्स पर लिखा, कनाडा के साथ व्यापार और वाणिज्यिक संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए मंत्री सिद्धू के साथ सार्थक बातचीत हुई। हमने सीईपीए वार्ता शुरू करने की तैयारियों के तहत समग्र दृष्टिकोण, रूपरेखा, व्यापक उद्देश्यों और तौर-तरीकों पर शुरुआती और व्यापक चर्चा की। उन्होंने अगले साल कनाडा में एक उच्च-स्तरीय व्यापार और निवेश प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने पर भी सहमति जतायी। उल्लेखनीय है कि 2023 में, कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत का हाथ होने का आरोप लगाया था। उसके बाद दोनों देशों के बीच संबंधों में खटास आई थी। उसके बाद कनाडा ने भारत के साथ समझौते पर बातचीत रोक दी थी। सीईपीए एक प्रकार का मुक्त व्यापार समझौता है जिसके तहत दो देश अपने बीच व्यापार की जाने वाली वस्तुओं की अधिकतम संख्या पर सीमा शुल्क को या तो काफी कम कर देते हैं या समाप्त कर देते हैं।

स्बरबैंक भारत में करेगा 10 करोड़ डॉलर का निवेश

नई दिल्ली, एजेंसी

- 10 शहरों में 10 शाखाएं खोलने के लिए आरबीआई से मांगा लाइसेंस

रूस के सबसे बड़े बैंक स्बरबैंक ने गुरुवार को कहा कि वह भारत में अपने कारोबार का धीरे-धीरे विस्तार करने की योजना बना रहा है और तीन वर्ष में यहां 10 करोड़ डॉलर का निवेश करेगा।

स्बरबैंक के सीईओ एवं चेयरमैन हरमन ग्रेफ ने कहा कि हमारे पास यहां पूर्ण बैंकिंग लाइसेंस है। हम बी2बी कारोबार को बढ़ाएंगे और बी2सी (व्यवसाय से उपभोक्ता) खंड में प्रवेश करेंगे। 2010 में अपना परिचालन शुरू करने वाले इस बैंक ने आरबीआई से 10 शहरों में 10 शाखाएं खोलने के लिए लाइसेंस मांगा है। उन्होंने कहा कि हमने भारत के केंद्रीय बैंक से कार्यालय खोलने के लिए 10 शाखा लाइसेंस देने का अनुरोध किया है। वर्तमान में इसकी दो शाखाएं हैं। बेंगलुरु में एक आईटी इकाई है जो आंतरिक डेटा प्रसंस्करण केंद्र के रूप में कार्य करती है।

स्बरबैंक, जेएससी फर्स्ट ने नया म्यूचुअल फंड 'फर्स्ट-इंडिया' किया पेश

रूसी बैंक स्बरबैंक और जेएससी फर्स्ट एसेट मैनेजमेंट ने नया म्यूचुअल फंड 'फर्स्ट-इंडिया' पेश किया है जो निफ्टी 50 सूचकांक के प्रदर्शन से जुड़े निवेश की पेशकश करता है। इससे रूसी खुदरा निवेशकों को भारत के शेयर बाजार में सीधे निवेश का मौका मिलेगा। शेयर बाजार ने गुरुवार को कहा कि इस फंड की पेशकश की घोषणा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया (एनएसई) में आयोजित कार्यक्रम में स्बरबैंक के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं कार्यकारी बोर्ड के चेयरमैन हरमन ग्रेफ ने अपनी भारत की व्यावसायिक यात्रा के दौरान की।

फिच ने भारत की वृद्धि अनुमान को बढ़ाकर किया 7.4%

नई दिल्ली, एजेंसी

- उपभोक्ता खर्च में वृद्धि व जीएसटी सुधारों के साथ बेहतर धारणा के कारण वृद्धि अनुमान को बढ़ाया

साख निर्धारित करने वाली एजेंसी फिच रेटिंग्स ने गुरुवार को चालू वित्त वर्ष के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि अनुमान को 6.9 से बढ़ाकर 7.4 प्रतिशत कर दिया। मुख्य रूप से उपभोक्ता खर्च में वृद्धि और जीएसटी सुधारों के साथ बेहतर धारणा के कारण वृद्धि अनुमान को बढ़ाया गया है।

फिच ने कहा कि घटती मुद्रास्फीति भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को दिसंबर में नीतिगत दरों में एक और कटौती करके इसे 5.25 प्रतिशत पर लाने गुंजाइश देती है। आरबीआई इस साल अब तक मुख्य नीतिगत दर रेपो में एक प्रतिशत की कटौती कर चुका है। उसने कहा कि जुलाई-सितंबर तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर बढ़कर 8.2 प्रतिशत हो गई जो इससे पिछली अप्रैल-जून तिमाही के 7.8 प्रतिशत थी। रेटिंग एजेंसी ने दिसंबर के लिए अपनी वैश्विक आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में कहा कि वित्त वर्ष 2025-26 (मार्च के अंत तक) की शेष अवधि में वृद्धि धीमी रहेगी, लेकिन हमने पूरे वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि अनुमान को सितंबर के 6.9 से बढ़ाकर 7.4 प्रतिशत कर दिया है। इस वर्ष वृद्धि को मुख्य रूप से निजी उपभोक्ता खर्च गति दे रहा है। इसका कारण मजबूत वास्तविक आय गतिशीलता, उपभोक्ता धारणा में सुधार और हाल ही में लागू किए गए वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) सुधारों का प्रभाव है। जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाये जाने के तहत लगभग 375 वस्तुओं पर कर की दरें कम की गई है। इससे 99 प्रतिशत से अधिक उपभोग की वस्तुएं सस्ती हुई हैं। जीएसटी में संशोधित दरें 22 सितंबर से प्रभावी हुई हैं।

2026-27 में जीडीपी वृद्धि धीमी होकर रहेगी 6.4%

फिच को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 2026-27 में जीडीपी वृद्धि दर धीमी होकर 6.4 प्रतिशत रहेगी। इसने अनुमान लगाया है कि वित्तीय स्थिति में सुधार के साथ अगले वित्त वर्ष (2026-27) की दूसरी छमाही में निजी निवेश में तेजी आएगी। खाने-पीने की चीजों की कम कीमतों के कारण अक्टूबर में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति 0 .3 प्रतिशत के अबतक के सबसे निचले स्तर पर आ गई। फिच ने कहा कि घटती मुद्रास्फीति भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को दिसंबर में नीतिगत दर में एक और कटौती करके इसे 5 .25 प्रतिशत करने की गुंजाइश देगी...। आरबीआई शुक्रवार को अपनी मौद्रिक नीति समीक्षा की घोषणा करेगा। फिच के अनुसार, मुख्य मुद्रास्फीति में सुधार और गतिविधियों के मजबूत बने रहने के अनुमान के साथ आरबीआई नीतिगत दर में कटौती के उच्चतम स्तर तक पहुंच गया है और अगले दो साल तक नीतिगत दर 5 .25 प्रतिशत पर बनी रहेगी।

मौद्रिक नीति के फैसलों की आज घोषणा

मुंबई, एजेंसी

- रेपो दर में 0.25 प्रतिशत कटौती किए जाने की उम्मीद, गवर्नर मल्होत्रा एमपीसी की तीन-दिवसीय बैठक में लिए गए निर्णयों की करेंगे घोषणा

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) शुक्रवार को द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा में लिए गए निर्णयों की घोषणा करेगा। विशेषज्ञों ने रेपो दर में 0.25 प्रतिशत कटौती किए जाने की उम्मीद जताई है। आरबीआई की ओर से गुरुवार को जारी बयान के मुताबिक, गवर्नर संजय मल्होत्रा शुक्रवार सुबह मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की तीन-दिवसीय बैठक में लिए गए फैसलों की घोषणा करेंगे। अगली द्विमासिक मौद्रिक नीति पर एमपीसी की बैठक बुधवार को शुरू हुई थी।

यह बैठक घटती मुद्रास्फीति, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की तेज वृद्धि, डॉलर के मुकाबले रुपये के 90 के पार जाने और मौजूदा भू-राजनीतिक तनावों की पृष्ठभूमि में हो रही है। खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट के बीच आरबीआई ने फरवरी से रेपो दर में तीन किस्तों में कुल एक प्रतिशत की कटौती की है। हालांकि पिछली दो बार से रेपो दर को 5.5 प्रतिशत पर स्थिर रखा गया है। कई विशेषज्ञों का कहना है कि वृद्धि दर मजबूत बनी हुई है लेकिन खुदरा मुद्रास्फीति में उल्लेखनीय गिरावट ने प्रमुख अल्पकालिक ऋण दर में कटौती की अतिरिक्त गुंजाइश पैदा कर दी है।

आरबीआई गवर्नर ने भी पिछले महीने कहा था कि नीतिगत ब्याज दरों में और कटौती की गुंजाइश है। भारतीय युवा शक्ति ट्रस्ट (बीवाईएसटी) की संस्थापक लक्ष्मी वेंकटरमण वेंकटेशन ने कहा कि मौजूदा रेपो दर एक साल पहले की 6.5 प्रतिशत दर से काफी नीचे है।

अक्टूबर में मुद्रास्फीति एक दशक के अपने सबसे निचले स्तर 0.25 प्रतिशत पर रही और थोक मूल्यों में 1.21 प्रतिशत की गिरावट आई है। सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को दिए जाने वाले लगभग 70 प्रतिशत ऋण सीधे रेपो दर से जुड़े होते हैं।

उन्होंने कहा कि नीतिगत माहौल में सुधार के बावजूद, ऋण का अंतर अब भी व्यापक है और कार्यान्वयन स्तर पर वित्त तक पहुंच अब भी कठिन है। इस स्थिति को देखते हुए, ब्याज दर में 0.25 से 0.50 प्रतिशत की और कटौती करके उन्हें 5.25 प्रतिशत पर लाना उचित एवं आवश्यक है।

राष्ट्रीय

उपकर से मिला राजस्व राज्यों से होगा साझा

वित्त मंत्री सीतारमण ने लोकसभा में पेश किया स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गुरुवार को लोकसभा में कहा कि पान मसाला के उत्पादन पर उपकर लगाने के प्रावधान का मकसद स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अतिरिक्त संसाधन जुटाना है तथा इससे मिलने वाले राजस्व का एक हिस्सा राज्यों के साथ साझा किया जाएगा। उन्होंने सदन में 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' को चर्चा और पारित कराने के लिए रखते हुए यह भी कहा कि इस विधेयक का माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की व्यवस्था पर कोई असर नहीं पड़ेगा तथा पान मसाला के उपभोग पर 40 प्रतिशत की जीएसटी बरकरार रहेगा।

सीतारमण ने कहा कि इस विधेयक का उद्देश्य दो प्रमुख आयामों स्वास्थ्य सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संसाधनों का स्रोत तैयार करना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरत होती है कि सतत निवेश हो। यह उपकर आवश्यक वस्तुओं पर नहीं लगाया जाएगा। यह सिर्फ ऐसी हानिकारक वस्तुओं पर लगाया जाएगा, जो स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालती हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि इस उपकर को लगाने से पान मसाला का दाम बढ़ेगा तो इन्हें खाने में रुकावट पैदा होगी। इससे जो राजस्व मिलेगा उसमें से एक हिस्सा राज्यों को भी देने का प्रावधान किया गया है ताकि वे स्वास्य संबंधी योजनाओं में इसका उपयोग कर सकें।

लोकसभा में विधेयक पर चर्चा करतीं निर्मला सीतारमण

- बोलीं- जीएसटी की व्यवस्था पर विधेयक का नहीं पड़ेगा कोई असर
- पान मसाला के उपभोग पर 40 प्रतिशत की जीएसटी रहेगा बरकरार

राजस्व हानि की भरपाई के लिए था क्षतिपूर्ति उपकर

एक जुलाई 2017 को जीएसटी की शुरूआत हुई थी तो जीएसटी कार्यान्वयन के कारण राज्यों को होने वाले राजस्व नुकसान की भरपाई के लिए 30 जून 2022 तक पांच वर्षों के लिए क्षतिपूर्ति उपकर की व्यवस्था लागू की गई थी। क्षतिपूर्ति उपकर की व्यवस्था को बाद में 31 मार्च 2026 तक चार साल के लिए बढ़ा दिया गया था और इसके संग्रह का उपयोग उस ऋण को चुकाने के लिए किया जा रहा है जो केंद्र ने राज्यों को कोविड महामारी की अवधि के दौरान जीएसटी राजस्व हानि की भरपाई के लिए लिया था।

सड़क दुर्घटना पीड़ितों के कैशलेस उपचार के 20% अनुरोध खारिज

नई दिल्ली। सरकार ने बताया कि सड़क दुर्घटना के पीड़ितों के कैशलेस उपचार की योजना के तहत किए 6,833 अनुरोधों में से अब तक सिर्फ 5,480 पीड़ित ही पात्र मिले हैं, और बाकी 1,353 मामले (20 प्रतिशत) पुलिस ने खारिज किए हैं। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने लोकसभा में बताया कि मोटर वाहन दुर्घटना कोष के तहत कुल 73,88,848 रुपये की धनराशि दी गई है। गडकरी ने कहा कि सड़क दुर्घटना के पीड़ितों के 'कैशलेस' उपचार की योजना, 2025 के तहत, हर दुर्घटना के मामले में पीड़ित का 1.5 लाख रुपये तक का 'कैशलेस' उपचार किया जाएगा।

विधेयक का उद्देश्य स्वास्थ्य से जुड़े खर्चों के लिए संसाधन जुटाना

उन्होंने कहा कि पान मसाला को लेकर जीएसटी की जो व्यवस्था है, उसमें कोई बदलाव नहीं होगा। जीएसटी के तहत पान मसाला के उपभोग पर सबसे ज्यादा 40 प्रतिशत कर भी लगाया जा रहा है। 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' पान मसाला पर लगाए जाने वाले क्षतिपूर्ति उपकर की जगह लेगा। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े खर्चों के लिए अतिरिक्त संसाधन जुटाना है। इसके तहत उन मशीनों या प्रक्रियाओं पर उपकर लगाया जाएगा, जिनके माध्यम से उक्त वस्तुओं का निर्माण या उत्पादन किया जाता है।

नीट परीक्षा ने शिक्षा का व्यावसायीकरण किया : कांग्रेस

कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने देश में कोचिंग प्रणाली पर सवाल उठाते हुए सरकार से मांग की कि चिकित्सा प्रवेश परीक्षा नीट की समीक्षा की जाए। टैगोर ने कहा कि राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट) ने मेरिट को बढ़ावा नहीं, बल्कि निजी कोचिंग संस्थानों को मजबूत करके व स्कूलों को कमजोर कर शिक्षा का व्यावसायीकरण किया है।

टीईटी परीक्षा पास करने की अनिवार्यता में हस्तक्षेप करे सरकार

देश के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पहले से कार्यरत शिक्षकों के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) उत्तीर्ण करने की अनिवार्यता संबंधी अदालती आदेश का हवाला देते हुए गुरुवार को कुछ सांसदों ने सरकार से हस्तक्षेप का अनुरोध किया। शिवसेना के धैर्यशील माने ने लोकसभा में कहा कि पहले से सेवारत प्राथमिक शिक्षकों के लिए टीईटी परीक्षा अनिवार्य करने की वजह से उनके भविष्य को लेकर अनिश्चितता की स्थिति बन गई है।

जल जीवन मिशन की शिकायतों पर होगी कार्रवाई : पाटिल

नई दिल्ली। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल ने लोकसभा में पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि 'जल जीवन मिशन' को लेकर सांसदों की तरफ से जो शिकायतें आई हैं, उन पर कार्रवाई की जाएगी और समाधान निकाला जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी हर घर नल से जल पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं तथा इस योजना में किसी भी तरह की गड़बड़ी स्वीकार नहीं की जाएगी। पाटिल ने बताया कि 'जल जीवन मिशन' के तहत अब तक 15 करोड़ घरों में पानी पहुंचा दिया गया है तथा चार करोड़ और घरों में पानी पहुंचाने का काम जारी है। इस बार भी योजना के लिए 67 हजार करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।

वक्फ पंजीकरण की समयसीमा बढ़ाने की मांग

विपक्ष के कई सांसदों ने लोकसभा में सरकार से आग्रह किया कि उम्मीद पोर्टल पर वक्फ संपत्तियों के पंजीकरण की समयसीमा बढ़ाई जाए क्योंकि अब भी बहुत सारी संपत्तियों का पंजीकरण नहीं हो पाया है। केंद्र ने सभी वक्फ संपत्तियों की जियो-टैगिंग के बाद डिजिटल सूची बनाने के लिए छह जून को एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तीकरण, दक्षता और विकास (उम्मीद) अधिनियम केंद्रीय पोर्टल शुरू किया था। 'उम्मीद' पोर्टल के प्रावधान के अनुसार, देश भर में सभी पंजीकृत वक्फ संपत्तियों का विवरण अनिवार्य रूप से छह महीने के भीतर अपलोड किया जाना है। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद, टीएमसी की सजदा अहमद ने शून्यकाल के दौरान यह मुद्दा उठाया।

वीजा जारी करना किसी भी सरकार का संप्रभु अधिकार

नई दिल्ली, एजेंसी

- विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा- अमेरिका के पास सुरक्षा आधार पर निर्णय लेने का अधिकार

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गुरुवार को राज्यसभा में कहा कि वीजा जारी करना किसी भी सरकार का संप्रभु अधिकार है और अमेरिका के पास उसके राष्ट्रीय सुरक्षा आकलन के आधार पर वीजा देने या नहीं देने का निर्णय लेने का अधिकार है। उच्च सदन में पूरक प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने बताया कि अमेरिका ने हाल ही में, ताजा घोषणा बुधवार को, वीजा निर्णयों को पूरी तरह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा फैसला घोषित किया है।

जयशंकर ने यह बात ऐसे समय पर कही है जब इस बात पर चिंता जताई जा रही है कि अमेरिका ने वीजा 'स्क्रीनिंग' प्रणाली को और कड़ा कर दिया है और अब वह आवेदकों के सोशल मीडिया खातों की विस्तृत जांच भी करेगा, जिसका असर भारतीय आवेदकों पर भी पड़ने का अनुमान है। जयशंकर ने कहा कि वीजा जारी करना किसी भी सरकार का संप्रभु अधिकार है। अमेरिका के मामले में, उनका यह स्पष्ट मत है और ताजा घोषणा कल की है कि हर वीजा निर्णय एक राष्ट्रीय सुरक्षा निर्णय है। इसलिए वे किसी व्यक्ति की राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित स्थिति का आकलन कर वीजा पर निर्णय लेने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिकी सरकार ने कहा है कि छात्र वीजा मामलों में वे सभी आवेदकों से सोशल मीडिया खातों की गोपनीयता सेटिंग को सार्वजनिक करने को कहेंगे ताकि वे सोशल मीडिया पोस्ट की पूरी तरह जांच कर सकें।

न्यायाधीशों की पद पर बने रहने की आयु सीमा बढ़ाने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं : मेघवाल

सरकार ने गुरुवार को राज्यसभा में कहा कि देश की विभिन्न अदालतों में न्यायाधीशों की पद पर बने रहने की आयु सीमा बढ़ाने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है। उच्च सदन में विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने भाजपा के संजय सेठ द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में यह बात कही। सेठ ने सरकार को ध्यान दिलाया कि सरकार द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में उठाए गए विभिन्न कदमों से देश में नागरिकों की औसत आयु सीमा बढ़ गयी है। अमेरिका में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश आजीवन सेवा देते हैं, जबकि ब्रिटेन, बेल्जियम, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में इनकी आयु 70 वर्ष है। भारत में जिला अदालतों में न्यायाधीशों की आयु सीमा 60 वर्ष, उच्च न्यायालयों में 62 वर्ष और उच्चतम न्यायालय में 65 वर्ष है। उन्होंने सरकार से जानना चाहा कि अदालतों में लंबित मामलों की बड़ी संख्या को देखते हुए क्या वह न्यायाधीशों की पद पर बने रहने की आयु सीमा बढ़ाने पर विचार कर रही है। इसके जवाब में मेघवाल ने कहा कि अभी कोई ऐसा प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए बनाएं राष्ट्रीय कानून

राज्यसभा सदस्य फौजिया खान ने गुरुवार को डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कानून बनाने की मांग की। राकांपा (एसपी) की नेता खान ने कहा कि डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी जीवनरक्षक होते हैं और लोग उन पर ईश्वर के बाद सर्वाधिक भरोसा करते हैं। लेकिन आज यही डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी धमकाए जा रहे हैं, उन पर हमले हो रहे हैं, उन्हें गालियां दी जा रही हैं और भीड़ द्वारा घेरा भी जा रहा है। उन्होंने कहा कि समस्या का स्तर इतना बड़ा है कि उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

देवी-देवताओं पर रेवंत की टिप्पणी को लेकर भाजपा ने कांग्रेस को घेरा

नई दिल्ली। देवी-देवताओं पर दिए तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी के बयान को लेकर भाजपा ने गुरुवार को कांग्रेस पर निशाना साधा और मांग की कि राहुल गांधी इस मामले पर चुप्पी तोड़ें और साफ करें कि क्या वह जिहाद के साथ खड़े दिखना चाहते हैं।

कांग्रेस की बैठक में रेड्डी ने कहा था कि पार्टी सभी को साथ लेकर चलती है। यह बात उन्होंने हिंदू धर्म से तुलना करते हुए की और कहा कि भक्त कई भगवानों की पूजा करते हैं। हिंदुओं के कितने भगवान हैं? तीन करोड़? जिनकी शादी नहीं हुई है उनके लिए हनुमान हैं। जिनकी दो बार शादी हुई है उनके लिए एक और भगवान हैं। इस टिप्पणी पर नाराजगी जताते हुए भाजपा सांसद संबित पात्रा ने रेड्डी के बयान को सनातन विरोधी बताया।

लंबित तेजाब हमले के मामलों का ब्योरा दें हाईकोर्ट

- सुप्रीम कोर्ट ने चार सप्ताह का समय देते हुए 16 वर्षों से लंबित मामले को बताया शर्मनाक

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को सभी हाईकोर्ट को निर्देश दिया कि वे देश भर में तेजाब हमले के मामलों से संबंधित लंबित मुकदमों का ब्योरा चार सप्ताह के भीतर प्रस्तुत करें। न्यायालय ने दिल्ली की अदालत में तेजाब हमले का एक मामला 16 वर्षों से लंबित रहने को शर्मनाक करार दिया।

प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने तेजाब हमले की पीड़िता शाहीन मलिक द्वारा दायर जनहित याचिका पर केंद्र और दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग को भी नोटिस जारी किए। पीठ ने मलिक के मुकदमे में लंबे समय से हो रही देरी को राष्ट्रीय स्तर पर शर्म की बात कहा। यह मुकदमा रोहिणी की अदालत में 2009 से लंबित है। पीठ ने कहा कि यह न्याय व्यवस्था का कैसा मजाक है। यह बहुत शर्मनाक है। अगर देश की राजधानी में ऐसे मामलों से निपटा नहीं जा सकता तो कौन इससे निपटेगा? सीजेआई ने मलिक से कहा कि वह याचिका में ही आवेदन दायर कर बताएं कि मामला अभी तक समाप्त क्यों नहीं हुआ है।

सेना पर टिप्पणियों के मामले में राहुल गांधी पर मुकदमा चलाने पर लगी रोक बढ़ी

सुप्रीम कोर्ट ने 2022 में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान सेना पर की आपत्तिजनक टिप्पणियों के मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ मुकदमा चलाने पर लगी रोक की अवधि अगले साल 22 अप्रैल तक के लिए बढ़ा दी है। न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने गुरुवार को गांधी की अपील स्वीकार कर ली और कहा कि वह मामले की विस्तार से सुनवाई करेगी। राहुल गांधी ने निचली अदालत के समन के खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय का रुख किया था लेकिन उच्च न्यायालय ने 29 मई को उनकी याचिका खारिज कर दी थी। इसके बाद गांधी ने उच्च न्यायालय के फैसले को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी थी।

वर्ल्ड ब्रीफ

बांग्लादेश में 4.1 तीव्रता के भूकंप के झटके, नुकसान नहीं

ढाका। बांग्लादेश में बृहस्पतिवार तड़के 4.1 तीव्रता का भूकंप आया जिसके झटके राजधानी ढाका और आसपास के जिलों में महसूस महसूस किए गए। समाचार पोर्टल 'टीबीएसन्यूज डॉट नेट' ने यूरोपीय भूमध्यसागरीय भूकंप विज्ञान केंद्र के हवाले से बताया कि भूकंप स्थानीय समयानुसार सुबह छह बजकर 14 मिनट पर आया और उसका केंद्र नरसिंगडी में 30 किलोमीटर की गहराई पर स्थित था। हालांकि भूकंप में जान माल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। खबर के अनुसार भूकंप का केन्द्र कम गहराई पर होने के कारण ढाका और आसपास के जिलों के निवासियों को हल्के झटके ही महसूस हुए।

खालिदा जिया की हालत नाजुक, लंदन ले जाने की तैयारी

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की हालत नाजुक बनी हुई है और उनका परिवार उन्हें इलाज के लिए लंदन ले जाने की तैयारी कर रहा है। लंदन में जिया के बेटे एवं बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के कार्यवाहक अध्यक्ष तारिक रहमान रहते हैं। खालिदा जिया (80) को हृदय और फेफड़ों में संक्रमण की शिकायत के बाद 23 नवंबर को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। चार दिन बाद, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ने पर उन्हें कोरोनरी केयर यूनिट में भर्ती किया गया।

अमेरिका: गोलीबारी में तीन पुलिस अधिकारी घायल, हमलावर ढेर

ओमाहा। ओमाहा में एक गैस स्टेशन पर हुई गोलीबारी में तीन पुलिस अधिकारी घायल हो गए, जबकि संदिग्ध हमलावर मारा गया। पुलिस प्रमुख टॉड श्माडरर ने बताया कि संदिग्ध हमलावर की उम्र 20 वर्ष के आसपास थी, जिसने दोपहर के समय किराने की दुकान पर पहले 61 वर्षीय व्यक्ति के सीने पर कई गोलियां मारी थीं। अधिकारियों ने घटनास्थल से संदिग्ध की कार की लाइसेंस प्लेट नंबर हासिल की और उसकी कार का पीछा करते हुए गैस स्टेशन तक पहुंचे।

रूस: आतंकवाद के समर्थन के आरोप में रोब्लॉक्स पर प्रतिबंध

मॉस्को। रूस ने लोकप्रिय गेमिंग प्लेटफॉर्म 'रोब्लॉक्स' पर आतंकवाद के समर्थन और बच्चों को एलजीबीटी-संबंधित कंटेंट परोसने के आरोप में प्रतिबंध लगा दिया है। रूसी मीडिया के अनुसार रोब्लॉक्स हिंसक अपराधों के आह्वानों में भी शामिल रहा है। बयान में कहा गया कि यह गेमिंग प्लेटफॉर्म ऐसे असभ्य कंटेंट से भर गया था जो बच्चों के आध्यात्मिक और नैतिक विकास पर नकारात्मक असर डाल सकता है।

मोजाम्बिक में विस्थापितों के लिए 60 लाख अमेरिकी डॉलर आवंटित

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी

- हिंसा के कारण 1,20,000 लाख विस्थापित झेल रहे हैं समस्याएं

संयुक्त राष्ट्र ने उत्तरी मोजाम्बिक प्रांत में हिंसा के कारण विस्थापित हुए लोगों के लिए 60 लाख अमेरिकी डॉलर आवंटित किए हैं। नामपुला प्रांत में 1,20,000 लोग विस्थापित हुए हैं जिनके लिए केंद्रीय आपातकालीन प्रतिक्रिया कोष (सीईआरएफ) से बुधवार को सहायता जारी की गई।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी ने कहा कि मंगलवार तक लगभग एक लाख लोग मध्य नवंबर में प्रांत में हिंसा फैलने के बाद से अपने घरों से पलायन कर चुके हैं। ओसीएचए ने कहा, विस्थापित लोगों में से दो तिहाई से अधिक बच्चे हैं जो अब भीड़भाड़ वाले स्कूलों, अस्थायी संरचनाओं, खुले स्थानों या पहले से ही कमजोर मेजबान परिवारों में आश्रय ले रहे हैं। आश्रय के अलावा उनके पास सुरक्षित जल, संरक्षण, स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता सेवाओं तक भी सीमित पहुंच है जबकि कुछ क्षेत्रों में हैजा फैल रहा है। कार्यालय ने कहा कि महत्वपूर्ण सहायता का भंडार लगभग समाप्त हो चुका है और सीईआरएफ की धनराशि से एराटी और मेम्बा जिलों में लोगों के लिए जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य सहायता, बुनियादी घरेलू सामान, साथ ही आश्रय, सुरक्षा और आजीविका सहायता को प्राथमिकता दी जाएगी।

भारत-रूस संबंध

जवाहरलाल नेहरू से नरेंद्र मोदी तक

भारत की आजादी के वक्त से ही रूस के साथ उसके संबंध गहरे और बहुआयामी रहे हैं। पिछले करीब सात दशक तक इन संबंधों का आधार आपसी विश्वास के साथ रणनीतिक सहयोग भी रहा है। रूस के साथ भारत के आधिकारिक राजनयिक संबंध स्वतंत्रता से ठीक पहले 13 अप्रैल 1947 को स्थापित किए गए थे। शीत युद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्ष नीति के बावजूद सोवियत संघ भारत का मजबूत सहयोगी बना। इस साझेदारी ने रक्षा, भिलाई स्टील प्लांट जैसे भारी उद्योग और अंतरिक्ष सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अगस्त 1971 में हस्ताक्षरित 'शांति, मैत्री और सहयोग की संधि' इन संबंधों में एक मील का पत्थर थी। सोवियत संघ के विघटन के बाद भी यह रिश्ता बना रहा। अक्टूबर 2000 में 'भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी पर घोषणा' पर हस्ताक्षर किए गए, और 2010 में इसे 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी' तक बढ़ाया गया।

जब-जब सच्चा दोस्त साबित हुआ रूस

- 1971 के युद्ध के दौरान जब अमेरिका और चीन पाकिस्तान का समर्थन कर रहे थे, तब सोवियत संघ ने भारत को महत्वपूर्ण राजनयिक और सैन्य सहायता प्रदान की।
- रूस और सोवियत संघ ने कश्मीर मुद्दे और अन्य राजनीतिक मामलों पर भारत के रुख का समर्थन करते हुए कई बार संयुक्त राष्ट्र में अपने वीटो पावर का इस्तेमाल किया।
- भारत के पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' का 1975 में सोवियत रॉकेट से प्रक्षेपण, बाद में ब्रह्मोस मिसाइल जैसी संयुक्त परियोजनाओं ने गहरे तकनीकी सहयोग को दर्शाया।
- भारत की ओर से 1998 में पोखरण परमाणु परीक्षण पर पश्चिमी देशों की ओर से प्रतिबंध लगाए जाने के बाद भी रूस ने भारत के साथ अपने संबंध पूर्ववत बनाए रखे।

संबंधों का वर्तमान महत्व

- भारत अमेरिका के साथ संबंध बढ़ाना चाहता है लेकिन रूस उसकी रणनीतिक स्वायत्तता का आधार हैं।
- भारत अपनी सैन्य जरूरतों के लिए अभी भी बड़े पैमाने पर रूसी उपकरणों और स्पेयर पार्ट्स पर निर्भर है।
- यूक्रेन संघर्ष के दौरान भारत ने रूस से तेल आयात जारी रखा जो उसकी ऊर्जा सुरक्षा में मददगार रहा।
- दोनों देश संयुक्त राष्ट्र, एससीओ और ब्रिक्स जैसे बहुपक्षीय मंचों पर एक-दूसरे का सहयोग करते हैं।

रूस और पश्चिमी देश

- रूस के साथ संबंध रक्षा, ऊर्जा और राजनीतिक समर्थन जैसे पारंपरिक क्षेत्रों में कसौटी पर खरे उतरे हैं। पश्चिमी देशों के साथ भारत के संबंध लेनदेन वाले और वैश्विक परिदृश्य से प्रभावित हैं, रूस के साथ ऐतिहासिक भावनाओं पर टिके हैं।

78 साल : 1947 से अब तक

- जवाहर लाल नेहरू ने सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासकर गुटनिरपेक्ष आंदोलन के ढांचे के भीतर।
- इंदिरा गांधी के समय में भारत-रूस संबंध चरम पर पहुंचे। इस बीच 1971 की शांति, मैत्री और सहयोग की संधि एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी।
- लियोनिद ब्रेजनेव ने सोवियत नेता के रूप में इंदिरा गांधी के साथ 1971 की संधि में निभाई, जिससे मजबूत सैन्य और आर्थिक संबंधों की नींव पड़ी।
- अटल बिहारी वाजपेयी और पुतिन ने वर्ष 2000 में रणनीतिक साझेदारी की घोषणा पर हस्ताक्षर किए, जिसने पुराने संबंधों को एक नई दिशा दी।
- रूस के सबसे लंबे समय नेता रहे पुतिन ने भारत के साथ संबंधों को लगातार प्राथमिकता दी। उनके कार्यकाल में कई क्षेत्रों में साझेदारी मजबूत हुई है।
- मनमोहन सिंह ने पुतिन और दिमित्री मेदवेदेव के साथ असैन्य परमाणु सहयोग जैसे प्रमुख समझौते किए, जिससे ऊर्जा सुरक्षा क्षेत्र में आगे बढ़े।
- नरेंद्र मोदी ने रूस के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए रखी, वार्षिक शिखर सम्मेलनों में भाग लिया है और द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने पर जोर दिया है।

अमेरिकी सांसदों का रूबियो को पत्र पाकिस्तान पर लगाएं कड़े प्रतिबंध

शरीफ और मुनीर पर मानवाधिकार संकट और अंतर्राष्ट्रीय दमन का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी

वाशिंगटन से डेमोक्रेटिक पार्टी की सांसद प्रमिला जयपाल की अगुवाई में अमेरिकी संसद के कई सदस्यों ने विदेश मंत्री मार्को रुबियो को एक पत्र लिखकर पाकिस्तान पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। इन सांसदों का कहना है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर की सरकार में मानवाधिकार संकट और अंतरराष्ट्रीय दमन लगातार बढ़ रहा है। सांसदों ने उन पर वीजा पाबंदी से लेकर उनकी संपत्ति फ्रीज करने तक कई प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया है।

जयपाल की ओर से बुधवार को सार्वजनिक किए गए इस पत्र में अमेरिका में प्रभावित लोगों की सुरक्षा और इस्लामाबाद के साथ डील में मानवाधिकार स्तर को बनाए रखने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर अमेरिकी प्रशासन से औपचारिक जवाब भी मांगा गया है। पत्र में इन घटनाओं को पाकिस्तान में लोकतंत्र के पतन के एक बड़े पैटर्न से जोड़ा गया है, जिसमें पत्रकारों, विपक्षी नेताओं और नागरिक समाज पर कार्रवाई का जिक्र किया गया है। पत्र में लिखा गया है कि हाल के सालों में, पाकिस्तान में तानाशाही के गलत इस्तेमाल के खिलाफ बोलने वाले अमेरिकी नागरिकों और निवासियों को धमकियों, डर और परेशानी का सामना करना पड़ा है। ये परेशानियां अक्सर पाकिस्तान में उनके परिवारों तक भी पहुंच जाती हैं।

पत्र में यह भी कहा गया है कि इन तरीकों में मनमाने ढंग से हिरासत में लेना, जबरदस्ती करना और हिंसा करना शामिल है। सरकार इन तरीकों से बाहर से आए लोगों और उनके रिश्तेदारों को निशाना बनाती है। सांसदों ने कहा कि इसके अलावा, उन्होंने अमेरिका की जमीन पर विदेशी दखल के लिए एक खतरनाक मिसाल कायम की है। उन्होंने कहा, हालांकि हम मानते हैं कि आतंकवाद विरोध और दूसरे मुद्दों पर अमेरिका-पाकिस्तान साझेदारी अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरी है, लेकिन यह साझेदारी मानवाधिकारों, लोकतांत्रिक शासन और कानून के राज के लिये आपसी प्रतिबद्धता पर आधारित होनी चाहिए।

विदेश विभाग से मांगा जवाब : पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले सांसदों ने पूछा कि अमेरिकी प्रशासन पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व के साथ इस तरह से कैसे जुड़ने का प्लान बना रहा है, जिससे मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के लिए अमेरिका के बताए गए वचनों को बनाए रखा जा सके और तानाशाही व्यवहार को सही ठहराने की किसी भी सोच से बचा जा सके। उन्होंने विदेश विभाग से 17 दिसंबर तक लिखकर जवाब देने को कहा है।

तानाशाही शासन की ओर से बढ़ रहा है पाकिस्तान

सांसदों ने दावा किया कि पाकिस्तान तानाशाही शासन की तरफ ओर बढ़ रहा है। राजनीतिक विरोधियों को बिना किसी औपचारिक आरोप के जेल में डाला जा रहा है, स्वतंत्र पत्रकारों को धमकाया जा रहा है या देश निकाला दिया जा रहा है। नागरिकों को भी ऑनलाइन गतिविधि के लिए हिरासत में लिया जा रहा है। उन्होंने महिलाओं, धार्मिक अल्पसंख्यकों और बलूचिस्तान सहित अन्य जातीय समूहों पर बढ़ते खतरे की ओर भी इशारा किया। सांसदों का कहना है कि ये समूह सरकारी दमन का खामियाजा भुगत रहे हैं। सांसदों ने ऐसी घटनाओं को नागरिक समाज को कुचलने और सैन्य शासन की सभी चुनौतियों को खत्म करने की एक सोचे-समझी साजिश करार देते हुए कहा, पाकिस्तान तानाशाही के बढ़ते संकट का सामना कर रहा है, जहां लोकतांत्रिक संस्थाओं और बुनियादी आजादी को व्यवस्थित तरीके से खत्म किया जा रहा है।

कट्टरपंथी इस्लाम विश्व और अमेरिका के लिए खतरा : मार्क रूबियो

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने चेतावनी दी कि कट्टरपंथी इस्लाम की ज्यादा क्षेत्रों और अधिक लोगों को नियंत्रित करने की महत्वाकांक्षा दुनिया के लिए एक आसन्न खतरा है। उन्होंने घोषणा की कि अमेरिका नाइजीरिया और विश्व स्तर पर ईसाइयों के खिलाफ हिंसा को धन मुहैया कराने या उनका समर्थन करने वालों के लिए वीजा प्रतिबंधित करेगा। रूबियो ने एक साक्षात्कार में कट्टरपंथी इस्लामवादियों को संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए सबसे बड़ा खतरा बताते हुए दावा किया कि इस्लामी कट्टरपंथी अमेरिका को पृथ्वी पर बुराई का मुख्य स्रोत मानते हैं। रूबियो ने कहा, यह विचार कि कट्टरपंथी इस्लाम इराक या सीरिया के किसी प्रांत को नियंत्रित करके ही संतुष्ट रहेगा, ऐसा इतिहास से सिद्ध नहीं होता है। कट्टरपंथी इस्लाम ने दिखाया है कि उनकी इच्छा सिर्फ दुनिया के एक हिस्से पर कब्जा करके अपने छोटे से खलीफा से संतुष्ट होना नहीं है, वे विस्तार करना चाहते हैं।

हसीना के बेटे जॉय के खिलाफ अरेस्ट वारंट

ढाका। बांग्लादेश में एक विशेष न्यायाधिकरण ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के निर्वासित बेटे साजिब वाजेद जॉय के खिलाफ बृहस्पतिवार को गिरफ्तारी वारंट जारी किया। यह वारंट मानवता के खिलाफ अपराध करने के आरोप में उनकी मां को मौत की सजा सुनाने के एक महीने बाद जारी किया गया है।

बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण (आईसीटी-बीडी) के एक अभियोजक ने बताया, न्यायाधिकरण ने जुलाई के विद्रोह के दौरान मानवता के विरुद्ध अपराध के लिए जॉय के विरुद्ध दर्ज मामले में वारंट जारी किया है। आईसीटी मामलों के तत्कालीन कनिष्ठ मंत्री जुनैद अहमद पलक के विरुद्ध भी ऐसा वारंट जारी किया गया था। पलक पहले से ही जेल में हैं।

ब्रिटेन: नर्व एजेंट हमले के लिए रूसी खुफिया एजेंसी पर पाबंदी

लंदन, एजेंसी

- पुतिन पर लगाया आदेश देने का आरोप, रूस का राजदूत तलब

ब्रिटेन ने 2018 के 'नर्व एजेंट' हमले को लेकर बृहस्पतिवार को रूस की खुफिया एजेंसी जीआरयू पर प्रतिबंध लगा दिया और इसके साथ मॉस्को के राजदूत को भी तलब किया। ब्रिटेन ने यह कदम एक जांच में निकले निष्कर्ष के बाद उठाया है, जिसमें दावा गया कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन 2018 में ब्रिटेन की भूमि पर हुए 'नर्व एजेंट' हमले के लिए जिम्मेदार थे।

'नर्व एजेंट' ऐसे जहरीले रसायन हैं जो सीधे तंत्रिका तंत्र पर असर करते हैं। ये मस्तिष्क तक जाने वाले संकेतों को बाधित कर देते हैं, जिससे शरीर ठीक तरह से काम करना बंद कर देता है। ब्रिटिश सरकार ने कहा कि सैलिसबरी शहर में हुए उस हमले के लिए जीआरयू पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया जा रहा है, जिसमें ब्रिटेन आए पूर्व सोवियत एजेंट सर्गेई स्क्रिपल को निशाना बनाया गया था। 'नोविचोक नर्व एजेंट' के संपर्क में आने से एक ब्रिटिश महिला डॉन स्टर्गेस की मौत हो गई थी। स्टर्गेस की मौत की जांच का नेतृत्व करने वाले ब्रिटेन के उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एंथनी ह्यूजेस ने कहा कि स्क्रिपल पर हमले को पुतिन की ओर से उच्चतम स्तर पर अधिकृत किया गया होगा।

अंतरिक्ष मिशन के लिए मिल सकते हैं रूस से सेमी क्रायोजेनिक इंजन

इंजन के साथ तकनीक भी हस्तांतरित करने को रूस सहमत

मॉस्को, एजेंसी

रूस अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत के साथ अपने संबंध मजबूत करते हुए अपने सेमी-क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन आरडी-191 की आपूर्ति करने और इसके निर्माण की तकनीक भारत को देने के लिए सहमत है। यह कदम भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए बेहद महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की गुरुवार से शुरू हो रही दो दिवसीय भारत यात्रा के दौरान इस बेहद खास सौदे की घोषणा हो सकती है।

रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोस्मोस के महानिदेशक दिमित्री बकनोव ने एक टेलीविजन चैनल को बताया कि भारत के साथ रॉकेट इंजन का सौदा होने वाला है। उन्होंने मानव अंतरिक्ष उड़ान और अंतरिक्ष स्टेशन के विकास में भी सहयोग की संभावना जताई। बकानोव ने इंजन के प्रकार का उल्लेख नहीं किया, लेकिन विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि यह एक सेमी-क्रायोजेनिक इंजन होगा। दोनों देशों के बीच रॉकेट इंजन सौदे पर पिछले कुछ वर्षों से बातचीत चल रही थी। यह रूस और भारत के बीच दूसरा प्रमुख सौदा होगा, इससे पहले ब्रह्मोस मिसाइल का संयुक्त उद्यम सफलतापूर्वक चल रहा है।

- पुतिन की दो दिवसीय भारत यात्रा के दौरान हो सकते हैं अहम सौदे

यह दूसरी बार होगा जब भारत रूस से रॉकेट इंजन खरीदेगा।

पहले भारत ने इसरो के जीएसएलवी रॉकेट के शुरुआती चरण के लिए सात क्रायोजेनिक इंजन खरीदे थे, लेकिन अमेरिकी भूराजनीतिक दबाव के कारण रूस ने बाद में आपूर्ति रोक दी थी और कोई तकनीक हस्तांतरण नहीं किया गया था। भारत अपने मौजूदा भारी-लिफ्ट रॉकेट एलवीएम3 (लॉन्च व्हीकल मार्क-3) में आरडी-191 सेमी-क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग करना चाहता है। वर्तमान में, एलवीएम3 की पेलोड क्षमता भूस्थिर कक्षा के लिए केवल चार टन है। इसरो इस क्षमता को पांच टन तक बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। इसके लिए शक्तिशाली क्रायोजेनिक इंजन के साथ एलवीएम3 के दूसरे चरण के तरल इंजन को सेमी-क्रायोजेनिक इंजन से बदला जाएगा। ये संवर्द्धन पेलोड क्षमता को बढ़ाएंगे और न्यूस्पेस इंडिया के जरिए वाणिज्यिक पेशकशों के लिए रॉकेट को तैयार करेंगे। अभी भारत को चार टन से अधिक वजन वाले संचार उपग्रहों को कक्षा में स्थापित करने के लिए विदेशी एजेंसियों को भारी रकम चुकानी पड़ती है।

नागरिक उड्डयन क्षेत्र में सहयोग की घोषणा

मास्को। रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री डेनिस मंटुरोव ने कहा है कि उनका देश नागरिक उड्डयन क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग को और बढ़ाने के लिए तैयार है। मंटुरोव ने एक साक्षात्कार में स्पुतनिक से कहा, रूस एक ऐसा भागीदार है जो भारत के साथ न केवल अत्याधुनिक विमानन तकनीक की आपूर्ति करके, बल्कि भारत के घरेलू विमानन उद्योग के विकास के लिए भी काम करने के लिए तैयार है। हमारा मानना है कि आपसी हित सैन्य क्षेत्र से आगे जाकर नागरिक उड्डयन में भी सहयोग का विस्तार करने में हो सकता है। गौरतलब है कि दोनों देशों का विमानन सहयोग का एक लंबा इतिहास रहा है। सुप्रसिद्ध मिग-21 और सुखोई-30एमकेआई बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान भारत में लाइसेंस के तहत बनाए जाते हैं।

कैलिफोर्निया के रेगिस्तान में गिरा अमेरिका का एफ-16

ट्रोना। अमेरिकी वायुसेना के विशिष्ट 'थंडरबर्ड्स' दस्ते का एक लड़ाकू विमान दक्षिणी कैलिफोर्निया के रेगिस्तान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। पायलट समय रहते बाहर निकलने में सफल रहा।

सैन बर्नार्डिनो काउंटी के दमकल विभाग के अनुसार, पायलट का अस्पताल में इलाज किया जा रहा है और उसे जानलेवा चोट नहीं लगी हैं। नेवादा में स्थित नेलिस एयरफोर्स बेस की ओर से जारी बयान के अनुसार, एफ-16सी फाइटिंग फाल्कन बुधवार सुबह

लगभग 10:45 बजे कैलिफोर्निया में नियंत्रित हवाई क्षेत्र में प्रशिक्षण मिशन के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हुआ।

दमकल विभाग ने बताया कि विमान लॉस एंजिलिस से 290 किमी उत्तर में स्थित मोजावे रेगिस्तान के ट्रोना के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ।

ऑस्ट्रेलिया ने की यूक्रेन को 6.2 करोड़ डॉलर की सैन्य मदद देने की घोषणा

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया ने यूक्रेन के लिए 9.5 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (6.2 करोड़ अमेरिकी डॉलर) के नए सैन्य सहायता पैकेज की घोषणा की, जिसमें रक्षा बल सामग्री एवं उपकरण शामिल हैं। ऑस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्लेस ने विदेश मंत्री पेनी वोंग और रक्षा उद्योग मंत्री पैट कॉनरॉय के साथ एक बयान में कहा कि नए पैकेज से यूक्रेन को ऑस्ट्रेलिया की कुल सहायता 1.7 अरब ऑस्ट्रेलियाई डॉलर से अधिक हो जाएगी।

नई सैन्य सहायता में नाटो की प्राथमिकता प्राप्त यूक्रेन आवश्यकता सूची में 5.0 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का योगदान शामिल होगा, जिसके माध्यम से यूक्रेन को महत्वपूर्ण उपकरण, साथ ही 4.3 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर की ऑस्ट्रेलियाई रक्षा बल (एडीएफ) सामग्री एवं उपकरण की आपूर्ति की जाएगी। एडीएफ उपकरणों में सामरिक वायु रक्षा रडार, युद्ध सामग्री और लड़ाकू इंजीनियरिंग उपकरण शामिल होंगे।

- नए सहायता पैकेज में रक्षा बल सामग्री और उपकरण शामिल

पुतिन पर शांति प्रयासों में दिखावे का आरोप

कीव। यूक्रेन और उसके यूरोपीय सहयोगियों ने पुतिन पर शांति वार्ता में रुचि दिखाने का दिखावा करने का आरोप लगाया। ब्रिटेन के विदेश मंत्री य्वेट कूपर ने कहा कि पुतिन को दिखावा और खूनखराबा बंद करके वार्ता करनी चाहिए और उचित व दीर्घकालिक शांति के प्रयासों का समर्थन करना चाहिए। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने पुतिन से दुनिया का समय बर्बाद न करने की अपील की।

आज का भविष्यफल
-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 5 दिसंबर, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- पौष, पक्ष-कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा 6 दिसंबर 00.55 तक तत्पश्चात द्वितीया।

आज का पंचांग

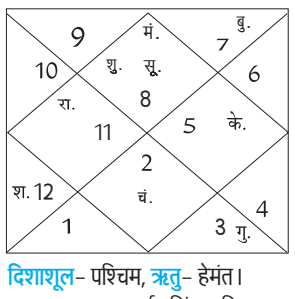

दिशाशूल- पश्चिम, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र-रोहिणी 11.46 तक तत्पश्चात मृगशिरा।

मेष - आज अपने खर्चों में कटौती करें वरना बजट गड़बड़ा सकता है। उधार लेने से आपको बचना चाहिए। जीवनसाथी के साथ आप एकांत में समय बिताना पसंद करेंगे। बाहर का भोजन करने से पाचन खराब हो सकता है।

वृष - आज आप पूरी मेहनत से काम करेंगे। कारोबार में उत्तम धन लाभ होने के योग बन रहे हैं। ऑनलाइन शॉपिंग में धन खर्च करेंगे पुराने निवेश से धन लाभ होगा। युवा जातक प्रेम सम्बन्धों को लेकर परिवार में चर्चा कर सकते हैं।

मिथुन - आज कार्यक्षेत्र में आपका मन नहीं लगेगा। तात्कालिक निर्णय लेने में जल्दबाजी करना उचित नहीं है। बिना मांगे किसी को राय देने से अपमान हो सकता है। अनैतिक कार्यों में आप रुचि ले सकते हैं। उधार धन के लेन-देन में सावधानी रखें।

कर्क - आज कारोबार को लेकर यात्रा हो सकती है। उच्च अधिकारी आपके काम से अत्यंत प्रसन्न रहेंगे। नौकरी में आपके अधिकार बढ़ेंगे। शेयर मार्केट से धन लाभ होगा। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। लोग आपसे परामर्श लेना पसंद करेंगे।

सिंह - आज आपके कार्य धीमी गति से पूर्ण होंगे। पड़ोसियों के साथ विवाद उभरने की आशंका है। रिश्तों में मधुरता का आनंद लेंगे। कारोबार में कठिनाई हो सकती है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए दिन शुभ नहीं है। अपनी दिनचर्या संतुलित रखें।

कन्या - आज महत्वपूर्ण कार्यों के लिए दिन शुभ है। धर्म-कर्म में रुचि कम होने की संभावना है। शोधकार्यों में बड़ी सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों का सहयोग प्राप्त होगा। मतभेदों का निवारण हो सकता है।

तुला - आज कारोबार में बड़ा निवेश करने से पहले पूरी जांच-परख कर लें। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। नए कार्यों की शुरुआत न करें। अत्यधिक कार्यभार के कारण थकान महसूस होगी। स्वास्थ्य थोड़ा कमजोर हो सकता है।

वृश्चिक - आज आपके सभी कार्य अच्छी तरह से पूर्ण होंगे। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। साझेदारी में नया कारोबार शुरू कर सकते हैं। जीवनसाथी के साथ रोमांटिक समय का आनंद उठाएंगे। प्रेम विवाह को लेकर समस्या हो सकती है।

धनु - आज का दिन कानूनी मामलों के लिए शुभ है। कोई कठिन कार्य पूरा हो सकता है। किसी से द्वेष व कपटपूर्ण बर्ताव न करें। आपको कोई शुभ सूचना मिल सकती है। कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। पुराना उधार चुकाने में सफलता मिलेगी।

मकर - आज अपनी कार्यक्षमता पर विश्वास करें। नव विवाहित लोग कहीं घूमने के लिए जा सकते हैं। अपने प्रेमी जन को प्रपोज करने के लिए दिन शुभ है। प्रतियोगी परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। मार्केटिंग से जुड़े कारोबार में धन लाभ मिलेगा।

कुंभ - आज आप अपने करियर को लेकर अत्यन्त गंभीर रहेंगे। नजदीकी लोगों की सलाह की उपेक्षा करना नुकसानदेह हो सकता है। दांपत्य संबंधों में कड़वाहट हो सकती है। व्यर्थ के खर्चे बढ़ सकते हैं। सरकारी कार्यों में रुकावटें आने की संभावना है।

मीन - आज कानूनी मामलों में आपको विजय मिलने के योग बन रहे हैं। आपकी संवादशैली से लोग प्रभावित रहेंगे। करियर में बड़ा बदलाव करने की योजना बना सकते हैं। दांपत्य संबंधों में भावनात्मक लगाव और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

सुडोकू-181

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

1			3					
				4				
		7						
3			2					
5								9
			5					
						1	7	
	4	8						

सुडोकू - 180 का हल

5	1	8	7	2	4	3	9	6
2	7	4	3	9	6	1	8	5
3	9	6	5	8	1	4	2	7
9	2	7	1	6	3	5	4	8
1	8	3	2	4	5	6	7	9
6	4	5	8	7	9	2	3	1
8	5	2	6	3	7	9	1	4
7	6	9	4	1	2	8	5	3
4	3	1	9	5	8	7	6	2

रन तभी मायने रखते हैं जब आप मैच जीतते हैं। ईमानदारी से कहूं तो कम से कम मेरे लिए तो यही मायने रखता है। अगर हम दूसरा वनडे हार जाते तो मैं पिछले मैच की तरह ही दुखी होता। जीत हासिल करके मुझे बहुत खुशी हुई है।
- एडेन मार्करम

स्टेडियम

बरेली, शुक्रवार ,5 दिसंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

नारायण 600 टी-20 विकेट चटकाने वाले पहले क्रिकेटर बने

अबु धाबी। गेंदबाजी में विविधता के लिए पहचाने जाने वाले रहस्यमयी स्पिनर सुनील नारायण ने अपना नाम इतिहास में दर्ज करा लिया जब वह प्रतिस्पर्धी टी20 क्रिकेट में 600 विकेट चटकाने वाले पहले गेंदबाज बने। वेस्टइंडीज के नारायण ने बुधवार को यहां शारजाह वारियर्स के खिलाफ अबु धाबी नाइट राइडर्स की ओर से खेलते हुए यह उपलब्धि हासिल की। त्रिनिदाद के इस 37 वर्षीय क्रिकेटर ने टॉम एबेल को आउट करके यह उपलब्धि हासिल की। उनकी यह उपलब्धि टी20 प्रारूप में महानतम गेंदबाजों में से एक के रूप में नारायण के दर्जे को और मजबूत करती है। मैच के बाद अबु धाबी नाइट राइडर्स ने नारायण के विशेष जर्सी दी जिसमें 600 अंक लिखा था जो उनकी अभूतपूर्व उपलब्धि को दर्शाता है।

चेन्नई सुपर वॉरियर्स प्लेऑफ में पहुंचा

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर वॉरियर्स बृहस्पतिवार को यहां इंडियन पिकलबॉल लीग (आईपीबीएल) में बेंगलुरु ब्लास्टर्स को 4-2 से हराकर प्लेऑफ में जगह पक्की करने वाली पहली टीम बन गई। चेन्नई की टीम चार जीत से 12 अंक के साथ तालिका में सबसे ऊपर है। उसके बाद हैदराबाद की टीम दूसरे स्थान पर है। लखनऊ की टीम तीसरे और गुड़गांव की टीम चौथे स्थान पर है। मुंबई की टीम अब तक एक भी जीत दर्ज नहीं कर पाई है जिससे वह सबसे नीचे है। वहीं बेंगलुरू पांचवें स्थान पर है।

बैडमिंटन : भारत का दमदार प्रदर्शन

गुवाहाटी। तन्वी शर्मा और अश्मिता चालिहा की अगुआई में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों ने बृहस्पतिवार को यहां गुवाहाटी मास्टर्स सुपर 100 टूर्नामेंट में दबदबा बनाते हुए क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। दुनिया की 41वीं नंबर की खिलाड़ी और आठवीं वरीय तन्वी ने महिला एकल प्री क्वार्टर फाइनल में थाईलैंड की पासा ओर्न फानाचेट को सीधे गेम में 21-17 23-21 से हराया। दुनिया की 96वें नंबर की खिलाड़ी अश्मिता ने पांचवीं वरीय हमवतन अनमोल खरब के खिलाफ पहला गेम गंवाने के बाद वापसी करते हुए 16-21 21-17 21-16 से जीत दर्ज की। भारत की इशारानी बरुआ ने हमवतन श्रेया लेले को 21-13 10-21 21-12 से हराया। तुषार सुवीर ने पुरुष एकल प्री क्वार्टर फाइनल में इंडोनेशिया के बिस्मो राया ओक्तोरा को 21-17 18-21 21-15 से शिकस्त दी।

गायत्री-त्रीसा की शीर्ष 10 में वापसी की उम्मीद

नई दिल्ली। सैयद मोदी अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में खिताब की रक्षा करके गायत्री गोपीचंद और त्रीसा जॉली ने सिर्फ एक और ट्रॉफी नहीं जीती बल्कि उन्हें वह लय भी वापस मिल गई है जिसकी तलाश वे इस सत्र में कर रहीं थी। दो बार ऑल इंग्लैंड के सेमीफाइनल में जगह बनाने वाली गायत्री और त्रीसा की जोड़ी ने 2025 की सकारात्मक शुरुआत की। इस साल की शुरुआत में भारतीय जोड़ी 13 हफ्तों तक दुनिया की नौवें नंबर की जोड़ी थी और वे 2026 को दोबारा शीर्ष 10 में वापसी करना चाहती है।

अर्धशतकीय पारी के दौरान शॉट लगाते उत्तर प्रदेश के बल्लेबाज माधव कौशिक। एजेंसी

उत्तर प्रदेश ने चंडीगढ़ को 40 रनों से हराया

कोलकाता, एजेंसी

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी

समीर रिज्वी के अर्धशतक के बाद भुवनेश्वर कुमार की धारदार गेंदबाजी से उत्तर प्रदेश ने बृहस्पतिवार को यहां सैयद मुश्ताक अली टी20 टूर्नामेंट के ग्रुप बी मैच में चंडीगढ़ को 40 रन से हरा दिया।

उत्तर प्रदेश के 213 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए चंडीगढ़ की टीम भारतीय टीम से बाहर चल रहे भुवनेश्वर (23 रन पर तीन विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने आठ विकेट पर 172 रन ही बना सकी। उत्तर प्रदेश ने इससे पहले रिज्वी की 42 गेंद में छह चौकों और तीन छक्कों से 70 रन की पारी और सलामी बल्लेबाज माधव कौशिक (67 रन) के साथ तीसरे विकेट के लिए 86 रन की साझेदारी की बदौलत सात विकेट पर 212 रन बनाए। सिद्धार्थ यादव ने भी रन आउट होने से पहले 12 गेंद में तीन चौकों और दो छक्कों से 28 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए चंडीगढ़ ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए। सलामी बल्लेबाज मनन वोहरा (61 रन) ने एक छोर संभाले रखा पर दूसरे छोर से पर्याप्त समर्थन नहीं मिला।

हार्दिक पंड्या के प्रशंसकों की दीवानगी के कारण मैच स्थल बदला गया

हैदराबाद : भारत के स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या को देखने के लिए जबरदस्त भीड़ को देखते हुए आयोजकों को बृहस्पतिवार को यहां जिमखाना मैदान जैसे साधारण स्थल से सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के मैच को अधिक सुरक्षित राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में स्थानांतरित करना पड़ा। यह मुकाबला उनकी टीम बड़ौदा और गुजरात के बीच खेला गया। इसमें बड़ौदा ने आठ विकेट से जीत दर्ज की। हार्दिक की मौजूदगी के कारण अप्रत्याशित भीड़ और सुरक्षा चिंताओं की वजह से यह फैसला लिया गया।

केरल की चैंपियन मुंबई पर सनसनीखेज जीत

लखनऊ : कप्तान संजू सैमसन (46), विष्णु विनोद (नाबाद 43) और शराफुद्दीन (नाबाद 35/ एक विकेट) के बाद केएम आसिफ (पांच विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर केरल ने ग्रुप ए मुकाबले में गुरुवार को चैंपियन मुंबई को 15 रनों से शिकस्त दी।

नई भूमिका से सामंजस्य बैठाने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई : गायकवाड़

बोले - ओपनिंग करूं या चौथे नंबर पर बल्लेबाजी, कुछ देर बाद समान हो जाती है प्रक्रिया

रायपुर, एजेंसी

रुतुराज गायकवाड़।

सीमित ओवरों के क्रिकेट में विशेषज्ञ सलामी बल्लेबाज रुतुराज गायकवाड़ चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए अपने पहले मैच में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए, लेकिन दूसरे मैच में उन्होंने शतक लगाया और उसके बाद कहा कि उन्हें अपनी नई भूमिका से सामंजस्य बिठाने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई। भारत के लिए वनडे में श्रेयस अय्यर ने चौथे नंबर पर अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन मुंबई के इस बल्लेबाज के चोटिल होने के कारण टीम प्रबंधन ने गायकवाड़ को यह जिम्मेदारी सौंपी और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे वनडे में शतक जड़कर यह भूमिका अच्छी तरह से निभाई। भारत इस मैच में हालांकि चार विकेट से हार गया था।

गायकवाड़ ने कहा मेरे लिए यह सम्मान की बात है की टीम प्रबंधन ने एक ऐसे सलामी बल्लेबाज पर भरोसा दिखाया जो चौथे नंबर पर भी बल्लेबाजी कर सकता है। मैंने अपनी इस भूमिका को इसी तरह से लिया। उन्होंने कहा यह केवल शुरुआती 10 से 15 गेंद खेलने का मामला होता है और उसके बाद प्रक्रिया समान रहती है। दाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने 83 गेंदों पर 105 रन की पारी खेली और विराट कोहली (102) के साथ तीसरे विकेट के लिए 195 रन की साझेदारी की, जिससे भारत ने पांच विकेट पर 358 रन बनाए।

गायकवाड़ ने कहा एकदिवसीय प्रारूप में जब मैं पारी की शुरुआत करता था तब भी मैं हमेशा यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता था कि मैं 45वें ओवर तक बल्लेबाजी कर सकूं। उन्होंने कहा मैं जानता हूं कि 11 से 40 ओवरों के बीच कैसे खेलना है, स्ट्राइक रोटेट कैसे करनी है और बाउंड्री के विकल्प क्या हैं। मुझे अपनी पारी आगे बढ़ाने के लिए खुद पर पूरा भरोसा था। गायकवाड़ चोटिल होने के कारण इस साल आईपीएल के सभी मैच में नहीं खेल पाए थे और उन्हें काफी समय तक बाहर रहना पड़ा था। उन्होंने कहा कि वह अतीत पर ध्यान नहीं देते और वर्तमान में रहने की कोशिश करते हैं।

उन्होंने कहा यही बेहतर होता है कि आप इस तरह की चीजों के बारे में अधिक नहीं सोचें क्योंकि अगर आप वर्तमान में नहीं हैं तो आपका ध्यान और तैयारी पर असर पड़ता है। मेरे दिमाग में कुछ चीजें चल रही थीं, लेकिन उसके बाद मैंने तय किया कि चाहे किसी भी प्रारूप का मैच हो मैं अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करूंगा। गायकवाड़ ने कहा अगर मुझे मौका मिलता है, तो यह अच्छी बात है, अगर मुझे मौका नहीं मिलता है, तब भी ठीक है। मुझे यह बात अच्छी तरह से पता है कि जितना हो सके रन बनाते रहना मेरा कर्तव्य है और अगर चीजें फिर से मेरे अनुकूल होती हैं तो यह अच्छी बात है और अगर नहीं होती हैं, तब भी अच्छी बात है। गायकवाड़ ने स्वीकार किया कि 12 चौकों और दो छक्कों की मदद से खेली गई 105 रन की पारी उनके करियर की अब तक की सर्वश्रेष्ठ पारी है। उन्होंने कहा मैं हां कहूंगा क्योंकि नंबर चार पर बल्लेबाजी करना भी मेरे लिए एक चुनौती थी। सुपरस्टार विराट कोहली के साथ खेलने का मौका मिलना कुछ ऐसा था जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी, लेकिन गायकवाड़ ने अपना ध्यान रन बनाने पर केंद्रित रखा।

जिन्होंने करियर में कुछ हासिल नहीं किया वे रोहित-कोहली का भविष्य तय कर रहे

शारजाह। पूर्व भारतीय स्पिनर हरभजन सिंह को यह दुर्भाग्यपूर्ण लगता है कि रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे दिग्गजों का भविष्य ऐसे लोग तय कर रहे हैं जिन्होंने अपने करियर में कुछ खास हासिल नहीं किया है, लेकिन उन्होंने उम्मीद जताई कि यह जोड़ी 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप तक खेलती रहेगी। रोहित 38 वर्ष के हैं और विराट कोहली 37 वर्ष के तथा यह दोनों अब केवल वनडे प्रारूप में ही खेलते हैं। वह वनडे विश्व कप तक खेलते रहेंगे या नहीं इसको लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं। भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर और चयन समिति के अध्यक्ष अजीत अगरकर ने इस बात पर कोई प्रतिबद्धता नहीं जताई है कि यह दोनों वनडे विश्व कप तक खेलते रहेंगे या नहीं। हरभजन ने यहां कहा यह मेरी समझ से परे है। मैं इसका जवाब नहीं दे पाऊंगा क्योंकि मैं खुद एक खिलाड़ी रहा हूं और जो मैं देख रहा हूं वह मेरे साथ भी हुआ है। मेरे कई साथियों के साथ ऐसा हुआ है, लेकिन यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। हम इस बारे में बात नहीं करते या इस पर कोई चर्चा नहीं करते। भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में 417 विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने कोहली और रोहित के साथ किए जा रहे व्यवहार के संदर्भ में कहा जब मैं विराट कोहली जैसे खिलाड़ी को देखता हूं जो अभी भी शानदार प्रदर्शन कर रहा है तो मुझे बहुत खुशी होती है।

पहली गेंद से ही लग रहा था कि कोहली लगातार दूसरा शतक लगाने में सफल रहेंगे : गावस्कर

रायपुर। पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर का मानना है कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच में शुरू से ही लग रहा था कि विराट कोहली शतक लगाने में सफल रहेंगे, क्योंकि इस दिग्गज बल्लेबाज ने छक्का लगाकर अपना खाता खोला और पिछले मैच के अपने आत्मविश्वास को बनाए रखा। कोहली ने बुधवार को यहां 93 गेंदों पर 102 रन बनाए, जो 50 ओवर के प्रारूप में उनका 53वां शतक और सभी प्रारूप में मिलाकर 84वां शतक है। हालांकि भारत यह मैच चार विकेट से हार गया। उन्होंने 30 नवंबर को रांची में खेले गए पहले मैच में 120 गेंदों पर 135 रन बनाए थे जिससे भारत ने यह मैच 17 रन से जीता था। जियोस्टार विशेषज्ञ गावस्कर ने कहा ईमानदारी से कहूं तो किसी भी समय ऐसा नहीं लगा कि वह शतक नहीं बना पाएंगे। पहली गेंद से ही ऐसा लगा कि वह रांची की अपनी पारी को ही आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कोहली ने हुक करके छक्का जड़कर शुरुआत की।

आनंद को हराकर एरिगैसी ने खिताब जीता

जेरूशलम, एजेंसी

जेरूशलम मास्टर्स

ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगैसी ने यहां फाइनल में हमवतन और पांच बार के विश्व चैंपियन विश्वनाथन आनंद को हराकर जेरूशलम मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट का खिताब जीता। इन दोनों खिलाड़ियों ने शुरुआती रैपिड गेम ड्रॉ किए। इसके बाद एरिगैसी ने पहले ब्लिट्ज टाईब्रेक मैच में सफेद मोहरों से जीत हासिल कर निर्णायक बढ़त हासिल कर ली। 'चेसबेस डॉट कॉम' की रिपोर्ट के अनुसार 22 वर्षीय एरिगैसी दूसरे ब्लिट्ज मुकाबले में भी जीत हासिल करने के करीब पहुंच गए थे लेकिन आखिर में उन्हें ड्रॉ से संतोष करना पड़ा, लेकिन यह उनके लिए 2.5-1.5 से मुकाबला और खिताब जीतने के लिए पर्याप्त था।

एरिगैसी ने बाद में कहा यह जीत आसान नहीं थी। मेरे सामने कई चुनौतियां थी और मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी नहीं कर पाया। इसके बावजूद खिताब हासिल करके मैं बहुत खुश हूं। उन्होंने आगे कहा आज के दोनों मुकाबले (पीटर स्विडलर और फिर आनंद के खिलाफ) काफ़ी तनावपूर्ण रहे। आनंद सर के ख़िलाफ़ पहले गेम में हम दोनों ने मौके गंवाए। लेकिन मुझे लगता है कि ब्लिट्ज में मैंने अच्छा प्रदर्शन किया। इस जीत के साथ एरिगैसी को 55,000 अमेरिकी डॉलर, जबकि आनंद को 35,000 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि मिली। एरिगैसी ने सेमीफाइनल में रूस के ग्रैंडमास्टर पीटर स्विडलर को जबकि आनंद ने विश्व ब्लिट्ज चैंपियन इयान नेपोमनियाची को हराया था।

रूट का ऑस्ट्रेलिया में पहला शतक

ब्रिस्बेन, एजेंसी

एशेज सीरीज में शतक लगाने के बाद जश्न मनाते इंग्लैंड के जो रूट। एजेंसी

- एशेज सीरीज के दूसरे टेस्ट का पहला दिन
- स्टार्क के छह विकेट के बावजूद इंग्लैंड संभला

325 रन नौ विकेट पर बना लिए इंग्लैंड ने पहले दिन स्टंप तक

जो रूट (नाबाद 135 रन) ने बृहस्पतिवार को यहां एशेज सीरीज के दूसरे टेस्ट के पहले दिन ऑस्ट्रेलिया में अपना पहला शतक जड़ा जिससे इंग्लैंड ने स्टंप तक पहली पारी में नौ विकेट पर 325 रन बना लिए। हालांकि ऑस्ट्रेलिया के लिए मिचेल स्टार्क ने 71 रन देकर छह विकेट झटके लेकिन इंग्लैंड शुरूआती झटकों से उबरकर अच्छी स्थिति में पहुंच गया।

ऑस्ट्रेलिया में रूट ने अभी तक शतक नहीं लगाया था और इससे पहले ऑस्ट्रेलिया में पिछले 15 एशेज टेस्ट में उनका सबसे बड़ा टेस्ट स्कोर 89 था। लेकिन उन्होंने लंबा इंतजार खत्म करते हुए 181 गेंद में 11 चौके से 100 रन पूरे किए। वह अभी तक 202 गेंद का सामना करके 15 चौके और एक छक्का जड़ चुके हैं।

स्टार्क ने बेन डकेट और ओली पोप को खाता भी नहीं खोलने दिया जिससे तीसरे ओवर में इंग्लैंड का स्कोर दो विकेट पर पांच रन हो गया था। तभी रूट क्रीज पर आए। उन्होंने पर्थ में सीरीज के पहले मैच में मिली आठ विकेट की हार के बाद इंग्लैंड की पारी को संभालते हुए आत्मविश्वास दिलाने की कोशिश की। वह 11वें नंबर के खिलाड़ी जोफ्रा आर्चर के साथ क्रीज पर मौजूद हैं। आर्चर ने अपने करियर का सबसे अच्छा नाबाद 32 रन का स्कोर बनाया। इससे रूट और आर्चर ने अंतिम विकेट के लिए 61 रन की अटूट साझेदारी निभा ली है। स्टार्क ने बीच के सत्र में हैरी ब्रूक (31 रन) को आउट कर अपने करियर का 415वां विकेट हासिल किया।

ईपीएल : आर्सेनल को पांच अंकों की बढ़त

लंदन, एजेंसी

आर्सेनल ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल टूर्नामेंट में पांच अंक की बढ़त हासिल कर ली है जबकि लिवरपूल का निराशाजनक प्रदर्शन जारी रहा।

आर्सेनल ने जहां ब्रेंटफोर्ड पर 2-0 की जीत के साथ प्रीमियर लीग खिताब की ओर मजबूत कदम बढ़ाए, वहीं लिवरपूल ने एनफील्ड में अंतिम क्षणों में आत्मघाती गोल की मदद से संदरलैंड के साथ 1-1 से ड्रॉ खेला।

मौजूदा चैंपियन लिवरपूल की टीम अब आठवें स्थान पर है। उसके कोच आर्ने स्लॉट आलोचकों के निशाने पर हैं और स्टार फारवर्ड मोहम्मद सलाह को लगातार दूसरे मैच में शुरुआती लाइनअप से बाहर रखने के उनके फैसले की कड़ी आलोचना होने की संभावना है। इस बीच चेल्सी को लीड्स के हाथों 3-1 से हार का सामना करना पड़ा, जिससे खिताब जीतने की उसकी उम्मीदों को झटका लगा। इस हार से चेल्सी चौथे स्थान पर खिसक गई और आर्सेनल से नौ अंक पीछे हो गई, जिसने सभी प्रतियोगिताओं में अपना अजेय अभियान 18 मैचों तक बढ़ा लिया है और 2004 के बाद से पहली बार लीग खिताब जीतने की ओर अग्रसर है।

आखिरी स्थान पर चल रहे वॉल्वरहैम्प्टन को नॉटिंघम फ़ॉरेस्ट के हाथों अपने घरेलू मैदान पर 1-0 से हार का सामना करना पड़ा, जबकि एस्टन विला ने ब्राइटन पर 4-3 से जीत हासिल की।

ओलंपिक मशाल इटली को सौंपी

एथेंस (यूनान)। यूनान ने गुरुवार को ऐतिहासिक पैनाथेनाइक स्टेडियम में मिलान-कॉर्टिना ओलंपिक शीतकालीन खेल 2026 के समारोह के लिए ओलंपिक मशाल इटली को सौंपी। जहां से इसे एक महीने से अधिक समय तक देशभर में घुमाया जाएगा।

मशाल को विश्व कुश्ती चैंपियन जॉर्जियोस कौगियोउमटसिडिस स्टेडियम में ले गए। उन्होंने इसे इटली की ओलंपिक चैंपियन जैस्मीन पाओलिनी और साइकिलिस्ट फिलिपो गान्ना को सौंपा। यह मशाल ओलंपिक गेम्स की जन्मभूमि यूनान और आने वाले शीतकालीन ओलंपिक के मेजबान देश इटली के बीच लंबे समय से चले आ रहे रिश्तों की निशानी है। वर्ल्ड वॉटर पोलो चैंपियन एलेनी जेनाकी ने फिर मशॉल ली और यूनान की राष्ट्रीय टीम के साथ मिलकर, कल्लिमारमारो स्टेडियम में अग्निकुंड को प्रज्ज्वलित किया।

जूनियर हॉकी विश्व कप | क्वार्टर फाइनल में आज होगी भिड़ंत, पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में बदलने पर देना होगा ध्यान

बेल्जियम के खिलाफ भारत की होगी असली परीक्षा

चेन्नई, एजेंसी

भारत ने अपेक्षाकृत आसान पूल में लगभग प्रत्येक विभाग में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन एफआईएच पुरुष जूनियर हॉकी विश्व कप में उसकी असली परीक्षा बेल्जियम के खिलाफ शुक्रवार को यहां होने वाले क्वार्टर फाइनल मैच में होगी।

चिली, ओमान और स्विट्जरलैंड के साथ पूल बी में शामिल भारत ने शानदार प्रदर्शन करके पहले स्थान पर रहते हुए नाकआउट दौर में प्रवेश किया। भारतीय टीम ने पूल चरण में 29 गोल किए और एक भी गोल नहीं खाया, जो टूर्नामेंट में भाग ले रही सभी 24 टीमों में सर्वश्रेष्ठ स्ट्राइक रेट है। लेकिन पीआर श्रीजेश की कोचिंग वाली टीम यह बात अच्छी तरह जानती है कि इन परिणामों का आगे कोई महत्व नहीं होगा, क्योंकि टूर्नामेंट के अंतिम चरण में उनका सामना मजबूत टीमों से होगा।

जूनियर हॉकी विश्व कप के एक मैच दौरान भारतीय खिलाड़ी। फाइल फोटो

यहां से कोई भी चूक भारत के नौ साल बाद घरेलू मैदान पर खिताब जीतने के सपने को चकनाचूर कर सकती है। भारत ने आखिरी बार 2016 में लखनऊ में खिताब जीता था। भारत पूल चरण में शानदार प्रदर्शन करके इस उपलब्धि को दोहराने की स्थिति में दिख रहा है। उसने अभी तक 18 मैदानी गोल किए हैं। इसके अलावा उसने नौ गोल पेनल्टी कॉर्नर से और दो पेनल्टी स्ट्रोक से किए हैं। लेकिन यहां से भारतीय टीम की राह आसान नहीं होगी और किसी भी तरह का अति आत्मविश्वास उसे खिताब की दौड़ से बाहर कर सकता है। चिली और ओमान के खिलाफ पहले दो मैचों में भारत ने दबदबा बनाए रखा और मनचाहे गोल दागे। उसने स्विट्जरलैंड को 5-0 से हराया, लेकिन स्विस टीम ने भारत की रक्षापंक्ति के सामने कड़ी चुनौती पेश की। इस मैच में गोलकीपर प्रिंस दीप सिंह और बिक्रमजीत सिंह ने कुछ शानदार बचाव किए।

2016 में भारत ने आखिरी बार जीता था खिताब

पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल करना अभी भी चिंता का विषय बना हुआ है। पिछले मैच में शिलानंद लाकड़ा ने दो बार पेनल्टी कार्नर को गोल में बदला लेकिन भारत कप्तान रोहित और अनमोल एक्का से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद करेगा।

भारतीय स्ट्राइकरों ने पूल चरण में शानदार प्रदर्शन किया। दिलराज सिंह (06 गोल), मनमीत (05), अर्शदीप सिंह (04), अजीत यादव और गुरजोत सिंह (दोनों दो-दो गोल) सभी ने अपना प्रभाव छोड़ा है। रोसन कुजूर, एड्रोई एक्का, अंकित पाल और इंगलेम्बा लुवांग थोउनाओजम ने मध्यपंक्ति में अच्छा प्रदर्शन किया है लेकिन उनकी असली परीक्षा अब होगी।

इंग्लैंड ने चिली दक्षिण अफ्रीका ने मलेशिया को हराया

चेन्नई। इंग्लैंड ने जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप के नौवें से 16वें स्थान के क्लासीफिकेशन मुकाबले में गुरुवार को चिली को 3-1 से हराया। मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम पर खेले गए मैच में इंग्लैंड के लिये काडेन ड्रेसे ने तेरहवें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर पहला गोल दागा। वहीं कप्तान मैक्स एंडरसन ने दूसरे क्वार्टर के चौथे मिनट में फील्ड गोल करके बढत दुगुनी कर दी। दक्षिण अफ्रीका ने जेडन बूकर के दो गोलों की मदद से मलेशिया को नौवे से 16वें स्थान के क्लासीफिकेशन मैच में 3-1 से हराया। मैच में चारों गोल पेनल्टी कॉर्नर पर हुए। बूकर ने 18वें और 39वें मिनट में गोल दागे जबकि तीसरा गोल रोस मोंटगोमेरी ने 58वें मिनट में किया।